# भास्वती समुन्मेषः

**भाग–2**

( द्वादश–कक्षायां संस्कृत–केन्द्रिक
पाठ्यग्रन्थतया निर्धारितायाः भास्वत्याः भावार्थ सन्दर्शिका )

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

ISBN :
प्रतियाँ : 650
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

वर्ष 2019-20

## प्रेरक

डॉ. सुनीता एस. कोशिक, निदेशिका रा.शै.अ. एवं प्र.प., दिल्ली
डॉ. नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ. एवं प्र.प., दिल्ली

## समन्वयक एवं संपादक

डॉ. के एन शास्त्री
सह समन्वयक
प्रगति श्रीवास्तव

## लेखक मंडल

डॉ. के एन. शास्त्री
डॉ. भास्करानन्द विडालिया
डॉ. परमानन्द झा
डॉ. आशा झा
डॉ. चंचल कुमारी झा
डॉ. अजय कुमार
डॉ. कविता रानी

## पुनरीक्षक

डॉ. शास्करानन्द पाण्डेय
डॉ. के एन. शास्त्री

## प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव

## प्रकाशन समूह

नवीन राधा

**मुद्रक :** एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद द्वारा मुद्रित।

# द्वित्राः शब्दाः

राज्यशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदा प्रतिवर्षं शिक्षकाणां कृते सेवाकालिकं-प्रशिक्षणं समायोज्यते। एतस्मिन् प्रशिक्षण कार्यक्रमे परिषदः प्रयासः नूतन-शिक्षण-प्रविधीनां विकासः परिचयश्च प्रामुख्येण भवति। अथ च विषयवस्तुनः विवेचनं कठिनतरानां पाठ्यांशानां स्पष्टीकरणम् अपि प्रशिक्षकैः तत्र विधीयते। एतदर्थं: सन्दर्भ-पुस्तिकारूपेण रचिते ग्रन्थेऽस्मिन् एतासामेव सामग्रीणां संकलनं विधाय प्रस्तोतुं प्रयत्नः ब्रियते परिषदा पुस्तकेऽस्मिन् पठनार्थमवचिताः पाठाः शिक्षकाणां कृते नूतनाः सन्ति, अतस्ते पठने-पाठने च काठिन्यं नानुभवेयुः इति विचार्यैव 'भास्वतीसमुन्मेषः' इति सन्दर्भग्रन्थोऽयं सज्जीकृतः।

अस्मिन् सङ्ग्रहे एकादश-द्वादशकक्षायोः चतुर्विंशतिः एव पाठाः विवेचनार्थं संगृह्य प्रतिपाठं क्लिष्टांशानां विवृतिः विहितास्ति। प्रतिपाठं पद्यानामम्वयः, पदार्थाः सरलानुवादः विमर्शश्चेति शीर्षकैः विवरणं विहितम्। एवमेव गद्येषु च मूलपाठः, पदार्थाः, सरलानुवादः विमर्शश्चेति शीर्षकमाध्यमेन विविक्तमस्ति पाठ्यवस्तु, अत्र व्याकरणिक टिप्पर्णीनां समावेशः पदार्थशीर्षकान्तर्गत एव कृतः। एतददतिरिच्य अभ्यासप्रश्नाः अपि निहिताः सन्ति। अध्यापकानां सौकर्याय आदर्श-प्रश्नपत्राणां विन्यासोऽपि सङ्ग्रहेऽस्मिन् विहितः। एतेन सङ्ग्रहेण शिक्षकाणां छात्राणां च भूयान् लाभो भविष्यतीत्याशास्महे तथाप्यत्र त्रुटीनां निवारणाय संशोधनाय च विदुषां विदुषीणां च परामर्शः स्वागतार्हाः।

अन्ते सङ्ग्रहस्यास्य संकलने, लेखने, मुद्रणे च सहयोगिनां विषयविशेषज्ञानां, सङ्कायाधिकारिणां शिक्षकेतर-कर्मचारिणां च हार्दिकी कृतज्ञतां विज्ञाप्यते।

**डॉ. सुनीता-एस. कौशिक**

# भूमिका

प्रशिक्षण निरन्तर सुधार की प्रक्रिया है। जैसे-जैसे नई चुनौतियाँ जन्म लेती है वैसे ही हम उनके समाधान हेतु अग्रसर होते रहते हैं। शिक्षा के निरंतर विकास की दिशा में हम काफी आगे बढ़े हैं। संख्यात्मक विस्तार के साथ-साथ स्कूली सुविधाओं में भी खासी बुद्धि हुई है किन्तु गुणात्मक शिक्षा की दिशा में हम काफी पीछे हैं। बदलाव का माध्यम है शिक्षक एवं पाठ्यचर्या। हमें दोनों मोर्चों पर हमेशा डटे रहना पड़ेगा। रा.शि.नी. 1986 में समूचे भारत में समान शिक्षा संरचना तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की बात की गई है। ऐसी पाठ्यचर्या जो निरंतर प्रवाहमान, परिवर्तनशील तथा लक्ष्योन्मेषी हो और हमारी राष्ट्रीय एकता विविधता तथा आदर्श संतुष्ट कर सके। इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्य-पुस्तकों में बदलाव का क्रम निरंतर जारी है। पिछले वर्ष अर्थात् 2018-19 में उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में वैकल्पिक संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक में बदलाव किया गया है। 'ऋतिका' के स्थान पर 'भास्वती' नामक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की गई है। बदलाव से शिक्षकों को अवगत कराने तथा बदलाव की चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक सामना करने के लिए ही सन्दर्शिका का निर्माण किया जा रहा है। यदि हम समझ के साथ तैयारीपूर्वक कक्षाओं में जायेंगे तो निश्चित रूप से अपने उद्देश्य में सफल होंगे और बच्चों में अपेक्षित परिवर्तन होगा ही। बदलाव केवल पाठ्यसामग्री का ही नहीं है बल्कि मूल्यांकन में भी बदलाव किया गया है। अब 100 अंक के प्रश्न-पत्र में 80 अंक लिखित परीक्षा तथा 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित किये गये हैं। चूंकि आंतरिक मूल्यांकन पहली बार लागू किया जा रहा है इसलिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस विषय पर भी विस्तार से चर्चा की जायेगी।

पाठ्य-पुस्तक 'भास्वती' एन सी ई आर टी द्वारा तैयार की गई है। पुस्तक की भूमिका में कहा गया है कि यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप-रेखा, 2005 के लक्ष्यों को ध्यान में रखकर निर्मित की गई है जो निम्नवत हैं-

1. भारमुक्त शिक्षा
2. आनन्दप्रद अनुभूति
3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध तथा
4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार

**नई पाठ्यपुस्तक निम्न विशेषताओं से परिपूर्ण है, ऐसा कहा गया है-**

(क) प्राचीन ग्रंथांशों के साथ ही साथ आधुनिक संस्कृत रचनाओं का भी समावेश

(ख) अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की विविध अनुदित (संस्कृत) रचनाओं का भी पाठ्यक्रम में समावेश

(ग) पाठ्यचर्या के विविध लक्ष्यों की पूति हेतु नये अभ्यास प्रश्नों, टिप्पणियों एवं योगयता विस्तार उपायों का समावेश

(घ) शिक्षण संकेतों का निर्देश

हम वर्ष 2019-20 की संदर्शिका उपर्युक्त बदलावों को स्पष्ट करने के लिए तैयार कर रहे हैं। पाठ्य-पुस्तक में समाहित विषय वस्तु को और अधिक स्पष्ट करने के लिए पाठ के उद्देश्य, अन्वय, हिन्दी में सरलानुवाद, पदार्थ तथा विमर्श को स्थान दिया गया है। उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण संकेत भी दिये गये हैं साथ ही अनुभव

विस्तार को भी संकेतित किया गया है। इसके अतिरिक्त संदर्शिका में आदर्श-प्रश्न-पत्र भी दिया गया है। आंतरिक मूल्यांकन तथा शिक्षण रणनीतियों पर संदर्भ-व्यक्तियों द्वारा अंत:शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विस्तार से चर्चा की जानी है इसलिए संदर्शिका में इसे स्थान नहीं दिया गया है। संदर्शिका को लेखक दल द्वारा 'भास्वती समुन्मेष:' नाम दिया गया है जो दो भागों में प्रस्तुत है।

प्रत्येक रचना के कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं, ऐसा हम सोचते हैं। इसलिए हमें इस रचना के उद्देश्यों पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए प्रस्तुत संदर्शिका में निहित उद्देश्यों को निम्न रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,-

- संस्कृत-शिक्षण के लिए द्वादशी कक्षा में आई नई पाठ्यपुस्तक के स्वरूप से शिक्षकों को परिचित कराना।
- नई पुस्तक होने के कारण उनके पाठन में संभावित कठिनाइयों को यथासंभव अन्वय, पदार्थ, शब्दार्थ एवं विमर्श के द्वारा स्पष्ट करना।
- संस्कृत शिक्षण में पाठ्य-संबद्ध सम्भावित नवाचारों का अन्वेषण और अनुप्रयोग करना।
- सुगम और सतत अधिगम के उपायों का पाठ्य-सामग्री में समावेश करना।
- अधिगम प्रत्याशा (Learning Axpectation) और (Learning) को अधिकाधिक प्राप्त करने हेतु उपयुक्त शिक्षण-प्रक्रिया का उपयोग करना।
- स्पष्ट अधिगम प्रत्याशा को ध्यान में रख विद्यार्थियों का शिक्षण-अधिगम रेखांकित हो सके, इसका प्रयास करना।
- पाठ्यपुस्तक में निहित नवीन संकल्पनाओं से संस्कृत शिक्षकों को परिचित करना।
- पाठ्य-सामग्री के व्याकरणिक पक्ष को शिक्षकों के लिए सरलतम रूप में उपस्थित करना।
- पाठ्यपुस्तक में निहित पाठ्यसामग्री के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों का संयोजन करना।
- पद्यपाठों के अधिकाधिक शिक्षण-अधिगम सुनिश्चित करने के लिए शुद्ध और सस्वर वाचन हेतु छंदों का संकेत अन्वय शब्दार्थ और भावार्थ को शिक्षको के माध्यम से विद्यार्थियों तक संप्रेषण सुनिश्चित करना।
- प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुभव विस्तार के रूप में पाठ में समाहित जीवनोपयोगी मूल्यों और तार्किक विश्लेषण को उपस्थापित कर पाठ की प्रासंगिकता को दर्शाना और छात्रों के आलोचनात्मक चिंतन को अवसर प्रदान करना।

संदर्शिका तैयार करने में विषय विशेषज्ञों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं अत्यधिक न्यून समय में पाठ लिखे गये हैं किन्तु गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं हुआ है। अपने विद्यालयी कार्यों को करते हुए उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए समय निकाला है और टीमवर्क किया है। शब्दों में आभार व्यक्त करना बेईमानी होगी इसलिए मैं हृदय से आप सब का धन्यवाद करना चाहता हूँ और आप सबको संस्कृत परिवार का सदस्य मानता हूँ। शि.नि.दिल्ली से सेवानिवृत प्रधानाचार्य एवं भाषामर्मज्ञ डॉ॰ भास्करानन्द पाण्डेय ने रचना को आद्योपान्त पढ़ा है और आवश्यक संशोधन करके छपने योग्य बनाया है। आप हमारे अग्रज है, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। डायट दिलशाद गार्डन प्रधानाचार्य डॉ॰ अनिल कुमार, परिषद निदेशिका, डॉ॰ सुनीता एस. कौशिक तथा संयुक्त निदेशक डॉ॰ नाहर सिंह ने हमें बार-बार इस कार्य के लिए प्रेरित किया है और हर संभव सहयोग दिया है। मैं आप महानुभावों का बहुत आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त मुद्रक एजुकेशनल स्टोर एवं परिषद प्रकाशन विभाग को भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

**डॉ॰ के. एन. शास्त्री**

# विषय सूची


| क्र. सं. | पाठ का नाम | टीकाकारः | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 1 | शब्दाः | डॉ॰ सुनीता एस. कौशिक | 3 |
| 2 | भूमिकाः | डॉ॰ के. एन. शास्त्री | 4 |
| 3 | अनुशासन | कविता रानी | 7 |
| 4 | न त्वं सोचितुमर्हसि | डॉ॰ परमानन्द झा | 11 |
| 5 | मातुराज्ञा गरीयसी | कविता रानी | 19 |
| 6 | प्रजानुरञ्जको नृपः | डॉ॰ परमानन्द झा | 31 |
| 7 | दौवारिकस्य निष्ठा | अजय कुमार | 37 |
| 8 | सूक्ति सौरभम् | डॉ॰ परमानन्द झा | 44 |
| 9 | नैकेनापि समं गता वसुमती | चंचल कुमारी | 57 |
| 10 | हल्दीघाटी | डॉ॰ परमानन्द झा | 64 |
| 11 | मदालसा | डॉ॰ आभा झा | 70 |
| 12 | प्रतीक्षा | डॉ॰ भास्करानन्द विडालिया | 82 |
| 13 | कार्याकार्यव्यवस्थितिः | डॉ॰ भास्करानन्द विडालिया | 87 |
| 14 | विद्यास्थानानि | अजय कुमार | 98 |

**परिशिष्ट :**

(I) आदर्श–प्रश्न–पत्रम्

(II) पाठ्यक्रमः

# अनुशासनम्

**(प्रथमः पाठ)**

**पाठपरिचयः-**

प्रस्तुत पाठ 'अनुशासनम्' वैदिक वाङ्मय में उत्कृष्ट स्थान रखने वाले तैत्तिरीय उपनिषद् के ग्यारहवें अनुवाक (शिक्षावल्ली) से संकलित है। तैत्तिरीय उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद का ही एक अंश है। उपनिषद् का अर्थ है- गुरु के समीप बैठकर शिक्षा ग्रहण करना। गुरुशिष्य-परम्परा में अध्ययन के पश्चात् आचार्य अपने शिष्य को जीवनोपयोगी नैतिक मूल्यों की शिक्षा देता है। सत्य बोलना, धर्मपूर्वक आचरण करना, स्वाध्याय व प्रवचन से आलस्य न करना, माता-पिता, गुरु तथा अतिथि को देवता मानकर व्यवहार करना इत्यादि अनेक पवित्र उपदेश दिए गए हैं। इस पाठ में दी गई शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी वे उपनिषद् काल में थीं।

**पाठोद्देश्यानिः-**

1. छात्रों को एक उत्तम तथा व्यवहारकुशल जीवन जीने की प्रेरणा देना।
2. छात्रों को उपनिषदों की सार्वकालिकता तथा प्रासंगिकता का बोध करना।
3. छात्रों को उपनिषदीय भाषा से परिचित कराना।
4. सरल व छोटे समासों के प्रयोग से भाषा को समृद्ध बनाना।

**1. मूलपाठः-**

**वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।**

**पदार्थाः-**

**अनूच्य**-(अनु+वच्+ल्यप्) पढ़ाकर, **अन्तेवासिनम्**-अन्ते (अन्तः) वसतीति अन्तेवासी, तम् (उप.त.) शिष्य को, **अनुशास्ति**- (अनु+शास्+लट्) उपदेश देता है, **स्वाध्यायान्मा**-स्वाध्यायात्+मा, **आहृत्य**-(आ+हृ+ल्यप्) लाकर, **प्रजातन्तुं**-वंशपरम्परा को, **व्यवच्छेत्सीः**-वि+अव+छिद्+लुङ्(म.पु.ए.) मत तोड़ो, **भूत्यै**-धनादि ऐश्वर्य के लिए अथवा कल्याण के लिए, **प्रमदितव्यम्**-(प्र+मद्+तव्यत्), प्रमाद करना चाहिए, **स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां**- अध्ययन अध्यापन से, **कुशलात्**-आत्मरक्षा-उपयोगी कर्मों से, **मातृदेवः**- (माता देवो यस्य सः (बहु.), माता को देवता समझने वाला **पितृदेवः**- पिता देवो यस्य सः (बहु.), पिता को देवता समझने वाला **भव**- भू+लोट्+म.पु.,एक.।

**सरलानुवादः-**

वेदों का अध्ययन कराने के बाद आचार्य शिष्य को उपदेश देता है- सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो अर्थात् धर्म के अनुकूल व्यवहार करो। स्वाध्याय से आलस्य मत करो। आचार्य के लिए प्रिय धन लाकर अर्थात् अभीष्ट वस्तु के रूप में गुरुदक्षिणा देकर (उनकी आज्ञा से विवाह करो और) वंशपरम्परा को मत तोड़ो अर्थात् सन्तान उत्पत्ति करो। सत्य से आलस्य नहीं करना चाहिए। धर्म (धार्मिक कार्यों) से आलस्य नहीं करना चाहिए। कुशलकार्यों अर्थात् आत्मरक्षा उपयोगी कार्यों से आलस्य नहीं करना चाहिए। ऐश्वर्य (प्राप्ति) के लिए आलस्य नहीं करना चाहिए। स्वाध्याय और प्रवचन से अर्थात् अध्ययन-अध्यापन से आलस्य नहीं करना चाहिए। देवकार्यों (यज्ञादि) से तथा पितृकार्यों अर्थात् पूर्वजों से सम्बन्धित यज्ञ, श्राद्ध, तर्पण इत्यादि से आलस्य नहीं करना चाहिए। तुम माता को देवता मानने वाले बनो। तुम पिता को देवता मानने वाले बनो। तुम गुरु को देवता मानने वाले बनो। तुम अतिथि को देवता मानने वाले बनो।

**विमर्शः-**

आचार्य अपने शिष्य को जीवनोपयोगी शिक्षा देता है। यहाँ क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं करना चाहिए का उपदेश दिया गया है। यहाँ गृहस्थ आश्रम का महत्त्व भी परिलक्षित होता है। उत्तम जीवन जीने की शिक्षा यहाँ दी गई है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) कः अन्तेवासिनम् अनुशास्ति?
(ख) आचार्याय किम् आहरणीयम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) केभ्यः न प्रमदितव्यम्?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'ऐश्वर्याय' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?
(ख) 'अनुशास्ति' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
(ग) 'धनम्' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?

2. **मूलपाठः-**

**यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः, युक्ता आयुक्ताः, अलूक्षा धर्मकामाः स्युः, यथा ते तत्र वर्तेरन् तथा तत्र वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवं चैतदुपास्यम्।**

**पदार्थाः-**

**यान्यनवद्यानि-** (यानि+अनवद्यानि न अवद्यानि) जो अनिन्दनीय हों, **सेवितव्यानि-** सेव्+तव्यत् (सेवन करना चाहिए), **सुचरितानि-** शोभनानि चरितानि (कर्म.) सत्कर्म, **त्वयोपास्यानि-** (त्वया+उपास्यानि) तुम्हारे द्वारा उपासना योग्य, **इतराणि-** दूसरे, **कर्मविचिकित्सा**-कर्मणि विचिकित्सा (स.त.) कर्म के विषय में जिज्ञासा, **वृत्तविचिकित्सा-** वृत्ते विचिकित्सा (स.त.) व्यवहार के विषय में जिज्ञासा, **सम्मर्शिनः-** विचारशील, **युक्ताः-** युज्+क्त (कर्म में लगे हुए), **आयुक्ताः-** आ+युज्+क्त (स्वतंत्र निर्णय लेने में समर्थ), **अलूक्षाः-** कोमल स्वभाव वाले, **धर्मकामाः-** धर्मे कामाः येषां ते (बहु.) कर्तव्यपरायण, **वर्तेरन्-** (वृत्+विधिलिङ्+प्र.पु.ब.) व्यवहार करें, **वर्तेथाः-** (वृत्+विधिलिङ्+म. पु.,एक.) **वेदोपनिषत्-** वेदानाम् उपनिषत् (ष.त.) वेदों के ज्ञान का सार।

**सरलानुवादः-**

उपदेश देता हुआ आचार्य कहता है कि जो अनिन्दनीय कर्म हैं उन्हीं का सेवन करना चाहिए अर्थात् अनिन्दनीय कर्म करने चाहिए, अन्य नहीं (निन्दनीय कर्म नहीं करने चाहिए) जो हमारे सत्कर्म हैं, तुम्हें केवल उन्हीं की उपासना करनी चाहिए अर्थात् केवल हमारे सत्कर्मों को ही अपनाना, अन्य कर्मों को नहीं और यदि तुम्हें कभी उचित-अनुचित कर्म के विषय में अथवा व्यवहार के विषय में सन्देह हो तो उस विषय में जो ब्राह्मण अर्थात् विद्वान्, विचारशील, सत्कर्मों में लगे हुए, स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ, कोमल स्वभाव वाले तथा कर्तव्यपरायण (धर्म में रुचि रखने वाले) हों, वे वहाँ जैसा व्यवहार करें, तुम्हें भी उस विषय में वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। यह आदेश (आज्ञा) है। यही उपदेश है। यह ही वेद रूपी ज्ञान का सार है। यही अनुशासन अर्थात् शिक्षा है। इसकी उपासना करनी चाहिए। यह ही उपासना के योग्य है अर्थात् ऐसा व्यवहार करना चाहिए।

**विमर्शः-**

प्रस्तुत अंश में कुशल जीवनोपयोगी शिक्षा दी गई है। कर्मों का चयन किस प्रकार करें, इसका वर्णन है। आचार्य अपने शिष्य को अपने भी केवल सत्कर्मों का ही अनुकरण करने की शिक्षा देता है। कर्म तथा व्यवहार के विषय में सन्देह उत्पन्न होने पर श्रेष्ठों को आदर्श मान उन्हीं के अनुकरण करने का उपदेश दिया गया है। यहाँ प्रदत्त शिक्षा पूर्णतः सार्वकालिक तथा सार्वभौतिक है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) कीदृशानि कर्माणि सेवितव्यानि?
   (ख) कीदृशानि कर्माणि उपास्यानि?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) यदि कर्मविचिकित्सा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् तर्हि कथं वर्तेत?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

   (क) 'वर्तेरन्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
   (ख) 'अनवद्यानि कर्माणि' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?
   (ग) 'अपराणि' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?

**परामर्शः-**

पाठ पढ़ाते समय शब्दार्थ-कथन-विधि के साथ व्याख्या-विश्लेषण-विधि का प्रयोग समुचित व्याख्या के लिए किया जा सकता है। मुख्य जीवनमूल्यों पर परियोजना कार्य देकर छात्रों को नैतिक व्यवहार के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

**अनुभवविस्तारः-**

आज के भौतिकतावादी युग में यह पाठ छात्रों को नैतिकमूल्यों तथा जीवनोपयोगी शिक्षाओं से जोड़ता है। एक आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरणा देता हुआ यह पाठ माता, पिता, गुरु तथा अतिथि के महत्त्व को भी इङ्गित करता है। यहाँ देव शब्द ज्येष्ठों के प्रति सम्मान व निष्ठा का परिचायक है।

# न त्वं शोचितुमर्हसि

**(द्वितीयः पाठ)**

**पाठ-परिचयः**

संस्कृत साहित्य में अश्वघोष (प्रथम शताब्दी ई.) की गणना भास एवं कालिदास जैसे उच्चकोटि के महाकवियों में की जाती है। दार्शनिक महाकवि अश्वघोष की कृति बुद्धचरितम् का संस्कृत साहित्य में अद्वितीय स्थान है। अश्वघोष का लक्ष्य बुद्ध के उपदेशों को काव्य के माध्यम से जनसाधारण तक पहुँचाना था। प्रस्तुत पाठ बुद्धचरितम् के छठें सर्ग से संकलित है।

इसमें जब सिद्धार्थ (बुद्ध का बाल्यकालिक नाम) महाभिनिष्क्रमण (संन्यास) के लिए गृहत्याग करते हैं, तब सारथी 'छन्दक' उन्हें भार्गव आश्रम तक पहुँचाता है। वे वहाँ से आगे अकेले जाने का ही निश्चय करते हैं। छन्दक को राजमहल की ओर लौट जाने के लिए कहने से पूर्व वे उसकी स्वामिभक्ति की प्रशंसा करते हैं। साथ ही परिवार एवं प्रजाजनों की चिन्ता दूर करने हेतु उनके लिए कहे संदेश में वे 'मोक्ष-प्राप्ति' को अपने गृहत्याग के पावन उद्देश्य के रूप में स्पष्ट करते हैं।

**मूलपाठः-**

**ततो मुहूर्ताभ्युदिते जगच्चक्षुषि भास्करे।**
**भार्गवस्याश्रमपदं स ददर्श नृणां वरः।।1।।**
**सुप्तविश्वस्तहरिणं स्वस्थस्थितविहङ्गमम्।**
**विश्रान्त इव यद्दृष्ट्वा कृतार्थ इव चाऽभवत्।।2।।**
**स विस्मयनिवृत्त्यर्थं तपः पूजार्थमेव च।**
**स्वां चानुवर्तितां रक्षन्नश्वपृष्ठादवातरत्।।3।।**

**अन्वयः-**

ततः नृणां वरः सः, जगच्चक्षुषि भास्करे
मुहूताभ्युदिते भार्गवस्य आश्रमपदं ददर्श।।1।।
सुप्तविश्वस्तहरिणम्, स्वस्थस्थितविहंगमम्,
यद् दृष्ट्वा, कृतार्थः इव, विश्रान्तः इव च अभवत्।।2।।
विस्मयनिवृत्त्यर्थम्, तपःपूजार्थम् एव च,
स्वाम् अनुवर्तितां रक्षन् सः अश्वपृष्ठात् अवातरत् च।।3।।

**सरलानुवादः-**

तब, नरों में श्रेष्ठ उस राजकुमार सिद्धार्थ ने कुछ क्षणों के पश्चात् जगत् के चक्षुस्वरूप भगवान् भास्कर के उदित होने पर मुनि भार्गव का आश्रम देखा।।1।।

जहाँ हिरन निश्चिन्त होकर सो रहे तथा पक्षी शान्त व प्रमुदित होकर बैठे थे ऐसे उस आश्रम को देखकर वह राजकुमार मानो कृतार्थ होकर श्रम–रहित–सा हो गया।।2।।

अपनी उत्सुकता दूर करने के लिए एवं प्रातःकालिक तपस्या–पूजा करने के लिए अपने नित्य आचरण की रक्षा करते हुए वह राजकुमार सिद्धार्थ घोड़े की पीठ से नीचे उतर आया।।3।।

**पदार्थाः**

| | |
|---|---|
| **ततः** | – तत्+तसिल् – तस्माद् अनन्तरम्। उसके बाद राजमहल से निकल कर रात भर सौ कोस यात्रा करने के पश्चात्। |
| **जगच्चक्षुषि** | – जगतः चक्षुषि = सकल लोक दृष्टि प्रकाश के। |
| **मुहूर्ताऽभ्युदिते** | – मुहूर्तम् = अष्टचत्वारिंशद् निमेषान् यावत् अभ्युदिते सति। |
| **वरः** | – श्रेष्ठः। |
| **आश्रमपदम्** | – आश्रमस्य पदम् = स्थानम्। |
| **ददर्श** | – दृश्+परोक्षभूते लिट्। |
| **सुप्तविश्वस्तहरिणम्** | – सुप्ताः विश्वस्ताः च हरिणाः यत्र तत् (आश्रयपदम्)। |
| **स्वस्थस्थितविहंगमम्** | – स्वस्थं स्थिताः विहंगमाः यत्र तत् (आश्रमपदम्)। |
| **कृतार्थः** | – कृतः = सिद्धः अर्थः = प्रयोजनं यस्य सः। सफलीभूतमनोरथः इत्यर्थः। |
| **विस्मयनिवृत्त्यर्थम्** | – विस्मयस्य = अनुपम–आश्रम–सौन्दर्यदर्शन–कौतूहलस्य निवृत्तिः = दूरीकरणम् एव अर्थः = प्रयोजनम्, तस्मै। |
| **अनुवर्तितां रक्षन्** | – यथोचित–क्रियाकलापस्य अनु = पश्चात् वर्त्तिताम्, गामितां नित्य–दिनचर्याऽनुपालकतां रक्षन् = संधारयन्। |
| **अश्वपृष्ठात्** | – अश्वस्य पृष्ठात्। |
| **अवातरत्** | – अव+तृ+लङ् = अवतीर्णः |

**विमर्शः**

पाठ के आरंभ में ही उल्लिखित 'कृतार्थः' पद से राजकुमार की वैराग्यपूर्ण मनोदशा का संकेत प्राप्त हो जाता है। राजकुमार सिद्धार्थ राजमहल की चकाचौंध व सांसारिक क्षणिक भोग–विलासों से उद्विग्न होकर ही वन को प्रस्थान करते हैं और शान्त–अहिंस्र भार्गवाश्रम के दर्शन कर आनन्दविभोर हो उठते हैं। यही भाव यहाँ 'कृतार्थः' पद से कवि द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। पूरे पाठ में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत –**

(क) ततः अभ्युदिते भास्करे सः किं ददर्श?
(ख) आश्रमपदं कस्य आसीत्?
(ग) आश्रमपदं कीदृशम् आसीत्?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) आश्रमं दृष्ट्वा सः कः इव अभवत्?
(ख) सः किमर्थम् अश्वपृष्ठाद् अवातरत्?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

(क) 'सः' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(ख) 'भास्करे' इति पदस्य किं विशेषणपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ग) 'श्रेष्ठः' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(घ) 'अवातरत्' इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः-**

**अवतीर्य च पस्पर्श निस्तीणमिति वाजिनम्।**
**छन्दकं चाब्रवीत्प्रीतः स्नापयन्निव चक्षुषा।।4।।**
**इमं ताक्ष्योपमजवं तुरङ्गमनुगच्छता।**
**दर्शिता सौम्य मद्भक्तिर्विक्रमश्चायमात्मनः।।5।।**
**को जनस्य फलस्थस्य न स्यादभिमुखो जनः।**
**जनीभवति भूयिष्ठं स्वजनोऽपि विपर्यये।।6।।**

**अन्वयः-**

अवतीर्य च, निस्तीर्णम् इति वाजिनं पस्पर्श,
प्रीतः चक्षुषा स्नापयन् इव, छन्दकम् अब्रवीत् च।।4।।
सौम्य !, ताक्ष्योपमजवम् इमम्, तुरंगम्, अनुगच्छता (त्वया)
आत्मनः अयं विक्रमः, मद्भक्तिः च दर्शिता।।5।।
फलस्थस्य जनस्य अभिमुखः को जनः न स्यात्?
विपर्यये स्वजनः अपि भूयिष्ठं जनीभवति।।6।।

**सरलानुवादः-**

....और उतर कर, ''तुमने पार कर दिया' - ऐसा कहते हुए घोड़े को सहलाया और फिर प्रसन्न होकर स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए सारथी छन्दक से बोले।।4।।
हे सौम्य ! गरुड़ पक्षी के समान तीव्रगति वाले इस घोड़े के पीछे चलकर अर्थात् कुशलता से इस रथ को संचालित कर तुमने अपना यह पराक्रम और मेरे प्रति अपनी स्वामिभक्ति दिखायी है।।5।।
फल देने में समर्थ व्यक्ति का आज्ञाकारी कौन नहीं होता? (अर्थात् हर कोई होता है) किन्तु उसके विपरीत अकिंचन व्यक्ति के प्रति स्वजन भी अत्यन्त साधारण जन के समान (उदासीन) हो जाया करता है।।6।।

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **अवतीर्य** | - | अव+तृ+ल्यप् |
| **पस्पर्श** | - | स्पृश्+परोक्षभूते लिट् |
| **निस्तीर्णम्** | - | निस्+तृ+क्त |
| **स्नापयन्** | - | स्ना+णिच्+शतृ |
| **प्रीतः** | - | प्रीञ् तर्पणं+कर्तरि क्तः |
| **अब्रवीत्** | - | ब्रू+लुङ् |
| **सौम्य** | - | सरलस्वभाव |

| | | |
|---|---|---|
| **इमम्** | – | इदम्+द्वितीया एकवचनम् |
| **ताक्ष्योपमजवम्** | – | ताक्ष्येंण = गरुड़ेन उपमा यस्य तादृशः ताक्ष्योपमः जवः = गतिः यस्य सः (तुरंगस्य विशेषणम्) |
| **अनुगच्छता** | – | अनु + गम् + शतृ |
| **मद्भक्तिः** | – | मयि भक्तिः |
| **आत्मनः** | – | स्वस्य |
| **विक्रमः** | – | पराक्रमः |

**विमर्शः**

निस्तीर्णमिति पस्पर्श–यहाँ 'इति उक्त्वा' इस पद का स्वयं अध्याहार/ऊह करना चाहिए। 'को जनस्य'– इत्यादि पद्य के द्वारा राजकुमार का अपने सारथी के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन करने से उनकी विनम्रता व अभिमानशून्यता द्योतित होती है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) राजकुमारः अवतीर्य कं पस्पर्श?
(ख) सः कं चक्षुषा स्नापयन् इव अब्रवीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) तुरंगम् अनुगच्छता छन्दकेन का दर्शिता?
(ख) विपर्यये स्वजनः कीदृशः भवति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'अब्रवीत्' इति क्रियायाः कर्ता कः?
(ख) 'ताक्ष्योपमजवम्' इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम्?
(ग) 'विमुखः' इति पदस्य विलोमपदं चित्वा लिखत।
(घ) अश्वशब्दस्य पर्यायं चित्वा लिखत।

**मूलपाठः–**

**इत्युक्त्वा स महाबाहुरनुशंसचिकीर्षया।**
**भूषणान्यवमुच्यास्मै सन्तप्तमनसे ददौ।।7।।**
**मुकुटाद्दीपकर्माणं मणिमादाय भास्वरम्।**
**ब्रुवन्वाक्यमिदं तस्थौ सादित्य इव मन्दरः।।8।।**
**अनेन मणिना छन्द! प्रणम्य बहुशो नृपः।**
**विज्ञाप्योऽमुक्तविश्रम्भं सन्तापविनिवृत्तये।।9।।**

**अन्वयः-**

इति उक्त्वा, सः महाबाहुः, अनुशंस-चिकीर्षया,
भूषणानि अवमुच्य, अस्मै संतप्तमनसे ददौ।।7।।
दीप-कर्माणम्, भास्वरम्, मणिम्, मुकुटात् आदाय,
इदं वाक्यं ब्रुवन् (सः) सादित्यः मन्दरः इव तस्थौ।।8।।
छन्द ! अनेन मणिना बहुशः प्रणम्य नृपः
संताप-विनिवृत्तये अमुक्त-विश्रम्भं विज्ञाप्यः।।9।।

**सरलानुवादः-**

ऐसा कहकर उस बड़ी भुजाओं वाले वीर राजकुमार सिद्धार्थ ने प्रत्युपकार की इच्छा से अपने सारे आभूषण उतारकर दु:खी मन वाले उस सारथी छन्दक को दे दिये।।7।।

फिर दीपक का काम करने वाली एक तेजस्वी मणि, मुकुट में से लेकर, यह वचन कहते हुए सूर्य से युक्त मन्दराचल के समान सुशोभित हुए।।8।।

(उन्होंने कहा) हे छन्दक ! इस मणि से मेरे पिता राजा शुद्धोदन को बारंबार प्रणाम करते हुए उनके शोक निवारण के लिए, जिस प्रकार विश्वास न टूटा वैसे (आगे कहा जाने वाला) यह संदेश कहना।।9।।

**पदार्थाः**

| | |
|---|---|
| **इत्युक्त्वा** | – इति+उक्त्वा (वच्+क्त्वा) |
| **महाबाहुः** | – महान्तौ बाहू = भुजौ यस्य सः। बड़ी भुजाओं वाले, प्रतापी। |
| **अनुशंसचिकीर्षया** | – अनुशंसः=प्रत्युपकारः तस्य चिकीर्षया=कर्तुम् इच्छया। प्रत्युपकार करने की इच्छा से |
| **अवमुच्य** | – अव+मुञ्च्+ल्यप्। उतार कर। |
| **संतप्तमनसे** | – संतप्तं मनः यस्य। दु:खी मन वाले को। |
| **ददौ** | – दा+परोक्षभूते लिट्। दे दिये। (यहाँ दा धातु के योग होने से 'संतप्तमनसे' में चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त है।) |
| **दीपकर्माणम्** | – दीपस्य कर्म इव कर्म यस्य तम्। दीपक का काम अर्थात् प्रकाश करने वाले। |
| **ब्रुवन्** | – ब्रू+शतृ। बोलते हुए। |
| **सादित्यः** | – आदित्येन सहितः। सूर्य से युक्त/शोभित। |
| **तस्थौ** | – स्था+परोक्षभूते लिट्। खड़े रहे। |
| **प्रणम्य** | – प्र+नम्+ल्यप्। प्रणाम कर। |
| **संतापविनिवृत्तये** | – संतापस्य विनिवृत्तये। शोक के निवारण हेतु। |
| **अमुक्त-विश्रम्भम्** | – न मुक्तः = त्यक्तः विश्रम्भः = विश्वासः यथा तथा। 'विज्ञाप्यः' क्रिया का विशेषण। विश्वास न टूटे हो ऐसे। |
| **विज्ञाप्यः** | – वि+ज्ञा+णिच्+कर्मणि ण्यत्। कहा जाय। |

**विमर्शः**

'नृपः अनेन मणिना प्रणम्य विज्ञाप्यः' अर्थात् राजा को इस मणि के द्वारा प्रणाम कर संदेश देना – ऐसा कहना राजकुमार के दो उद्देश्यों को दर्शाता हैं। पहला, इससे 'रिक्तपाणिः न वै पश्येद् राजानं, दैवतं, गुरुम्' – इस शिष्टाचार का पालन होता है। दूसरा, मणि राजकुमार द्वारा प्रेषित संदेश की प्रामाणिकता का भी द्योतक होगा।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) सः राजकुमारः भूषणानि कस्मै ददौ?
(ख) सः किमर्थं संतप्तमनसे भूषणानि ददौ?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) सः राजकुमारः कम् आदाय वाक्यं ब्रुवन् तस्थौ?
(ख) अनेन मणिना कः विज्ञाप्यः?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

(क) 'मणिम्' इत्यस्य किं विशेषणपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ख) 'विज्ञाप्यः' इति क्रियापदेन सह कस्य कर्मपदस्य संबन्धः?
(ग) 'दुःखम्' इति पदस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः?

**मूलपाठः-**

**जरामरणनाशार्थं प्रविष्टोऽस्मि तपोवनम्।**
**न खलु स्वर्गतर्षेण नास्नेहेन न मन्युना॥10॥**
**तदेवमभिनिष्क्रान्तं न मां शोचितुमर्हसि।**
**भूत्वापि हि चिरं श्लेषः कालेन न भविष्यति॥11॥**
**ध्रुवो यस्माच्च विश्लेषस्तस्मान्मोक्षाय मे मतिः।**
**विप्रयोगः कथं न स्याद्भूयोऽपि स्वजनादिति॥12॥**
**यदपि स्यादसमये यातो वनमसाविति।**
**अकालो नास्ति धर्मस्य जीविते चञ्चले सति॥13॥**

**अन्वयः-**

न खलु स्वर्गतर्षेण, न अस्नेहेन, न मन्युना (अपि तु केवलम्)
जरामरणनाशार्थम् (अहम्) तपोवनं प्रविष्टः अस्मि॥10॥
तत्, एवं निष्क्रान्तं मां शोचितुं न अर्हसि, हि,
चिरं श्लेषः भूत्वा अपि कालेन न भविष्यति॥11॥
यस्मात् च विश्लेषः ध्रुवः, तस्मात् कथं स्वजनात्
विप्रयोगः भूयः अपि न स्यात् इति मोक्षाय मे मतिः॥12॥
यदपि असौ असमये वनं यातः इति स्यात् (परम्)
जीविते चञ्चले सति धर्मस्य अकालः न अस्ति॥13॥

**सरलानुवादः**

न ही स्वर्ग की लालसा से, न विरक्ति से, न क्रोध से अपितु बुढ़ापा एवं मृत्यु के नाश हेतु मैं तपोवन को आया हूँ॥10॥

अतः इस प्रकार राजमहल से निकलने वाले मेरे लिए शोक मत करना क्योंकि लंबे समय तक रहने वाला संयोग भी समय आने पर एक दिन नहीं रहेगा।।11।।

चूँकि, एक दिन वियोग निश्चित है, अतः मोक्ष पाने का मेरा विचार है जिससे फिर कभी अपने स्वजनों से वियोग न हो !।।12।।

यद्यपि यह कहा जा सकता है कि वह (राजकुमार) असमय में वन चला गया, तो जीवन के क्षण-भंगुर होने से धर्म के लिए कोई असमय नहीं होता !।।12।।

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **स्वर्गतर्षेण** | – | स्वर्गस्य तर्षेण = तृष्णया। स्वर्ग की लालसा से। |
| **अस्नेहेन** | – | न स्नेहः विषयानुरक्तिः, तेन। |
| **मन्युना** | – | क्रोधेन |
| **जरामरणनाशार्थम्** | – | जरा च मरणं च जरामरणे, तयोः नाशार्थम्। बुढ़ापा और मृत्यु के नाश हेतु। |
| **प्रविष्टोऽस्मि** | – | प्रविष्टः अस्मि। प्र+विश्+क्त = प्रविष्टः। प्रविष्ट हुआ हूँ। |
| **अभिनिष्क्रान्तम्** | – | अभि+निस्+क्रम्+क्त। निर्गतम् इत्यर्थः। निकला हुआ। |
| **शोचितुमर्हसि** | – | शोकं कर्तुम् उचितम्। शोक करना उचित है। |
| **श्लेषः** | – | वियोगः। |
| **मोक्षाय मतिः** | – | मोक्ष हेतु मति = विचार है। तादर्थ्ये चतुर्थी। |
| **विप्रयोगः** | – | वियोगः। |
| **असौ** | – | अदस्+प्रथमा+एकवचनम्। वह। राजकुमार। |
| **अकालः** | – | न कालः अकालः। अनुचितः कालः इत्यर्थः। |

**विमर्शः**

इन चारों पद्यों में दिये संदेश से राजकुमार सिद्धार्थ के हृदय में सांसारिकता के प्रति दृढ़ वैराग्य एवं मोक्ष की लालसा स्पष्ट होती है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत –**

(क) सः किमर्थं तपोवनं प्रविष्टः?
(ख) विश्लेषः कीदृशः?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) जीविते चञ्चले सति कः नास्ति?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'अस्मि' इति क्रियायाः कर्ता कः?
(ख) वियोगार्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(ग) 'अभिनिष्क्रान्तम्' इति विशेषणस्य विशेष्यं किम्?

**मूलपाठः**

> **एवमादि त्वया सौम्य विज्ञाप्यो वसुधाधिपः।**
> **प्रयतेथास्तथा चैव यथा मां न स्मरेदपि॥14॥**
> **अपि नैर्गुण्यमस्माकं वाच्यं नरपतौ त्वया।**
> **नैर्गुण्यात्त्यज्यते स्नेहः स्नेहत्यागान्न शोच्यते॥15॥**

**अन्वयः**

सौम्य ! त्वया वसुधाधिपः एवमपि विज्ञाप्यः।
तथा प्रयतेथाः यथा सः मां न स्मरेत् इति॥14॥
त्वया नरपतौ अस्माकं नैर्गुण्यम् अपि वाच्यम्, (यतः)
नैर्गुण्यात् स्नेहः त्यज्यते, स्नेहत्यागात् (च) न शोच्यते॥15॥

**सरलानुवादः**

हे सौम्य ! इसी प्रकार और भी अन्य बातें तू राजा से बतलाना और वैसा प्रयत्न करना जिससे वे मेरा स्मरण न करें॥14॥
और तुम राजा से हमारी निर्गुणता (निष्ठुरता दोष) भी बताना क्योंकि दोष के कारण स्नेह छूट जाता है और स्नेह छूटने से शोक नहीं होता।

**पदार्थाः**

| | |
|---|---|
| **वसुधाधिपः** | – वसुधायाः = पृथिव्याः अधिपः = पालकः। नृपः इत्यर्थः। राजा। |
| **प्रयतेथाः** | – प्रयत्नं कुर्याः। प्र+यत्+लिङ्। प्रयास करना। |
| **नैर्गुण्यम्** | – निर्गुणस्य भावः नैर्गुण्यम्। निर्गुण+भावे ष्यञ्। निष्ठुरता। |
| **वाच्यम्** | – कथनीयम्। वच्+ण्यत्। कहना। |
| **स्नेहत्यागात्** | – स्नेहस्य त्यागात्। स्नेह के छूटने से। |

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत –**

(क) त्वया वसुधाधिपः किं विज्ञाप्यः?
(ख) त्वया नरपतौ किं वाच्यम्?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) नैर्गुण्यात् कः त्यज्यते?
(ख) स्नेहत्यागात् किं भवति?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'त्वया' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(ख) राज्ञः कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः?
(ग) 'घृणा'-शब्दस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

# मातुराज्ञा गरीयसी

**(तृतीयः पाठ)**

**पाठपरिचयः-**

प्रस्तुत पाठ महाकवि भास विरचित प्रतिमा नाटक से लिया गया है। भास ने कैकेयी के प्रति राम की जो निष्ठा एवं आदर भावना प्रस्तुत की है, वह अद्वितीय है। राम कैकेयी के निर्णय को हर परिस्थिति में सही ठहराते हैं और उसके लिए अनेक तर्क प्रस्तुत करते हैं। वे अपनी माता की लेशमात्र निन्दा नहीं सुनना चाहते। राम क्रोधित लक्ष्मण को भी शांत कराने का प्रयास करते हैं। कैकेयी को देवतुल्य पूजनीय मानते हुए उनकी आज्ञा के पालन को ही अपना परम धर्म स्वीकार करते हैं तथा वनगमन को तत्पर हो जाते हैं। 'मातृदेवो भव' के संस्कार यहाँ चरितार्थ होते हैं।

**पाठोद्देश्यानिः-**

1. राम की माता कैकेयी के प्रति निष्ठा व दृढ़विश्वास से छात्रों को अवगत कराना।
2. छात्रों में 'मातृदेवो भव' के संस्कार जागृत करना।
3. नाट्यशिक्षण के माध्यम से बच्चों के श्रवण, भाषण व अभिनय कौशल को विकसित करना।
4. छात्रों को संस्कृत संवाद के लिए प्रेरित करना।

**1. मूलपाठः-**

*(प्रविश्य)*

**काञ्चुकीयः** - परित्रायतां परित्रायतां कुमारः।
**रामः** - आर्य! कः परित्रातव्यः।
**काञ्चुकीयः** - महाराज!
**रामः** - महाराजः इति। आर्य! ननु वक्तव्यम्। एकशरीर-संक्षिप्ता पृथिवी रक्षितव्येति। अथ कुत उत्पन्नोऽयं दोषः?
**काञ्चुकीयः** - स्वजनात्।
**रामः** - स्वजनादिति। हन्त! नास्ति प्रतीकारः।
- शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा।
- कस्य स्वजनशब्दो मे लज्जामुत्पादयिष्यति।।1।।

**अन्वयः-**

(यथा) अरिः शरीरे प्रहरति तथा स्वजनः हृदये (प्रहरति)। (अद्य) कस्य स्वजनशब्दः मे लज्जाम् उत्पादयिष्यति।

**पदार्थाः-**

**परित्रायतां-** (परि+'त्राण्'+लोट्लकारः) रक्षा करो, **परित्रातव्यः-** (परि+त्राण्+तव्यत्) बचाना चाहिए, **वक्तव्यम्-**(वच्+तव्यत्) कहना चाहिए, **एकशरीरसंक्षिप्ता-**(एकस्मिन् शरीरे एकशरीरे संक्षिप्ता (त.)) एक शरीर में सिमटी हुई, **महाराजः-** महान् चासौ राजा, **उत्पादयिष्यति-** (उत्+पद्+णिच्+लृट+प्र.पु.ए.) उत्पन्न करेगा।

**सरलानुवादः-**

(*प्रवेश करके*)

**कञ्चुकी** - कुमार! रक्षा करो रक्षा करो।

**राम** - आर्य! किसकी रक्षा करें। (कौन रक्षा के योग्य है)

**कञ्चुकी** - महाराज!

**राम** - आर्य! तो ऐसे कहना चाहिए कि एक शरीर में सिमटी हुई पृथ्वी की रक्षा करनी है। यह दोष (समस्या) कहाँ से उत्पन्न हुआ है।

**कञ्चुकी** - अपने व्यक्ति से।

**राम** - अपने व्यक्ति से! अरे! (इसका) समाधान नहीं है।

(जैसे) शत्रु शरीर पर प्रहार करता है, वैसे अपना व्यक्ति हृदय पर प्रहार करता है। (तो यह) किसका स्वजन शब्द आज मुझे लज्जित करेगा।

**विमर्शः-**

प्रस्तुत नाट्यांश में महाराज पर आई किसी समस्या अर्थात् राम के वनवास की सूचना कञ्चुकी के माध्यम से दी गई है। यहाँ श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अत्र कः परित्रातव्यः?
   (ख) स्वजनः कुत्र प्रहरति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) काञ्चुकीयः प्रविश्य किं कथयति?
   (ख) अरिःकुत्र प्रहरति?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'दोषः' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?
   (ख) 'चित्ते' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?

**2. मूलपाठः-**

**काञ्चुकीयः** - तत्रभवत्याः कैकय्याः।

**रामः** - किमम्बायाः, तेन हि उदर्केण गुणेनात्र भवितव्यम्।

**काञ्चुकीयः** - कथमिव?

**रामः** - श्रूयताम्,

यस्याः शक्रसमो भर्ता मया पुत्रवती च या।
फले कस्मिन् स्पृहा तस्या येनाकार्यं करिष्यति॥2॥

**काञ्चुकीयः** - कुमार! अलमुपहतासु स्त्रीबुद्धिषु स्वमार्जवमुपनिक्षेप्तुम्। तस्या एव खलु वचनात् भवदभिषेको निवृत्तः।

**रामः** – आर्य! गुणाः खल्वत्र।

**काञ्चुकीयः** – कथमिव?

**रामः** – श्रूयताम्,

**वनगमननिवृत्तिः पार्थिवस्यैव ताव-**
**न्मम पितृपरवत्ता बालभावः स एव।**
**नवनृपतिविमर्शे नास्ति शङ्का प्रजाना-**
**मथ च न परिभोगैर्वञ्चिता भ्रातरो मे।।3।।**

**( 2 ) अन्वयः-**

यस्याः शक्रसमः भर्ता मया च या पुत्रवती। तस्याः कस्मिन् फले स्पृहा (स्यात्) येन अकार्यं करिष्यति।

**( 3 ) अन्वयः-**

तावत् पार्थिवस्य वनगमननिवृत्तिःएव, मम पितृपरवत्ता बालभावः सः एव। नवनृपतिविमर्शे प्रजानाम् शङ्का न अस्ति। अथ च मे भ्रातरः परिभागैः न वञ्चिताः।

**पदार्थाः-**

**उदर्केण**-अच्छे परिणाम वाले, **शक्रसमः**-(शक्रेण समः (तृ.त.)) इन्द्र के समान, **अकार्य**-बुरा काम, **उपहतासु**-क्षीण (स्त्री बुद्धियों) में, **स्त्रीबुद्धिषु**-(स्त्रीणां बुद्धिषु (ष.त.)), **उपनिक्षेप्तुम्**-(उप+नि+क्षिप्+तुमुन्) रखना, **वनगमननिवृत्तिः**- (वनगमनात् निवृत्तिः (पं.त.)) वन जाने से रुकना, **पितृपरवत्ता**-(पितुः परवत्ता (ष.त.)) पिता की अधीनता अर्थात् पिता के साये में, **बालभावः**-(बालस्य भावः (ष.त.)), बचपन, **परिभोगैः**-उपभोगों से।

**सरलानुवादः-**

**कञ्चुकी** – सम्माननीया कैकयी का (स्वजन शब्द)

**राम** – क्या माता का, तो अवश्य यहाँ परिणाम भला होगा।

**कञ्चुकी** – कैसे?

**राम** – सुनिए,
जिसका इन्द्र के समान (पराक्रमी) पति हो, मेरे जैसा पुत्र हो, उनकी किस फल में इच्छा होगी जिसके कारण (वह) कोई बुरा कार्य करेंगी।

**कञ्चुकी** – हे कुमार! क्षीण स्त्रीबुद्धियों में अपनी सरलता रखना बन्द करो। उसी (कैकयी) के वचनों से आपका (राज्य) अभिषेक रोक दिया गया।

**राम** – आर्य! निश्चिय ही यहाँ गुण हैं।

**कुञ्चुकी** – कैसे?

**राम** – सुनिए,

तो पिता का वन जाना रुक गया। पिता के साये में मेरा बचपन भी वैसा ही रह गया। नए राजा के विषय में प्रजा को कोई शंका नहीं होगी (कि नया राजा कैसा है?) और मेरे भाई भी उपभोगों से वञ्चित नहीं हुए।

**विमर्श–**

यहाँ राम हर स्थिति में कैकेयी के वचनों को ही सही ठहराते हैं। अपने राज्य अभिषेक के रोकने में भी वह गुण ही देखते हैं। वे कहते हैं कि अब पिता का वन जाना भी रुक गया क्योंकि पुत्र के राज्याभिषेक के बाद राजा संन्यास लेकर वन चले जाते थे। इसी प्रकार राम कैकयी के वचनों को अनेक तर्कों से सही ठहराते हैं।

यहाँ प्रथम श्लोक में अनुष्टुप् तथा द्वितीय में मालिनी छन्द है।

**अभ्यासप्रश्नाः–**

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) कस्याः वचनेन रामस्य राज्याभिषेको निवृत्तः?
   (ख) के परिभोगैः न वञ्चिताः?
   (ग) कैकय्याः भर्ता कीदृशः अस्ति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) कुत्र स्वमार्जवं निक्षेप्तुम् अलम्?
   (ख) रामः कैकय्याः वचने कान् गुणान् पश्यति?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–**
   (क) नट्यांशे 'मया' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ख) 'नृपतेः' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?
   (ग) 'उपहतासु स्त्रीबुद्धिषु' इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

**3. मूलपाठः–**

**काञ्चुकीयः** – अथ च तयाऽनाहूतोपसृतया भरतोऽभिषिच्यतां राज्य इत्युक्तम्। अत्राप्यलोभः?

**रामः** – आर्यः! भवान् खल्वस्मत्पक्षपातादेव नार्थमवेक्षते। कुतः,
शुल्के विपणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते।
तस्या लोभोऽत्र नास्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम्।।4।।

**काञ्चुकीयः** – अथ................

**रामः** – अतः परं न मातुः परिवादं श्रोतुमिच्छामि। महाराजस्य वृत्तान्तस्तावदभिधीयताम्।

**काञ्चुकीयः** – ततस्तदानीम्,
शोकादवचनाद् राज्ञा हस्तेनैव विसर्जितः।
किमप्यभिमतं मन्ये मोहं च नृपतिर्गतः।।15।।

**4. अन्वयः–**

यदि शुल्के विपणितम् राज्यम् पुत्रार्थे याच्यते। अत्र तस्याः लोभः, भ्रातृराज्यापहारिणाम् अस्माकम् (लोभः) न।

**5 अन्वयः–**

शोकात् अवचनात् राज्ञा (अहम्) हस्तेन एव विसर्जितः। मन्ये किम् अपि अभिमतम् (स्यात्) नृपतिः च मोहं गतः।

**पदार्थाः-**

**तयाऽनाहूतोपसृतया**-(तया+अनाहूत+उपसृतया) बिना बुलाए पास आई हुई के द्वारा,**अत्राप्यलोभः**-अत्र+अपि+अलोभः इसमें भी लोभ नहीं,**खल्वस्मत्पक्षपातादेव**-(खलु+ अस्मत्+पक्षपातात्+एव) हमारे प्रति पक्षपात के कारण,**विपणितं**-(वि+पण्+क्त) देने के निमित्त,**भ्रातृराज्यापहरिणाम्**-(भ्रातुःराज्यस्य, भ्रातृराज्यस्य अपहारिणाम् (ष.त.)), भाई के राज्याधिकार का हरण करने वाले (हमारा), **परिवादं**-(परि+वद्+घञ्) निन्दा, **अभिधीयताम्**-(अभि+धा+कर्मणि लोट्) कहिए, वृत्तान्तः समाचार, **ततस्तदानीम्**- (ततः+तदानीम्), **अवचनात्**-(न वचनात् (नञ् त.)) बोलने में असमर्थ होने के कारण, **विसर्जितः**-(वि+सृज्+क्त) लौटा दिया, **मोहं**-मूर्च्छा, **अभिमतं**-(अभि+मन्+क्त) चाहा गया।

**सरलानुवादः-**

**कञ्चुकी** - और फिर उसने बिना बुलाए ही पास पहुँचकर 'भरत का राज्याभिषेक किया जाए' ऐसा कहा। क्या यहाँ भी उनका लोभ नहीं?

**राम** - आर्य! आप हमारे प्रति पक्षपात के कारण वास्तविकता को नहीं देख रहे हैं क्योंकि विवाह के समय ही देने के लिए प्रतिज्ञा किया हुआ राज्य यदि पुत्र के लिए माँगा तो क्या इसमें उसका लोभ है या भाई के राज्याधिकार का हनन करने वाले हमारा (राम का) लोभ है।

**कञ्चुकी** - और.....

**राम** - इसके परे माता की निन्दा नहीं सुनना चाहता (सुन सकता)। तो महाराज का समाचार बताइए।

**कञ्चुकी** - तब उसी समय शोक के कारण बोलने में असमर्थ राजा ने हाथ के इशारे से ही लौटा दिया। मैं ऐसा मानता हूँ कि वे कुछ (कहना) चाहते थे और राजा मूर्च्छित हो गए।

**विमर्शः-**

राम कैकेयी का समर्थन करते हैं तथा बताते हैं कि राजा दशरथ ने विवाह के समय ही कैकयी को राज्य देने की प्रतिज्ञा की थी अतः वह तो पहले से ही कैकयी का है। नाट्यांश के दोनों श्लोकों में अनुष्टुप छन्द है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) भरतः अभिषिच्यतां राज्ये इति कः कथयति?
   (ख) रामः कस्याः परिवादं न श्रोतुमिच्छति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) कीदृशं राज्यं कैकय्या पुत्रार्थे याचितम्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'लोभः' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?
   (ख) 'अस्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम्' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?
   (ग) 'मातुः परिवादं न श्रोतुमिच्छामि' इत्यत्र क्रियापदं किम्?

## 4. मूलपाठः–

**रामः** – कथं मोहमुपगतः।

*(नेपथ्ये)*

कथं कथं मोहमुपगत इति।
यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयाम्।।

**रामः** – (आकर्ण्य पुरतो विलोक्य)
अक्षोभ्यः क्षोभितः केन लक्ष्मणो धैर्यसागरः।
येन रुष्टेन पश्यामि शताकीर्णमिवाग्रतः।।6।।
(ततः प्रविशति धनुर्बाणपाणिर्लक्ष्मणः)

**लक्ष्मणः** – (सक्रोधम्) कथं कथं मोहमुपगत इति।
यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दयां
स्वजननिभृतः सर्वोप्येवं मृदुः परिभूयते।
अथ न रुचितं मुञ्च त्वं मामहं कृतनिश्चयो
युवतिरहितं लोकं कर्तुं यतश्छलिता वयम्।।7।।

**अन्वयः–**

अक्षोभ्यः धैर्यसागरः लक्ष्मणः केन क्षोभितः। येन रुष्टेन अग्रतः शताकीर्णम् इव पश्यामि।

यदि राज्ञः मोहम् न सहसे धनुः स्पृश मा दयाम्। स्वजननिभृतः मृदुः सर्वः अपि परिभूयते। अथ न रुचितम्, त्वम् माम् मुञ्च, अहम्, लोकम् युवतिरहितम् कर्तुम् कृतनिश्चयः यतः वयम् छलिताः।

**पदार्थाः–**

**उपगतः**–(उप+गम्+क्त) प्राप्त हुए, **सहसे**–(सह्+लट्+म.ए) सहन करना. **अक्षोभ्यः**–(न क्षोभ्यः) अति प्रशान्त, **धैर्यसागरः**–(धैर्यस्य सागरः (ष.त.)) धैर्यवान्, **रुष्टेन**–(रुष्+क्त (तृं.)) रूठने पर, **शताकीर्णम्**–(शतैः आकीर्णम् (तृ.त.)) सैकड़ों लोगों से व्याप्त, **स्वजननिभृतः**–(स्वजनेभ्यः निभृतः च.त.)) अपनों के प्रति विनम्र, **सर्वोप्येवं**–(सर्वः+अपि+एवम्) सब ही ऐसा, **परिभूयते**– (परि+भू+कर्मणि लट्) अपमानित होता है, **धनुर्बाणपाणिः** (धनुः बाणश्च पाणौ यस्य सः (बहु.)) धनुषबाण हाथ में है जिसके वह, **सक्रोधम्**–(क्रोधेन सहितम् (अव्ययी.)) गुस्से से, **कृतनिश्चयः**–(कृतः निश्चयः येन सः (बहु.)) कर लिया है निश्चय जिसने वह, **युवतिरहितम्**–(युवतिभिः रहितम् (तृ.त.)) युवतियों से रहित, **युवति**–युवन्+ति, **छलिताः**– (छल्+क्त) छले गए।

**सरलानुवादः–**

**राम** – कैसे मूर्च्छित हो गए?

*(नेपथ्य में)*

क्या? क्या? मूर्च्छित हो गए?
यदि राजा की मूर्च्छा अवस्था सहन नहीं होती तो धनुष धारण करो, दया नहीं

**राम** – 'सुनकर और सामने देखकर' अतीव प्रशान्त व धैर्यसागर इस लक्ष्मण को किसने क्रोधित कर दिया। इसके (लक्ष्मण के) क्रोधित होने से (मैं अपने) सामने सैंकड़ों लोगों को देख रहा हूँ।
(तब हाथ में धनुष बाण लिए लक्ष्मण का प्रवेश)

**लक्ष्मण** – (क्रोध के साथ) कैसे-कैसे मूर्च्छित हो गए।

यदि राजा की मूर्च्छावस्था सहन नहीं होती तो धनुष उठाओ दया का आश्रय मत लो। अपनों के प्रति विनम्र व कोमल सभी का इसी प्रकार अनादर होता है। यदि (अपनों के ऊपर धनुष उठाना) आपको अच्छा नहीं लगता तो मुझे छोड़ दें। मैंने इस संसार को स्त्रियों से रहित करने का निश्चय किया है क्योंकि हम (स्त्रियों के द्वारा ही) छले गए हैं।

**विमर्शः-**

पिता की मूर्च्छावस्था को जानकर राम अत्यन्त दुःखी होते हैं तथा लक्ष्मण अत्यन्त क्रोधित होकर सम्पूर्ण संसार को ही स्त्रियों से रहित कर देने का निश्चय करते हैं। प्रस्तुत नाट्यांश में प्रथम श्लोक अनुष्टुप् छन्द में तथा द्वितीय हरिणी छन्द में निबद्ध है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अक्षोभ्यः कः क्षोभितः?
   (ख) कीदृशः मृदुः परिभूयते?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) लक्ष्मणस्य कः निश्चयः?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'तुष्टेन' इति पदस्य विपर्ययपदं किम्?
   (ख) 'अहं कृतनिश्चयः' इत्यत्र अहं सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ग) 'अक्षोभितः' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?

5. **मूलपाठः-**

**सीता** - आर्यपुत्र! रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्। अपूर्वः खल्वस्यायासः।

**रामः** - सुमित्रामातः! किमिदम्?

**लक्ष्मणः** - कथं कथं किमिदं नाम।
क्रमप्राप्ते हृते राज्ये भुवि शोच्यासने नृपे।
इदानीमपि सन्देहः किं क्षमा निर्मनस्विता।।8।।

**रामः** - सुमित्रामातः! अस्मद्राज्यभ्रंशो भवत उद्योगं जनयति। आः अपण्डितः खलु भवान्।
भरतो वा भवेद् राजा वयं वा ननु तत् समम्।
यदि तेऽस्ति धनुश्श्लाघा स राजा परिपाल्यताम्।।9।।

**लक्ष्मणः** - न शक्नोमि रोषं धारयितुम्। भवतु भवतु। गच्छामस्तावत्। (प्रस्थितः)

**अन्वयः-**

क्रमप्राप्ते राज्ये हृते, नृपे (च) भुवि शोच्यासने (सति) इदानीम् अपि सन्देहः? किं क्षमा निर्मनस्विता।
भरतः वा राजा भवेत् वयम् वा ननु तत् समम्। यदि ते धनुश्श्लाघा अस्ति (तर्हि) स राजा परिपाल्यताम्।

**पदार्थाः-**

**रोदितव्ये-**(रुद्+तव्यत् (स.वि.)) रोने के (समय), **खल्वस्यायासः-** (खलु+अस्य+ आयासः) इसका प्रयास निश्चय ही आश्चर्यजनक है।, **सुमित्रामातः-** (सुमित्रा माता यस्य सः (बहु.) लक्ष्मण, **निर्मनस्विता-**(निर्गता मनस्विता यस्याः सा (बहु.)) हृदयशून्यता, **अपण्डितः-**(न पण्डितः (नञ् त.)) अधीर, **धारयितुम्-**(धृ+णिच्+तुमुन्) धारण करने में, **प्रस्थितः-**(प्र+स्था+क्त) चला गया।

**सरलानुवादः-**

**सीता** – हे आर्यपुत्र! लक्ष्मण ने रोने के समय अर्थात् शोक के समय धनुष उठा लिया। इसका यह प्रयास निश्चय ही आश्चर्यजनक है।

**राम** – हे सुमित्रानन्दन! यह क्या?

**लक्ष्मण** – कैसे-कैसे (पूछ रहे हैं) यह क्या?
वंशपरम्परा से प्राप्त राज्य छिन जाने पर, महाराज के भूमि पर शोक से युक्त आसन पर अर्थात् मूर्च्छित हो जाने पर (क्या) अब भी संदेह है? क्या क्षमा दया से रहित है?

**राम** – हे सुमित्रानन्दन! हमारे राज्याभिषेक का भ्रंश (निवृत्ति) तुम्हें इतना उत्तेजित कर रहा है। खेद! तुम कितने अधीर हो।
भरत राजा बने या हम राजा बनें (तुम्हारे लिए तो) दोनों समान हैं। यदि तुम्हें अपनी धनुर्विद्या पर अभिमान है तो राजा (भरत) की रक्षा करो।

**लक्ष्मण** – मैं क्रोध को रोक नहीं सकता। अच्छा, अच्छा तो जाते हैं। (प्रस्थान)

**विमर्शः-**

यहाँ राम क्रोधित लक्ष्मण को समझाने का प्रयास करते हैं। क्रोधित लक्ष्मण वहाँ से चले जाते हैं। प्रस्तुत नाट्यांश में दोनों श्लोक अनुष्टुप छन्द में निबद्ध हैं।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) सौमित्रिणा रोदितव्ये काले किं गृहीतम्?
   (ख) रामस्य राज्यभ्रंशः लक्ष्मणस्य किं जनयति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) लक्ष्मणस्य कृते किं किं समम्?
   (ख) धनुश्श्लाघा अस्ति चेत् लक्ष्मणः किं क्रियताम्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'रोदितव्ये' इति कस्य विशेषणम्?
   (ख) 'रक्ष्यताम्' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?
   (ग) 'भरतो वा भवेद् राजा' इत्यत्र क्रियापदं किम्?

6. **मूलपाठः-**

| | | |
|---|---|---|
| **रामः** | - | त्रैलोक्यं दग्धुकामेव ललाटपुटसंस्थिता।<br>भृकुटिर्लक्ष्मणस्यैषा नियतीव व्यवस्थिता।।10।।<br>सुमित्रामातः। इतस्तावत्। |
| **लक्ष्मणः** | - | आर्य! अयमस्मि।। |
| **रामः** | - | भवतः स्थैर्यमुत्पादयता मयैवमभिहितम्। उच्यतामिदानीम्।<br>ताते धनुर्न मयि सत्यमवेक्ष्यमाणे<br>मुञ्चानि मातरि शरं स्वधनं हरन्त्याम्।<br>दोषेषु बाह्यमनुजं भरतं हनानि<br>किं रोषणाय रुचिरं त्रिषु पातकेषु।।11।। |
| **लक्ष्मणः** | - | (सवाष्पम्) हा धिक्! अस्मानविज्ञायोपालभसे।<br>यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे न मनोरथः।<br>वर्षाणि किल वस्तव्यं चतुर्दश वने त्वया।।12।। |

**अन्वयः-**

त्रैलोक्यं दग्धुकामा इव ललाटपुटसंस्थिता लक्ष्मणस्य एषा भृकुटिः नियतिःइव व्यवस्थिता।

मयि सत्यम् अवेक्ष्यमाणे ताते धनुः न (उचितम्) स्वधनम् हरन्त्याम् मातरि शरं मुञ्चानि। दोषेषु बाह्यम् भ्रातरम् अनुजम् हनानि, त्रिषु पातकेषु (भवतः) रोषणाय किम् रुचिरम्?

यत्कृते महति क्लेशे राज्ये मे मनोरथः न। त्वया चतुर्दश वर्षाणि वने वस्तव्यम् किल।

**पदार्थाः-**

**दग्धुकामा**-(दग्धुं कामः यस्याः सा (बहु.)) जलाने की इच्छा वाली, **ललाटपुटसंस्थिता**-(ललाटस्य पुटे संस्थिता (त.)) मस्तक पर विराजमान, **संस्थिता**-(सम्+स्था+क्त) स्थित, **भृकुटिर्लक्ष्मणस्यैषा**-(भृकुटिः+लक्ष्मणस्य+एषा, **भृकुटिः**-भौहों को सिकोड़ने की स्थिति, **व्यवस्थिता**-(वि+अव+स्था+क्त) स्थित है, **सुमित्रामातः**-(सुमित्रा माता यस्य सः (बहु.)) सुमित्रानन्दन, **उत्पादयता**- (उत्+पद्+णिच्+शतृ (तृ.ए.)) उत्पन्न करने वाले के द्वारा, **मयैवमभिहितम्**- (मया+एवम्+अभिहितम् (अभि+धा+क्त)) मैंने ऐसा कहा, **उच्यताम्**-(वच्+कर्मणि लोट्) कहिए, **अवेक्ष्यमाणे**-(अव+ईक्ष्+शानच्) देखने वाले पर, मुञ्चानि (मुञ्च्+लोट्), **हरन्त्याम्**-(हृ+शतृ स्त्री. (स.,ए.)) हरने वाली पर, हनानि-(हन् + लोट) मारूं, **अविज्ञाय**-(न विज्ञाय (नञ्), वि+ज्ञा+ल्यप्) बिना बताए, **उपालभसे**-(उप+आ+लभ्+लट्) उलाहना देते हो, **वस्तव्यम्**-(वस्+तव्यत्) राजा चाहिए।

**सरलानुवादः-**

| | | |
|---|---|---|
| **राम** | - | तीनों लोकों को मानो जलाने की इच्छा वाली मस्तक पर विराजमान यह लक्ष्मण की भृकुटि (भौंहों को सिकोड़ने की स्थिति) मानो भाग्य की तरह अटल है।<br>सुमित्रानन्दन! इधर आओ। |

**लक्ष्मण** – आर्य! (मैं) यह हूँ (आया)।

**राम** – आपको शान्त करने के लिए ऐसा कहा। अब कहो– मुझसे सम्बन्धित सत्य को देखने वाले (अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाले) पिता पर धनुष उठान उचित नहीं। अपना धन (विवाह शुल्क) लेने वाली माता पर बाण छोड़ूँ या दोषों से परे छोटे भाई भरत को मारूँ, तीनों में से कौन सा पाप तुम्हारे क्रोध को अभीष्ट है?

**लक्ष्मण** – (आँसुओं के साथ) खेद है, आप बिना जाने हमें उलाहना दे रहे हैं। जिसके लिए इतना क्लेश है, ऐसे राज्य में मेरी कोई इच्छा नहीं। (परन्तु दु:ख तो इस बात का है कि) तुम्हें चौदह वर्षों तक वन में रहना होगा।

**विमर्श–**

क्रोधित लक्ष्मण को शान्त कराने के लिए राम प्रयास करते हैं जिस पर लक्ष्मण दु:खी होकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करता है। प्रस्तुत नाट्यांश में प्रथम तथा तृतीय श्लोक अनुष्टुप् छन्द में तथा द्वितीय वसन्ततिलका छन्द में निबद्ध है।

**अभ्यासप्रश्ना:–**

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) लक्ष्मणस्य कुत्र मनोरथ: न?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) रामेण वर्णितानि त्रीणि पातकानि कानि?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–**
   (क) 'अनुजम्' इति कस्य विशेषणम्?
   (ख) 'असत्यम्' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?
   (ग) 'मे न मनोरथ:' इत्यत्र 'मे' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

**7. मूलपाठ:–**

**राम:** – अत्र मोहमुपगतस्तत्रभवान्। हन्त! निवेदितमप्रभुत्वम्। मैथिलि!
मङ्गलार्थेऽनया दत्तान् वल्कलांस्तावदानय।
करोम्यन्यैर्नृपैर्धर्मं नैवाप्तं नोपपादितम्।।13।।

**सीता** – गृहणात्वार्यपुत्र:।

**राम:** – मैथिलि! किं व्यवसितम्?

**सीता** – ननु सहधर्मचारिणी खल्वहम्।

**राम:** – वने खलु वस्तव्यम्।

**सीता** – तत् खलु मे प्रासाद:।

**राम:** – श्वश्रूश्वशुरशुश्रूषापि च ते निर्वर्तयितव्या।

**सीता** – एनामुद्दिश्य देवतानां प्रणाम: क्रियते।

**राम:** – लक्ष्मण! वार्यतामियम्।

**लक्ष्मण:** – आर्य! नोत्सहे श्लाघनीये काले वारयितुमत्रभवतीम्।

**अन्वयः-**

तावत् मङ्गलार्थे अनया दत्तान् वल्कलान् आनय। अन्यैः नृपैः न एव आप्तम् न उपपादितम् धर्मम् करोमि।

**पदार्थाः-**

**मोहमुपगतस्तत्रभवान्-** (मोहम्+उपगतः+तत्रभवान्) महाराज मूर्च्छित हो गए, **निवेदितम्-**(नि+विद्+क्त) प्रकट कर दिया, **अप्रभुत्वम्-**(न प्रभुत्वम् (प्रभु+त्व)) असामर्थ्य, **वल्कलांस्तावदानय-**(वल्कलान्+ तावत्+आनय) (आ+नी+लोट्) तो वल्कल वस्त्र लाओ, **करोम्यन्यैर्नृपैर्धर्मं-** (करोमि+अन्यैः+ नृपैः+धर्मम्), **नैवाप्तं-**(न+एव+आप्तम्, आप्लृ+क्त), **नोपपादितम्-**(न+उपपादितम्) (उप+पद्+णिच्+क्त) न किया, **व्यवसितम्-**(वि+अव+षो+क्त) निश्चित किया, **सहधर्मचारिणी-**(सह धर्मं चरति या सा (बहु.)) सहचारिणी, **मयैकाकिना-** (मया+एकाकिना) मुझे अकेले ही, **गन्तव्यम्-**(गम्+तव्यत्), **वस्तव्यम्-** (वस्+तव्यत्), **श्वश्रूश्वशुरशुश्रूषापि-**सास ससुर की सेवा भी, **निर्वर्तयितव्या-** (निर्+वृत्+णिच्+तव्यत्) करनी चाहिए, **उद्दिश्य-**(उत्+दिश्+ल्यप्) उद्देश्य करके, **वार्यताम्-**(वृ+कर्मणि लोट्) रोको, **उत्सहे-** उत् + सह् + लट्।

**सरलानुवादः-**

राम - इसी विषय पर महाराज मूर्च्छित हो गए। खेद! (उन्होंने) अपना असामर्थ्य जताया। हे सीता! तो मङ्गलमय कार्य के लिए इसके द्वारा (अवदातिका के द्वारा) दिये गए वल्कल वस्त्र ले आओ। मुझे ऐसा धर्मकार्य करना है जैसा किसी अन्य राजा को न तो प्राप्त हुआ है और न ही किसी ने किया है।

सीता - लीजिए, आर्यपुत्र!

राम - सीता! (तुम्हारा) क्या विचार है?

सीता - मैं निश्चय से (आपकी) सहचारिणी हूँ।

राम - मुझे अकेले ही जाना होगा।

सीता - इसलिए आपके पीछे जाना है।

राम - निश्चय ही वन में रहना होगा।

सीता - वह मेरे लिए महल होगा।

राम - तुम्हें सास-ससुर की सेवा भी तो करनी चाहिए।

सीता - इसके लिए मैं देवताओं को प्रणाम करती हूँ (कि वे मेरी असमर्थता देखें।)

राम - लक्ष्मण! इन्हें रोको।

लक्ष्मण- ऐसे प्रशंसनीय समय में मैं आर्या (सीता) को रोकने का साहस नहीं कर सकता।

**विमर्श-**

राम माता कैकयी के निर्णय के प्रति अपनी सहमति दिखाते हैं। सीता भी उनके साथ जाने के लिए तत्पर हो जाती है। नाट्यांश में प्रस्तुत श्लोक अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) रामः सीतां कान् आनेतुं कथयति?

(ख) केन अप्रभुत्वं वेदितम्?

(ग) सहधर्मचारिणी का अस्ति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) लक्ष्मणः किमर्थं नोत्सहते?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'अत्रभवतीम्' इति पदं कस्यै प्रयुक्तम्?

(ख) 'अपरैः' इत्यस्य पर्यापदं किम्?

(ग) 'श्लाघनीये काले' इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

(घ) 'उत्सहे' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

**परामर्शः-**

1. शिक्षक आरोह-अवरोह पूर्वक व पात्रानुरूप आदर्शवाचन करके छात्रों को शुद्धोच्चारण हेतु प्रेरित कर सकता है।
2. राम के जीवन का परिचय देते हुए उनके जीवन के विभिन्न पक्षों पर परिचर्या आयोजित की जा सकती है।
3. कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँटकर नाट्याभिनय प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है।

**अनुभवविस्तारः-**

प्रकृत पाठ में राम की मातृभक्ति के माध्यम से जनमानस में माता के प्रति निष्ठा व आज्ञापालन के भाव जागृत करने का प्रयास किया गया है। आदर्शपुत्र के चरित्र को उपस्थापित करता हुआ राम का चरित्र जनसाधारण के लिए अनुकरणीय है। पारिवारिक मूल्यों को स्थापित करता हुआ यह पाठ छात्रों में हर स्थिति में ज्येष्ठों के प्रति सम्मान के भाव जागृत करता है।

# प्रजानुरञ्जको नृपः

(चतुर्थः पाठ)

**पाठ-परिचयः**

प्रस्तुत पाठ महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश के प्रथम सर्ग से लिया गया है। इन आरम्भिक श्लोकों में कालिदास महान् रघुकुल के राजाओं के गुणों के वर्णन के माध्यम से संसार को यह बताने की चेष्टा करते हैं कि शासकों में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? राजा का मुख्य धर्म प्रजा का अनुरञ्जन करना है। राजा को प्रजा के कल्याण के लिए ही प्रजा से कर लेकर कोष एकत्रित करना चाहिये। कर-ग्रहण करने का उद्देश्य आपत्ति आने पर प्रजा का कष्टनिवारण करना होता है। राजा को विद्वान्, सत्यवादी, इन्द्रियनिग्रही तथा प्रजापालक होना चाहिए। इस संसार में वे ही राजवंश चिरकाल तक राज्य करते हैं, जिनमें रघुवंशी राजाओं के समान गुण पाए जाते हैं। कालिदास इस के माध्यम से न केवल भारत के अपितु विश्व के शासकों के समक्ष ये अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं। प्रजापालन, प्रजानुरञ्जन ही शासक का प्रमुख धर्म है-यह ध्वनि इससे प्रकट होती है।

**मूलपाठः**

**त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।**
**यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्॥1॥**
**शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।**
**वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥2॥**
**रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्।**
**तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः॥3॥**

**अन्वयः**

(सोऽहं कालिदासः) तनुवाग्विभवः सन् अपि तद्गुणैः कर्णम् आगत्य चापलाय प्रचोदितः (भूत्वा) (आजन्मशुद्धानाम्, आफलोदयकर्मणाम्, आसमुद्रक्षितीशानाम्, आनाकरथवर्त्मनाम्, यथाविधिहुताग्नीनाम्, यथाकामार्चितार्थिनाम्, यथापराधदण डानाम्, यथाकालप्रबोधिनाम्) त्यागाय संभृतार्थानाम्, सत्याय मितभाषिणाम्, यशसे विजिगीषूणाम्, प्रजायै गृहमेधिनाम्, शैशवे अभ्यस्त-विद्यानाम्, यौवने विषयैषिणाम्, वार्द्धक्ये मुनिवृत्तीनाम्, अन्ते योगेन तनुत्यजाम्, रघूणाम्, अन्वयं वक्ष्ये।

**सरलानुवादः**

मैं कवि कालिदास (सूर्यवंशी राजाओं के महान् गुणों के वर्णन करने के लिए) अपर्याप्त वाणीवैभव वाला होकर भी उन राजाओं के गुणों के द्वारा अपने कान तक आकर रघुवंश रचना रूपी इस चपल कार्य के लिए प्रेरित होता हुआ उन रघुवंशी राजाओं के महान् वंश का वर्णन करूंगा। वे गुणी राजा दान के लिए ही धनसंग्रह करते थे (न कि निजी भोग-विलासों के लिए), (अधिक बोलने पर कहीं मुख से असत्य न निकल पड़े इसलिए) सत्य की रक्षा हेतु कम बोलते थे, केवल यश प्राप्त करने के लिए (न कि दूसरे राजाओं के राज्य छीनने के लिए) विजय की

इच्छा रखते थे तथा केवल संतान प्राप्ति हेतु (न कि कामवासना की पूर्ति हेतु) गृहस्थ धर्म अपनाते थे। (यथासमय अपने समस्त कर्तव्यों के अनुपालन करने से उनका जीवन पूर्णतः सफल था) वे बाल्यकाल में विविध विद्याओं का अभ्यास करते थे, युवावस्था में विषय भोगों की इच्छा रखते थे, उनकी वृद्धावस्था मुनियों जैसी (तपोमय) होती थी तथा (जीवन के) अन्त में वे योग-समाधि द्वारा अपना शरीर त्याग देते थे।

**पदार्थाः**

**त्यागाय संभृतार्थानाम्** – त्यागाय = दानाय संभृताः संचिताः अर्थाः धनानि यैः। दान करने के लिए ही धनसंचय करने वाले।

**सत्याय मितभाषिणाम्** – सत्याय सत्यरक्षणाय मितं भाषितुं शीलं येषां ते। सत्यरक्षा हेतु संतुलित मात्रा में बोलने वाले।

**यशसे विजिगीषूणाम्** – यशः प्राप्तये विजेतुम् इच्छुकानाम्। वि+जि+सन्+उ (कृत्प्रत्यय)। यशःप्राप्ति हेतु ही विजय की इच्छा रखने वाले।

**प्रजायै गृहमेधिनाम्** – प्रजायै सन्तति-प्राप्तये एव गृहमेधः गार्हस्थ्य-यज्ञाश्रयणं येषां ते। सन्तानप्राप्ति हेतु ही गृहस्थ बनने वाले।

**शैशवे अभ्यस्त-विद्यानाम्** – शैशवे (शिशु+भावे अण्) बाल्यकाले अभ्यस्ताः विद्याः यैः ते। बाल्यावस्था में ही विविध विद्याओं का अभ्यास कर लेने वाले।

**यौवने विषयैषिणाम्** – यौवने (युवन्+भावे अण्) तारुण्ये एव विषयान् इच्छन्ति ये ते। युवावस्था में ही विषयोपभोग की इच्छा करने वाले।

**वार्धके मुनिवृत्तीनाम्** – वार्धके (वृद्ध+भावे वुञ्+अक्) वृद्धावस्थायां मुनीनां वृत्तिः इव वृत्तिः येषां ते। वृद्धावस्था में मुनियों जैसी वृत्ति = दिनचर्या वाले।

**योगेनान्ते तनुत्यजाम्** – योगेन अन्ते तनुं त्यजन्ति ये ते (तनु+त्यज्+क्विप्) समाधि द्वारा अन्त में शरीर त्याग करने वाले।

**रघूणाम्** – रघोर्गोत्रापत्यं रघवः, तेषाम्। रघु+अण् – बहुत्वे लुक्। रघुवंशियों का।

**वक्ष्ये** – वर्णयिष्यामि। वच्+लृट्।

**तनुवाग्विभवः** – तनु कृशं स्वल्पम् अपर्याप्तं वाग्विभवं यस्य सः। अपर्याप्त वाणी वैभव वाला (कवि कालिदास)। विनयोक्तिरियम्।

**प्रचोदितः** – चुद् प्रेरणे+णिच्+क्तः। प्रेरितः।

**विमर्शः**

'रघुवंशम्' महाकाव्य के आरंभ में मंगलाचरण के पश्चात् कवि कालिदास पद्यों में अपनी विनम्रता का प्रदर्शन कर पाँचवें पद्य 'सोऽहम् आजन्मशुद्धानाम्' से लेकर 'रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये'.... इत्यादि नौंवे पद्य तक कुल पाँच श्लोकों में अनेक विशेषणों से रघुवंशी राजाओं का गुणवर्णन किया है। इस पाठ में आरंभ के दो पद्यों को प्रासंगिकता की दृष्टि से छोड़ते हुए तीसरे पद्य से प्रारंभ कर रघुवंशी राजाओं के गुण प्रस्तुत किए गए हैं। ये गुण आधुनिक शासकों/नेताओं में भी हों – ऐसी अपेक्षा की जाती है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) रघुवंशीयाः राजानः किमर्थं संभृतार्थाः?
(ख) रघुवंशीयाः राजानः किमर्थं मितभाषिणः?
(ग) रघुवंशीयाः राजानः कदा अभ्यस्तविद्याः?
(घ) कालिदासः केषाम् अन्वयं वक्ष्यति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) कीदृशः सन् अपि कविः रघूणाम् अन्वयं वक्ष्यति?
(ख) कैः चापलाय प्रचोदितः कविः?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

(क) 'रघूणाम्' इति पदस्य किं विशेषणम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ख) 'बाल्यकालाय' अत्र किम् पदम् प्रयुक्तम्?
(ग) 'वक्ष्ये' इति क्रियायाः कर्ता कः?
(घ) 'बहुभाषिणः' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।**
**आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव॥4॥**
**तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।**
**दिलीप इव राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव॥5॥**

**अन्वयः**

**छन्दसां प्रणवः इव, मनीषिणां माननीयः,**
**महीक्षिताम् आद्यः, वैवस्वतः नाम मनुः आसीत्॥4॥**
**शुद्धिमति तदन्वये, शुद्धिमत्तरः दिलीपः इति राजेन्दुः,**
**क्षीरनिधौ इन्दुः इव प्रसूतः॥5॥**

**सरलानुवादः**

वेदों में ओंकार के समान, विद्वानों में पूजनीय, राजाओं में सर्वप्रथम वैवस्वत नामक मनु हुए॥4॥
जिस प्रकार क्षीर सागर से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ उसी प्रकार उन्हीं (वैवस्वत मनु) के वंश में उनसे भी अधिक कान्तिवान, राजाओं में चन्द्रमा के समान तेजस्वी राजा दिलीप हुए॥5॥

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **वैवस्वतः** | - | विवस्वतः = सूर्यस्य अपत्यं पुमान् वैवस्वतः। सूर्यपुत्र। (विवस्वत्+अण्)। |
| **मनीषिणाम्** | - | मनसः ईषिणः = जयिनः मनीषिणः। मनीषा+ईष्+इनि। विद्वांसः। |

| | | |
|---|---|---|
| **माननीयः** | – | सम्मानार्हाः। मन्+णिच्+अनीयर्। आदरणीयः। |
| **महीक्षिताम्** | – | महीं क्षयन्ते = ईशते/शासति इति महीक्षितः, तेषाम्। मही+क्षि+तुक्+क्विप्। राजानः। |
| **आद्यः** | – | आदौ भवः। आदि+यत्। प्रथमः। |
| **प्रणवः** | – | ओंकारः। |
| **शुद्धिमति** | – | शुद्धियुक्ते – शुद्धे। शुद्धि+मतुप्। निर्मले। |
| **तदन्वये** | – | तस्य वैवस्वतमनोः अन्वये = वंशे। उनके वंश में। |
| **प्रसूतः** | – | प्र+सू+क्तः। उत्पन्नः। |
| **शुद्धिमत्तरः** | – | शुद्धि+मतुप्+तरप्। निर्मलतरः। वैवस्वतमनोः अपि निर्मलतरः। |
| **राजेन्दुः** | – | राज्ञाम् इन्दुः = श्रेष्ठः। राजाओं में श्रेष्ठः। |
| **क्षीरनिधौ** | – | क्षीरस्य जलस्य निधिः महाराशिः तत्र। समुद्रे। |
| **दिलीप इति** | – | दिलीपः इति नाम। दिलीप नामक राजा। |

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) महीक्षिताम् आद्यः कः?
(ख) वैवस्वतमनुः केषां माननीयः आसीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) दिलीपः कस्य अन्वये प्रसूतः?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'तदन्वये' इत्यत्र तत्पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(ख) 'आसीत्' इति क्रियया कस्य कर्तृपदस्य अन्वयः?
(ग) ओंकारस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः?
(घ) 'अन्तिमः' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।**
**आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः॥6॥**
**प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।**
**सहस्त्रगुणमुत्स्त्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः॥7॥**
**ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।**
**गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव॥8॥**
**प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।**
**स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥9॥**
**द्वेष्योऽपि सम्मतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्।**
**त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता॥10॥**
**स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।**
**अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव॥11॥**

**अन्वयः-**

**(सः दिलीपः) आकारसदृशप्रज्ञः, प्रज्ञया सदृशागमः,**
**आगमैः सदृशारम्भः, आरम्भसदृशोदयः (च आसीत्)।।6।।**
**सः प्रजानां भूत्यर्थम् एव ताभ्यः बलिम् अग्रहीत्,**
**हि, रविः सहस्रगुणम् उत्स्रष्टुं रसम् आदत्ते।।7।।**
**ज्ञाने (सत्यपि) मौनम्, शक्तौ (सत्यामपि) क्षमा, त्यागे (सत्यपि) श्लाघाविपर्ययः,**
**(एवम्प्रकारेण) तस्य गुणाः गुणानुबन्धित्वात् सप्रसवाः इव (आसन्)।।8।।**
**प्रजानां विनयाधानात्, रक्षणात्, भरणात् अपि,**
**सः पिता (आसीत्) तासां पितरः केवलं जन्महेतवः (आसन्)।।9।।**
**तस्य (कृते) यथा आर्तस्य औषधं (तथा) शिष्टः द्वेष्यः (सन्) अपि सम्मतः (आसीत्),**
**(एवमेव, तस्य कृते) उरगक्षता अङ्गुली इव दुष्टः प्रियः (सन् अपि) त्याज्यः (आसीत्)।।10।।**
**सः वेलावप्रवलयाम्, परिखीकृतसागराम्,**
**अनन्यशासनाम् उर्वीम् एकपुरीम् इव शशास।।11।।**

**सरलानुवादः-**

जैसा उनका (विशाल) आकार (= शरीर था) वैसी ही बुद्धि (कुशाग्र थी), जैसी (उनकी) कुशाग्र बुद्धि (थी) वैसा ही उन्हें शास्त्रों का गंभीर ज्ञान था, जैसा शास्त्रों का गंभीर ज्ञान (था) वैसा ही (उनका) महान् उद्यम या उद्योगशीलता (थी), (और) जैसा (उनका) महान् उद्यम (था) वैसी ही (उन्हें) सफलता (प्राप्त होती थी)।।6।।

जिस प्रकार सूर्य हजार गुना बढ़ाकर (वापस देने के लिए ही पृथ्वी से) रस (जल खींचता है), उसी प्रकार वे राजा दिलीप प्रजाओं के कल्याण के लिए ही उनसे कर लेते थे (न कि अपने निजी भोग-विलास की पूर्ति के लिए)।।7।।

ज्ञान होने पर भी (दूसरों की बात जानकर भी) मौन रहना, सामर्थ्य होने पर भी (शत्रु से बदला लेने में समर्थ होने पर भी) क्षमाशील बने रहना, दान देकर भी आत्मप्रशंसा से दूर रहना - (इस प्रकार) उस राजा दिलीप के ज्ञान आदि गुण (अपने विरोधी) मौन आदि गुणों के साथ मेल से रहने के कारण (एक दूसरे के विरोधी नहीं, प्रत्युत) सगे भाई जैसे (जान पड़ते) थे।।8।।

प्रजा को (सन्मार्ग प्रवर्तन रूप) विनय (शिक्षा) प्रदान करने के कारण, (विपत्तियों से उनकी) रक्षा करने के कारण एवं (अन्न, जल आदि से उनका) भरण-पोषण करने के कारण राजा दिलीप ही वास्तव में उनके पिता थे, उनके (प्रजाओं के) पिता तो केवल उनके जन्म ही देने वाले नाम के पिता थे।।9।।

जैसे रोगी को कड़वी औषधि प्रिय होती है, उसी प्रकार, दिलीप के लिए सज्जन व्यक्ति शत्रु होते हुए भी स्वीकार्य/सम्माननीय थे। (इसी प्रकार) जैसे साँप से डँसी अंगुली त्याग (काटकर अलग करने) योग्य होती है वैसे दिलीप के लिए दुष्ट व्यक्ति प्रिय होते हुए भी त्याज्य थे।।10।।

(पृथ्वी के) चारों ओर का समुद्र तट ही जिसकी रक्षा की गोल दीवार है, स्वयं समुद्र ही जिसकी चारों ओर की गहरी खाई है और जिस पर (दिलीप को छोड़) किसी अन्य राजा का शासन नहीं है ऐसी (विस्तृत) पृथ्वी का दिलीप ने एक नगरी के समान (सहायतापूर्वक) शासन किया।।11।।

**पदार्थाः-**

**आकारसदृशप्रज्ञः** - आकारेण सदृशी प्रजा यस्य सः। शरीर के समान विशाल बुद्धि वाले।
**आरम्भसदृशोदयः** - आरम्भैः सदृशः उदयः यस्य सः। उद्यमों के समान सफलता वाले।
**भूत्यर्थम्** - भूतिः अर्थः प्रयोजनं यत्र। प्रजाओं की उन्नति के लिए।

| | | |
|---|---|---|
| **अग्रहीत्** | – | ग्रह्+लुङ्। ग्रहण किया। |
| **सहस्रगुणम्** | – | सहस्रं गुणाः यस्य। हजार गुना अधिक। |
| **आदत्ते** | – | आ+दा+तुमुन्। लेता है। |
| **श्लाघाविपर्ययः** | – | श्लाघायाः विपर्ययः। आत्मप्रशंसा से दूर रहना। |
| **गुणानुबन्धित्वात्** | – | गुणैः सह अनुबन्धित्वात्। गुणों के साथ मेल के कारण। |
| **सप्रसवाः** | – | समानः प्रसवः जन्म येषाम्। सगे भाई। |
| **जन्महेतवः** | – | जन्मनां हेतवः। जन्म के ही कारणभूत (न कि भरण-पोषण के) |
| **द्वेष्यः** | – | शत्रुः, अप्रियः। द्विष्+यत्। |
| **उरगक्षता** | – | उरगेण = सर्पेण क्षता। साँप के द्वारा डँसकर घायल की गई। |
| **वेलावप्रवलयाम्** | – | वेला एव वप्रवलयः यस्याः। समुद्र का किनारा ही जिसका प्रमुख दीवार का परकोटा है, वैसी। |
| **परिखीकृतसागराम्** | – | परितः खाताः परिखाः, परिखाः कृताः सागराः यस्याः ताम्। समुद्र की चाहरदीवारी जिसकी उसको। |
| **अनन्यशासनाम्** | – | न अस्ति अन्यस्य शासनं यस्यां सा ताम्। अन्य राजा के द्वारा शासित नहीं हुई। |
| **शशास** | – | शास्+परोक्षभूते लिट्। शासन किया। |

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) दिलीपस्य प्रज्ञा केन सदृशी आसीत्?
(ख) सः किमर्थं प्रजाभ्यो बलिम् अग्रहीत्?
(ग) तस्य गुणाः के इव आसन्?
(घ) स कासां पिता आसीत्?
(ङ) तस्य कृते शिष्टः द्वेष्यः अपि कीदृशः आसीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) रविः रसं किमर्थम् आदत्ते?
(ख) तस्य कृते दुष्टः प्रियः अपि कीदृशः आसीत्?
(ग) सः कीदृशीम् ऊर्वी शशास?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

(क) 'ताभ्यः' इत्यत्र तत्-पदं कस्य कृते प्रयुक्तम्?
(ख) 'अग्रहीत्' इति क्रियायाः कर्तृपदं लिखत।
(ग) बलार्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(घ) शिष्ट-पदस्य विलोमपदं चित्वा लिखत।
(ङ) 'ऊर्वी'-शब्दस्य विशेषणं चित्वा लिखत।

# दौवारिकस्य निष्ठा

**(पंचमः पाठ)**

**पाठपरिचयः–**

यह पाठ संस्कृत के प्रथम उपन्यास 'शिवराज विजय' से लिया गया है। इसके लेखक पं. अंबिकादत्त व्यास हैं। शिवाजी एवं तत्कालीन मुगल सम्राट् औरंगजेब के संघर्ष पर आधारित यह उपन्यास शिवाजी के अनुपम युद्ध–कौशल, दूरदर्शिता, साहस एवं वीरता के माध्यम से भारतीय नवयुवकों को प्रेरित करने में पर्याप्त रूप से समर्थ है। प्रस्तुत पाठ में प्रताप दुर्ग के द्वारपाल की ईमानदारी, स्वामीभक्ति, सजगता व निर्भीकता का वर्णन करते हुए अत्यंत नाटकीय ढंग से उसकी परीक्षा प्रदर्शित की गई है। इस पाठ के रोचक संवाद पाठक की उत्सुकता को सतत् अक्षुण्ण बनाए रखते हैं।

**पाठोद्देश्यानि–**

- छात्रों में ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा का भाव जागृत करना।
- गद्य शिक्षण के माध्यम से छात्रों की भाषा को समृद्ध करना।
- संस्कृत साहित्य में उपन्यास विधा से छात्रों को अवगत कराना।
- छात्रों में कथालेखन के प्रति रुचि जागृत करना।

**मूलपाठः–**

संवृत्ते किञ्चिदन्धकारे भुशुण्डीं स्कन्धे निधाय निपुणं निरीक्षमाणः, आगत–प्रत्यागतं च विदधानः, प्रतापदुर्गदौवारिकः कस्यापि पादक्षेपध्वनिमिवाश्रौषीत्। ततः स्थिरीभूय पुरतः पश्यन् सत्यपि दीपप्रकाशे कमप्यनवलोकयन् गम्भीरस्वरेणैवम् अवादीत्– 'कः कोऽत्र भोः? कः कोऽत्र भोः? इति।

अथ क्षणानन्तरं पुनः स एव पादध्वनिरश्रावीति भूयः साक्षेपमवोचत– 'क एष मामनुत्तरयन् मुमूर्षुः समायाति बधिरः?

ततो ''दौवारिक! शान्तो भव किमिति व्यर्थं मुमूर्षुरिति बधिर इति च वदसि? इति वक्तारमपश्यतैवाऽऽकर्णि मन्द्रस्वरमेदुरा वाणी। अथ "तत् किं नाज्ञायि अद्यापि भवता प्रभुवर्याणामादेशो यद् दौवारिकेण प्रहरिणा वा त्रिःपृष्टोऽपि प्रत्युत्तरमददद् हन्तव्यः इति" इत्येवं भाषमाणेन द्वाःस्थेन क्षम्यतामेष आगच्छामि, आगत्य च निखिलं निवेदयामि" इति कथयन् द्वादशवर्षेण केनापि भिक्षावटुनानुगम्यमानः कोऽपि काषायवासाः धृततुम्बीपात्रः भव्यमूर्तिः संन्यासी दृष्टः। ततस्तयोरेवम् अभूदालापः–

**पदार्थाः–**

**संवृत्ते**–(सम्+वृञ्+क्त) होने पर, **निधाय**–रखकर, **आगत–प्रत्यागतम्–** आना–जाना, **अश्रौषीत्–** (श्रु+लुङ्) सुनी, **स्थिरीभूय**–स्थिर होकर/रुककर, **कमप्यनवलोकयन्**–(कम्+अपि+अन्+ अवलोकयन्) किसी को भी न देखता हुआ, **अवादीत्**–(वद्+लुङ्) बोला, **पादध्वनिरश्रावीति**–(पादध्वनिः+अश्रावि+ इति), **अश्रावि**–(श्रु+लुङ्, कर्मणि) सुनाई पड़ी, **मुमूर्षुः**–मरने का इच्छुक, **वक्तारमपश्यतैवाऽऽकर्णि–**

(वक्तारम्+अपश्यता+एव+आकर्णि) बोलने वाले को देखे बिना ही सुनायी पड़ी, **मन्द्रस्वरमेदुरा**-गंभीर स्वर से परिपूर्ण, **नाज्ञायि**-(न+अज्ञायि) नहीं जाना गया, **त्रि:पृष्ट:**-तीन बार पूछा गया, **भिक्षावटुनानुगम्यमान:**- (भिक्षवटुना+अनुगम्यमान:, अनु+गम्+शानच्, कर्मणि) ब्रह्मचारी के द्वारा अनुसरण किया जाता हुआ, **धृततुम्बीपात्र:**-(धृतं तुम्बीपात्रं येन स:) तुम्बीपात्र लिए हुए, **ततस्तयोरेवम्** (तत:+तयो:+एवम्) तब उन दोनों में इस प्रकार।

**सरलानुवाद:-**

कुछ अंधकार होने पर बंदूक कंधे पर रखकर ध्यानपूर्वक निरीक्षण करते हुए व इधर से उधर आते जाते हुए प्रताप दुर्ग के द्वारपाल ने किसी के पैरों के रखने जैसी आवाज को सुना। तब चौकन्ना होकर सामने की ओर देखते हुए दीपक का प्रकाश होने पर भी किसी को न देखते हुए (द्वारपाल) गंभीर स्वर में इस प्रकार बोला - अरे! कौन है यहाँ? अरे! यहाँ कौन है?
तब कुछ क्षणों के पश्चात् पुन: वही पैरों की आवाज जब सुनायी पड़ी तो फिर से डाँटते हुए बोला - अरे! यह कौन मरने का इच्छुक, बहरा व्यक्ति है, जो मुझे उत्तर दिए बिना ही चला आ रहा है?
तब 'द्वारपाल! शांत हो जाओ, क्यों बेकार ही मरने के इच्छुक व बहरा कह रहे हो?' बोलने वाले को न देखते हुए द्वारपाल के द्वारा गंभीर स्वर से परिपूर्ण यह वाणी सुनी गयी। तब ''तो क्या अब भी आपके द्वारा नहीं जाना गया महाराज का आदेश कि द्वारपाल या पहरेदार के द्वारा तीन बार पूछे जाने पर भी उत्तर न देने वाला व्यक्ति मार दिया जाए'' द्वार पर स्थित उस द्वारपाल के द्वारा ऐसा बोलने पर - 'क्षमा कीजिए, मैं आता हूँ और आकर सब कुछ बताता हूँ' यह कहता हुआ, बारहवर्षीय किसी भिक्षुक ब्रह्मचारी के द्वारा अनुसरण किया जाता हुआ गेरुए वस्त्रधारी, तुम्बी हाथ में लिए हुए व आकर्षक छवि वाला कोई संन्यासी देखा गया। तब उन दोनों में यह वार्तालाप हुआ-

**विमर्श:-**

- यहाँ द्वारपाल की सजगता, निर्भीकता व स्पष्टता का सुंदर चित्रण हुआ है।

**अभ्यासप्रश्ना:-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) क: पादक्षेपध्वनिं श्रृणोति?
(ख) दौवारिक: भुशुण्डीं कुत्र निदधाति?
(ग) प्रत्युत्तरमददत् जन: केन हन्तव्य:?
(घ) दौवारिक: कीदृशीं वाणीं वदति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) कीदृश: संन्यासी दौवारिकेण दृष्ट:?
(ख) दौवारिक: किम् अवादीत्?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत।**

(क) 'पश्चात्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तमत्र?
(ख) 'निरीक्षमाण:' इति विशेषणपदस्य किं विशेष्यमत्र?
(ग) 'प्रकाशे' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(घ) 'भवता' इति सर्वनामपदमत्र कस्य कृते प्रयुक्तम्?

**2. मूलपाठः-**

**संन्यासी** – कथमस्मान् संन्यासिनोऽपि कठोरभाषणैस्तिरस्करोषि?

**दौवारिकः** – भगवन्! संन्यासी तुरीयाश्रमसेवीति प्रणम्यते, परन्तु प्रभूणामाज्ञामुल्लंघ्य निजपरिचयमददेवाऽऽयातीत्याक्रुश्यते।

**संन्यासी** – सत्यं क्षान्तोऽयमपराधः, परं संन्यासिनो ब्रह्मचारिणः पण्डिताः, स्त्रियो बालाश्च न किमपि प्रष्टव्याः। आत्मानम् अपरिचाययन्तोऽपि प्रवेष्टव्याः।

**दौवारिकः** – संन्यासिन्! संन्यासिन्! बहूक्तम्, विरम, न वयं दौवारिका ब्रह्मणोऽप्याज्ञां प्रतीक्षामहे, केवलं महाराजशिववीरस्याज्ञां वयं शिरसा वहामः। प्राह्णे महाराजस्य सन्ध्योपासनसमये भवादृशानां प्रवेशसमयो भवति, न तु रात्रौ।

**संन्यासी** – तत् किं कोऽपि न प्रविशति रात्रौ?

**दौवारिकः** – (साक्षेपम्) कोऽपि कथं न प्रविशति? परिचिता वा, प्राप्तपरिचयपत्रा वा, आहूता वा प्रविशन्ति, न तु ये केऽपि समागता भवादृशाः।।

**पदार्थाः-**

**तुरीयाश्रमसेवी** – चतुर्थ आश्रम (संन्यास) का पालन करने वाला, **तिरस्करोषि**-(तिरस् + करोषि) अपमानित कर रहे हो, **आक्रुश्यते**-क्रोध किया जा रहा है, **प्रष्टव्याः**-(प्रच्छ्+तव्यत्) पूछे जाने चाहिए, **अपरिचाययन्तः**-परिचय न देते हुए भी, **शिरसा वहामः**-सिर पर धारण करते हैं, **ब्रह्मणोऽप्याज्ञाम्**-(ब्रह्मणः + अपि + आज्ञाम्), **प्राप्तपरिचयपत्राः**-(प्राप्तं परिचयपत्रं यैः ते) परिचयपत्र प्राप्त लोग।

**सरलानुवादः-**

**संन्यासी** – क्यों हम संन्यासियों का भी कठोर शब्दों से अपमान कर रहे हो?

**द्वारपाल** – भगवन्! संन्यासी चतुर्थ आश्रम (संन्यास) का पालन करते हैं, अतः प्रणाम करता हूँ, परंतु महाराज की आज्ञा का उल्लंघन करके अपना परिचय दिए बिना ही आ रहे हैं, इसलिए क्रोध किया जा रहा है।

**संन्यासी** – सत्य है, तुम्हारा अपराध क्षमा किया गया है लेकिन संन्यासी, ब्रह्मचारी, विद्वान्, स्त्रियों व बच्चों से कुछ भी पूछा नहीं जाना चाहिए। अपना परिचय न देने पर भी इन्हें प्रवेश कराया जाना चाहिए।

**द्वारपाल** – संन्यासिन्! संन्यासिन्! बहुत बोल लिया, अब रुक जाओ। हम द्वारपाल ब्रह्मा जी की आज्ञा की भी प्रतीक्षा नहीं करते, केवल महाराज शिवाजी की आज्ञा को ही हम सिर पर धारण करते हैं। दिन में महाराज की सन्ध्योपासना के समय आप जैसों का प्रवेश होता है, न कि रात में।

**संन्यासी** – तो क्या रात में कोई भी प्रवेश नहीं करता?

**द्वारपाल** – (डाँटते हुए) कोई भी प्रवेश नहीं करता? परिचित, परिचयपत्रसहित अथवा बुलाए गए लोग ही प्रवेश करते हैं, न कि आप जैसे आए हुए कोई भी।

**विमर्शः**

- संन्यासी विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से द्वारपाल के धैर्य व दृढ़ता का परिचय लेते हैं।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

(क) कः संन्यासिनः अपि तिरस्करोति?
(ख) दौवारिकः कस्य आज्ञां शिरसा वहति?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) संन्यासिनः अनुसारं के किमपि न प्रष्टव्याः?
(ख) रात्रौ राजभवने के प्रवेष्टुं शक्नुवन्ति?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'अस्मान्' इति पदं कस्य पदस्य विशेषणम् अस्ति?
(ख) 'दिवसे' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?
(ग) 'वयम्' इतिसर्वनामपदं केभ्यः प्रयुक्तम्?
(घ) 'विद्वांसः' इत्यस्य किं पर्यायमत्र प्रयुक्तम्?

**3. मूलपाठः-**

**संन्यासी** - दौवारिक! इत आयाहि किमपि कर्णे कथयिष्यामि।

**दौवारिकः** - (तथा कृत्वा) कथ्यताम्।

**संन्यासी** - यदि त्वं मां प्रविशन्तं न प्रतिरुन्धेः तदधुनैव परिष्कृतपारदभस्म तुभ्यं दद्याम् यथा त्वं गुञ्जामात्रेणापि द्वापञ्चाशत्संख्याकतुलापरिमितं ताम्रं सुवर्णं विधातुं शक्नुयाः।

**दौवारिकः** - हंहो, कपटसंन्यासिन्! कथं विश्वासघातं स्वामिवञ्चनं च शिक्षयसि? ते केचनान्ये भवन्ति नीचा ये उत्कोचलोभेन स्वामिनं वञ्चयित्वा आत्मानम् अन्धतमसि पातयन्ति, न वयं शिवगणास्तादृशाः। (संन्यासिनो हस्तं धृत्वा) इतस्तु सत्यं कथय कस्त्वम्? कुत आयातः? केन वा प्रेषितः? अहं तु त्वां कस्यापि देशद्रोहिणो गूढचरं मन्ये। (हस्तमाकृष्य) तदागच्छ दुर्गाध्यक्षसमीपे, स एवाभिज्ञाय त्वया यथोचितं व्यवहरिष्यति।

**पदार्थाः-**

**आयाहि** - (आ + या + लोट्, म.पु.) आओ, **प्रविशन्तम्** - प्रवेश करते हुए को (प्र +विश् + शतृ), **परिष्कृतपारदभस्म** - (परिष्कृतं पारदभस्म कर्मधारय) शुद्ध की गई पारे की भस्म, **गुञ्जामात्रेण ाापि**- स्वल्प मात्रा से भी, **तुला** - सोना चांदी तोलने का 100 पल का बट्टा, **स्वामिवञ्चनम्** - स्वामी को धोखा देना, **उत्कोचलोभेन** - रिश्वत के लालच से, **गूढचरम्** - गुप्तचर, **एवाभिज्ञाय** - (एव + अभिज्ञाय) पता लगाकर/पहचानकर।

**सरलानुवादः-**

**संन्यासी** - द्वारपाल! इधर आओ, तुम्हारे कान में कुछ कहूँगा।

**द्वारपाल** - (वैसा करके) कहिए।

**संन्यासी** - यदि तुम मुझे प्रवेश करते हुए न रोको तो अभी शुद्ध किए हुए पारे की भस्म (राख) तुम्हें दे दूँ, जिससे तुम उसकी (भस्म की) गुंजाफल (एक जंगली फल) की मात्रा के बराबर से भी बावन तुला तक के तांबे को सोना बना सको।

**द्वारपाल** - अरे कपटी संन्यासी! कैसे मुझे विश्वास तोड़ना व स्वामी को धोखा देना सिखा रहे हो? वे तो अन्य ही नीच पुरुष होते हैं, जो रिश्वत के लालच से अपने स्वामी को धोखा देकर स्वयं को घोर अंधकार में गिराते हैं, हम शिवाजी के सैनिक वैसे नहीं हैं। (संन्यासी का हाथ पकड़कर) यहाँ तो सत्य कहो, तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? अथवा किसके द्वारा भेजे गए हो?
मुझे तो तुम किसी देशद्रोही के गुप्तचर प्रतीत होते हो। (हाथ खींचकर) तो आओ किले के अध्यक्ष के पास, वही पहचानकर तुम्हारे साथ उचित व्यवहार करेगा।

**विमर्शः-**

- संन्यासी द्वारपाल को रिश्वत देने का प्रयास करता है, लेकिन द्वारपाल उसकी भर्त्सना करते हुए उसकी सत्यता को जानने का प्रयत्न करता है।
- 'गुंजा' एक छोटा फल होता है, जो ग्रेन के बराबर वज़न का होता है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) संन्यासी उत्कोचरूपेण किं दातुमिच्छति?
   (ख) 'त्वं मां विश्वासघातं शिक्षयसि' इति दौवारिकः कं कथयति?
   (ग) दौवारिकः संन्यासिनं किं मनुते?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) संन्यासी दौवारिकस्य कर्णे किं कथयति?
   (ख) के नीचाः भवन्ति?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'शक्नुयाः' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
   (ख) 'यदि त्वं मां प्रविशन्तं न प्रतिरुन्धेः' अत्र विशेषणपदं किम्?
   (ग) 'सत्यं कथय कस्त्वम्' अत्र 'त्वम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (घ) 'देशप्रेमिणः' इति पदस्य किं विलोपदमत्र प्रयुक्तम्?
4. **मूलपाठः-**
   ततः सन्यासी तु 'त्यज! नाहं पुनरायास्यामि, नाहं पुनरेवं कथयिष्यामि, महाशयोऽसि दयस्व इति बहुधा अकथयत्, दौवारिकस्तु तमाकृष्य नयन्नेव प्रचलितः।
   अथ दीपस्य समीपमागत्य संन्यासिनोक्तम् ''दौवारिक! न मां प्रत्यभिजानासि।'' ततः पुनर्निपुणं निरीक्षमाणो दौवारिकस्तं पर्यचिनोत्-आः! कथं श्रीमान् गौरसिंहः? आर्य! क्षम्यतामनुचितव्यवहार एतस्य ग्राम्यवराकस्य। तदवधार्य तस्य पृष्ठे हस्तं विन्यस्यन् संन्यासिरूपो गौरसिंहः समवोचत्-
   दौवारिक! मया दृढं परीक्षितोऽसि, यथायोग्य एवं पदे नियुक्तोऽसि, त्वादृक्षा एव वस्तुतः पुरस्कार-भाजनानि भवन्ति, लोकद्वयं च विजयन्ते।

**पदार्थाः-**

**पुनरायास्यामि** – (पुनः + आयास्यामि – आ + या + लृट्) फिर से आऊँगा, **नयन्नेव** – (नयन् + एव, नी + शतृ) ले जाते हुए, **प्रत्यभिजानासि** – प्रति + अभि + ज्ञा + लट्) पहचानते हो, **पर्यचिनोत्** – परि + चि + लङ्) पहचान लिया, **ग्राम्यवराकस्य** – बेचारे गँवार का, विन्यसन् (वि + नि + अस् + शतृ) रखते हुए, **त्वादृक्षा** – तुम्हारे जैसे।

**सरलानुवादः–**

तब संन्यासी तो, छोड़ दो, मैं पुनः नहीं आऊँगा, फिर ऐसा नहीं कहूंगा, तुम महापुरुष हो, दया करो, ऐसा बार–बार कहने लगा। द्वारपाल तो उसको खींचकर ले जाते हुए चलता रहा।

इसके बाद दीपक के समीप आकर संन्यासी के द्वारा बोला गया – 'द्वारपाल! मुझे नहीं पहचानते हो'। तब पुनः ध्यानपूर्वक देखते हुए द्वारपाल ने उसको पहचान लिया – अरे! श्रीमान् गौर सिंह? आर्य! इस बेचारे गँवार के अनुचित व्यवहार को क्षमा करें। यह पुष्टी होने पर उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए संन्यासी वेशधारी गौरसिंह बोला –

द्वारपाल! मेरे द्वारा तुम्हारी दृढ़तापूर्वक परीक्षा ली गयी। तुम्हें इस पद पर उचित ही नियुक्त किया गया है। तुम्हारे जैसे ही वास्तव में पुरस्कार के योग्य हैं व दोनों लोकों को जीत लेते हैं।

**विमर्शः–**

- संन्यासी वेशधारी गौरसिंह द्वारा द्वारपाल की दृढ़ता, सत्यता व कर्तव्यपरायणता की कठिन परीक्षा ली गयी, जिसमें वह सफल रहा।

**अभ्यासप्रश्नाः–**

1. **एकपदेन उत्तरत–**

(क) कः कथयति यत् पुनः न आयास्यामि?
(ख) कस्य अनुचितव्यवहारः गौरसिंहेन क्षम्यः?
(ग) कः महाशयः कथितः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) दीपस्य समीपमागत्य संन्यासिना किमुक्तम्?
(ख) संन्यासिरूपः गौरसिंहः किम् अवोचत्?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–**

(क) 'अनेकवारम्' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
(ख) 'अकथयत्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
(ग) 'श्रीमान्' इति विशेषणस्य किं विशेष्यमत्र?

**परमर्शः–**

- पाठ आरंभ करने से पूर्व शिवाजी व औरंगजेब के मध्य हुए संघर्ष का सामान्य परिचय देकर छात्रों की जिज्ञासा बढ़ाई जा सकती है।
- किसी कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की कथा लिखने हेतु छात्रों को प्रेरित किया जा सकता है।
- यदि आप द्वारपाल के स्थान पर होते तो क्या करते व क्यों? इत्यादि प्रश्नों के माध्यम से छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन को विकसित किया जा सकता है।

**अनुभवविस्तार:-**

- सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, ईमानदारी व जागरुकता आदि सद्‌गुण किसी भी मनुष्य को इस जगत् में अत्यधिक सम्मान व प्रतिष्ठा का पात्र बना सकते हैं। संन्यासी वेशधारी गौरसिंह द्वारा द्वारपाल की परीक्षा में इन्हीं सद्‌गुणों के बल पर द्वारपाल का व्यक्तित्व श्रेष्ठता को प्राप्त करता है।
- कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता अपितु उस कार्य को करने वाले का चिंतन व कार्य भावना ही उसके महत्त्व का निर्धारण करते हैं। द्वारपाल के कार्य के आलोक में छात्रों से चर्चा की जा सकती है।

# सूक्ति–सौरभम्

**( षष्ठः पाठ )**

**पाठ–परिचयः**

किसी भी भाषा की सूक्तियाँ उस समाज के मनीषियों द्वारा शताब्दियों तक अनुभूत उनके दैनिक जीवन के अनुभवों को प्रकट करती हैं। ये सूक्तियाँ कलेवर में स्वल्प होते हुए भी अपने में विशाल भाव–गाम्भीर्य को समेटे हुए होती हैं। वस्तुतः इन्हीं सुभाषितों तथा सूक्तियों से ही उस भाषा की समृद्धि द्योतित होती है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक नाना कवियों ने इनमें अपने दीर्घकालीन अनुभवों को शब्दबद्ध किया है। चाणक्य, भर्तृहरि, विष्णुशर्मा के सुभाषित जहाँ चिरकाल से प्रसिद्ध रहे हैं, वहीं आधुनिक लेखक भी इससे पीछे नहीं रहे। इस पाठ में प्राचीन एवम् अर्वाचीन दोनों कवियों की चुनी हुई कुछ सूक्तियों को संकलित किया गया है। छात्रों को ये सूक्तियाँ कण्ठस्थ करनी चाहिये। वाद–विवाद, भाषण–प्रतियोगिता तथा दैनिक व्यवहार के लिए ये नितान्त उपयोगी तथा प्रभावोत्पादक होती हैं। इस पाठ के विभिन्न पद्यों में उपजाति, वंशस्थ, वसन्ततिलका एवं अनुष्टुप् छन्दों का प्रयोग किया गया है।

**मूलपाठः**

**स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा**
**विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।**
**विशेषतः सर्वविदां समाजे**
**विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।।1।।**

**अन्वयः**

स्वायत्तम् एकान्तगुणम् अज्ञतायाः छादनं विशेषतः सर्वविदां समाजे अपण्डितानां विभूषणं मौनं विधात्रा विनिर्मितम्।

**पदार्थाः–**

**स्वायत्तम्** – स्वस्मिन् आयत्तम् अधीनम्। स्वाधीन।
**एकान्तगुणम्** – एकान्तगुणम् – एकान्ताः विशिष्टाः गुणाः यस्मिन्। विशिष्ट गुणों वाला।
**बुधाः** – पण्डिताः।
**विधात्रा** – वि + धा + तृच्। जगत् का निर्माण करनेवाला ईश्वर।
**विनिर्मितम्** – वि + निर् + मा + क्त। रचितम्।
**छादनम्** – छादयतीति छादनम्। छद् + णिच् + ल्युट्। आवरणम्।
**अज्ञतायाः** – न जानातीति अज्ञः, तस्य भावः अज्ञता, तस्याः। मूर्खतायाः।
**सर्वविदाम्** – सर्व विदन्ति इति सर्वविदः तेषाम्। सब कुछ जानने वाले विद्वान्।
**मौनम्** – मुनेर्भावः कर्म वा मौनम्। अभाषणम्। चुप्पी।

**सरलानुवादः**

ईश्वर ने मानवों के लिए अत्यन्त विशिष्ट गुणों से भरा मौन अर्थात् चुप्पी की सृष्टि की। यह गुण हर व्यक्ति के लिए अपने अधीन होता है। यह अज्ञान का आवरण है। विशेष कर सब कुछ जानने वाले विद्वानों की सभा में यह मूर्खों के लिए आभूषण के समान है अर्थात् अपमान से बचाकर रखने वाला।

**विमर्शः**

भर्तृहरि द्वारा रचित नीतिशतक से उद्धृत इस पद्य में मौनधारण अथवा मितभाषिता के लाभों का वर्णन किया गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) मौनं केन विनिर्मितम्?
(ख) अपण्डितानां कृते मौनं किम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) कीदृशगुणं मौनं विधात्रा विनिर्मितम्?
(ख) मौनम् अज्ञतायाः किम् अस्ति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) विनिर्मितम् इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
(ख) मौनम् इत्यस्य विशेषणं किम्?
(ग) मूर्खाणाम् इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(घ) विज्ञतायाः इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहु-**
**र्विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्।**
**अपेक्षया रूपवतां हि विद्या**
**मानं लभन्तेऽतितरां जगत्याम्।।2।।**

**अन्वयः**

**बुधाः तत् रूपं प्रसिद्धं न आहुः,वस्तुतः रूपं विद्यावताम् एव।**
**हि, ( विद्यावन्तः ) रूपवताम् अपेक्षया,जगत्याम् अतितरां विद्यमानं लभन्ते।**

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **प्रसिद्धम्** | – | प्र + सिध् + क्त। प्रख्यात। |
| **आहुः** | – | ब्रू (आह) + लट्। कथयन्ति। कहते हैं। |
| **विद्यावताम्** | – | विद्या अस्ति एषाम्। विद्या + मतुप्। विद्वान्। |
| **अतितराम्** | – | अत्यन्तम्। |
| **लभन्ते** | – | लभ् + लट्। प्राप्त करते हैं। |
| **विद्यामान्** | – | विद्यया मानम्। विद्या के कारण सम्मान। |

**सरलानुवादः**

विद्वज्जन उस बाह्यरूप सौन्दर्य को प्रसिद्ध नहीं मानते। उनकी दृष्टि में वास्तविक रूप सौन्दर्य विद्यासम्पन्न व्यक्तियों का ही होता है। क्योंकि विद्वज्जन बाह्यरूप सौन्दर्य वालों की अपेक्षया इस संसार में विद्यारूप के कारण अत्यधिक सम्मान प्राप्त करते हैं।

**विमर्शः**

बाह्य लौकिक रूप सौन्दर्य समय के साथ क्षीण हो जाता है किन्तु ज्ञान सौन्दर्य स्थायी होता है। यह मंगलदेव शास्त्री रचित इस पद्य का सार है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) बुधाः किं प्रसिद्धं न आहुः?
(ख) वस्तुतः रूपं केषाम् एव भवति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) केषाम् अपेक्षया बुधाः विद्यामानं लभन्ते?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) विद्वांसः इत्यर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ख) आहुः इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

**मूलपाठः**

**न दुर्जनः सज्जनतामुपैति शठः सहस्त्रैरपि शिक्ष्यमाणः।**
**चिरं निमग्नोऽपि सुधा-समुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति।।3।।**

**अन्वयः**

**दुर्जनः शठः सहस्रैः शिक्ष्यमाणः अपि सज्जनतां न उपैति।**
**मन्दरः सुधासमुद्रे चिरं निमग्नः अपि मार्दवं न अभ्युपैति।**

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **दुर्जनः** | – | दुस्थितः जनः दुर्जनः। दुष्ट व्यक्ति। |
| **शठः** | – | दुष्ट व्यक्ति। |
| **शिक्ष्यमाणः** | – | शिक्ष् + कर्मणि लट् – शानच्। बोध्यमानः। |
| **सज्जनताम्** | – | सज्जनस्य भावः सज्जनता ताम्। |
| **उपैति** | – | उप + एति = प्राप्नाति। |
| **निमग्नः** | – | नि + मज्ज् + क्त। डूबा हुआ। |
| **सुधासमुद्रे** | – | सुधायाः समुद्रे। अमृतसागर में। |
| **मृदोर्भावः** | – | मृदु + अण्। द्रवताम्। द्रवत्व को। |
| **अभ्युपैति** | – | अभि + उप + एति। प्राप्नोति। |

**सरलानुवादः**

दुर्जन व्यक्ति हजारों सज्जनों के द्वारा समझाए जाने पर भी अपनी दुर्जनता नहीं छोड़ता। जैसे अमृतसागर में अनन्तकाल तक डूबा रहकर भी मन्दर पर्वत नहीं पिघलता।

**विमर्शः**

भट्ट रामनाथ शास्त्री इस पद्य में खलनिन्दा प्रस्तुत की गई है। दुर्जन की प्रकृति अपरिवर्तनीय होती है। ठोकर लगने पर कुछ देर के लिए सुधर कर भी वह अपनी मूल दुष्ट प्रकृति नहीं छोड़ता।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

   (क) कः सज्जनतां न उपैति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

   (क) सुधासमुद्रे निमग्नः अपि कः मार्दवं न अभ्युपैति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

   (क) दुर्जन-शब्दस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः?
   (ख) मन्दरः इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

**मूलपाठः**

**कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्।**
**निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव।।4।।**

**अन्वयः**

**खलानां कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु सुमहान् यत्नः (भवति)।**
**(यथा) क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य कण्टकजालम् एव निरीक्ष्यते।**

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **कर्णामृतम्** | – | कर्णाभ्याम् अमृतम्। कानों के लिए अमृत समान तृप्तिकर। |
| **सूक्तिरसम्** | – | सूक्तीनां रसम्। सुवचन रस को। |
| **विमुच्य** | – | वि + मुच् + ल्यप्। छोड़कर। |
| **निरीक्ष्यते** | – | निर् + ईक्ष् + लट्। देखता है। |
| **केलिवनम्** | – | केलये – क्रीडायै वनम्। क्रीडावन को। |
| **प्रविश्य** | – | प्र+विश्+ल्यप्। प्रवेश कर। |
| **कण्टकजालम्** | – | कण्टकानां जालम्। काँटों के जाल को। |

**सरलानुवादः**

दुर्जन व्यक्तियों का अत्यधिक झुकाव (महापुरुषों के कथित) कानों के लिए अमृत समान तृप्तिकर उनके सुवचनों छोड़ उनके दोषों की ओर होता है। जैसे ऊँट क्रीडावन में प्रवेशकर (वहाँ के वन सौन्दर्य को छोड़) काँटों को ही देखने में लग जाता है।

**विमर्शः**

महाकवि बिल्हण विरचित इस पद्य में दुर्जन की परदोषोन्मुख प्रकृति का वर्णन किया गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत –**

(क) कं विमुच्य खलानां दोषेषु यत्नः भवति?
(ख) सूक्तिरसः कीदृशः भवति?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य किं निरीक्ष्यते?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) क्रमेलकः इति कर्तृपदेन सह कस्याः क्रियायाः अन्वयः अस्ति?
(ख) त्यक्त्वा इत्यर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ग) कर्णामृतम् इत्यस्य किं विशेष्यपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**उत्साह-सम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।**
**शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः॥5॥**

**अन्वयः**

**उत्साह-सम्पन्नम् अदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेषु असक्त,**
**शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च ( जनं प्रति ) लक्ष्मीः निवासहेतोः स्वयं याति।**

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **उत्साहसम्पन्नम्** | – | उत्साहेन सम्पन्नम्। उत्साहयुक्त। |
| **अदीर्घसूत्रम** | – | दीर्घ = बहुकालेन सूत्रम् = कार्यारम्भः नास्ति यस्य तम्। शीघ्र कार्य संपन्न करने वाला। |
| **क्रियाविधिज्ञम्** | – | क्रियायाः विधिं जानाति यः तम्। कार्य की प्रविधि को जानने वाला। |
| **प्रसक्तम्** | – | न सक्तं = लग्नम्। नहीं फँसा हुआ। |
| **शूरम्** | – | वीरम्। |
| **कृतज्ञम्** | – | कृतम् उपकारं जानाति स्मरति यः तम्। उपकार को याद रखने वाला। |
| **दृढसौहृदम्** | – | दृढं = स्थिरं सौहृदम् = मित्रत्वं यस्य। पक्की मित्रता वाला। |
| **निवासहेतोः** | – | निवासस्य हेतोः। रहने के लिए। |

**सरलानुवादः**

उत्साह से युक्त, आलस्य से रहित, कार्यविधि को जानने वाले, बुरी आदतों में न फँसे हुए, साहसी, दूसरों के उपकार को याद रखने वाले व मित्र धर्म निभाने वाले व्यक्ति के पास लक्ष्मी स्थिर होकर निवास के लिए स्वयं आ जाती है।

**विमर्शः**

विष्णुशर्मा रचित इस पद्य में एक सफल व समृद्ध व्यक्ति के गुणों का वर्णन किया गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) कीदृशं जनं प्रति लक्ष्मीः स्वयं याति?
(ख) लक्ष्मीः कस्य हेतोः याति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) लक्ष्मीः कीदृशं जनं प्रति स्वयं याति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) लक्ष्मीः इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?
(ख) कृतघ्नम् इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ग) आलस्यरहितम् इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।**
**कर्तुं कुलालस्य तु वर्षमेकं भेत्तुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम्॥6॥**

**अन्वयः**

**दीर्घप्रयासेन कृतं वस्तु निमेषमात्रेण हि विनाशं भजेत् (यथा)**
**कुलालस्य (कृते) (मूर्त्यादि) कर्तुं तु एकं वर्षं (अपेक्षितं भवति)।**
**(किन्तु) दण्डस्य (कृते) (तद् मूर्त्यादि) भेत्तुं हि मुहूर्तमात्रम् अपेक्षितं भवति।**

**पदार्थाः-**

| | | |
|---|---|---|
| **दीर्घप्रयासेन** | - | दीर्घकालिकेन प्रयासेन। लंबे समय तक प्रयास के द्वारा। |
| **निमेषमात्रेण** | - | निमेषः एव निमेषमात्रं तेन। क्षणभर में। |
| **भेत्तुम्** | - | भिद् + तुमुन्। तोड़ने के लिए। |
| **मुहूर्तमात्रम्** | - | मुहूर्त क्षणः एव मुहूर्तमात्रम्। क्षणभर। |

**सरलानुवादः**

लंबे प्रयास के द्वारा निर्मित वस्तु क्षणभर में नष्ट हो जाती है पर उसे बनाने में लंबा समय लगता है। जैसे कुम्हार को मूर्ति आदि बनाने में साल लग जाता है पर उसे डंडे से तोड़ने के लिए क्षण भर पर्याप्त होता है।

**विमर्शः**

सूक्तिमुक्तावली से उद्धृत इस पद्य में बताया गया है कि किसी वस्तु के निर्माण में बहुत समय और ऊर्जा अपेक्षित होती है। जबकि उसका विध्वंस क्षण भर में हो जाता है। अतः हमें नकारात्मकता से दूर रहना चाहिए।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) वस्तु केन कृतं भवति?
(ख) वस्तु निमेषमात्रेण कं भजेत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) कुलालस्य कृते मूर्त्यादि कर्तुं कियान् कालः अपेक्ष्यते?
(ख) दण्डस्य कृते मूर्त्यादि भेत्तुं कियान् कालः अपेक्ष्यते?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

(क) भजेत् इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
(ख) विध्वंसार्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(ग) कर्तुम् इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**आरभेत हि कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।**
**कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते।।7।।**

**अन्वयः**

**श्रान्तः श्रान्तः कर्माणि पुनः पुनः आरभेत हि।**
**हि कर्माणि आरभमाणं पुरुषं श्रीः निषेवते।**

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **श्रान्तः श्रान्तः** | – | श्रम् + क्त। पौनः पुन्ये द्वित्वम्। पुनः पुनः थका हुआ। |
| **आरभेत** | – | आ + रभ् + विधिलिङ्। आरंभ करना चाहिए। |
| **आरभमाणम्** | – | आ + रभ् + शानच्। आरंभ करते रहने वाले को। |
| **हि** | – | निश्चयेन। यतः। |
| **श्रीः** | – | लक्ष्मीः। |
| **निषेवते** | – | आश्रयति। |

**सरलानुवादः**

बारंबार थक-थक कर भी कार्यों को फिर फिर आरंभ करना चाहिए। क्योंकि कार्यों को आरंभ करते रहने वाले के पास ही लक्ष्मी स्थिर निवास करती है।

**विमर्शः**

अज्ञात कविकृत इस पद्य में निरन्तर क्रियाशीलता के महत्त्व को दर्शाया गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) कर्माणि कथम् आरभेत?
(ख) श्रीः कं निषेवते?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) कीदृशं पुरुषं श्रीः निषेवते?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) पुरुषम् इत्यस्य किं विशेषणम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ख) आश्रयति इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(ग) दरिद्रा इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।**
**आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी॥8॥**

**अन्वयः**

**एकेन अपि विद्यायुक्तेन साधुना सुपुत्रेण सर्वं कुलम् आह्लादितम् (भवति),**
**यथा चन्द्रेण शर्वरी (आह्लदिता भवति)।**

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **सुपुत्रेण** | – | सुशिक्षितः पुत्रः सुपुत्रः, तेन। शिक्षित सदाचारी पुत्र। |

**सरलानुवादः**

विद्यावान् एवं सज्जन स्वभाव वाले इकलौते पुत्र से भी समस्त वंश आनन्दित हो उठता है, जैसे अकेला चन्द्रमा ही रात्रि को उजियारे भर देता है।

**विमर्शः**

चाणक्यनीति से उद्धृत इस पद्य में माता-पिता के द्वारा शिक्षित एवं सज्जन पुत्र के निर्माण पर बल दिया गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) विद्यावता पुत्रेण किम् आह्लादितं भवति?
(ख) शर्वरी केन आह्लादिता भवति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) कीदृशेन सुपुत्रेण कुलम् आह्लादितं भवति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'सुपुत्रेण' इति पदस्य विशेषणं किम्?
(ख) 'आह्लादितम्' इत्यनेन कस्य पदस्य अन्वयः?
(ग) 'रात्रिः' इत्यर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः**
**बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।**
**पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः**
**करी च सिंहस्य बलं न मूषकः॥7॥**

**अन्वयः**

पिकः (एव) वसन्तस्य गुणं (वेत्ति) (न तु) वायसः, (अतः) गुणी (एव) गुणं वेत्ति, न (तु) निर्गुणः वेत्ति। (एवमेव) करी (एव) सिंहस्य बलं (वेत्ति) न (तु) मूषकः (वेत्ति) (अतः) बली (एव) बलं वेत्ति, न (तु) निर्बलः वेत्ति।

**पदार्थाः**

| | | |
|---|---|---|
| **गुणी** | – | गुणाः सन्ति अस्मिन् इति गुणी। गुणवान्। |
| **वेत्ति** | – | विद् + लट्। जानता है। |
| **निर्बलः** | – | निर्गतं बलं यस्मात्। बलहीन व्यक्ति। |
| **वायसः** | – | काकः। कौवा। |
| **करी** | – | करः शुण्डा अस्ति अस्य सः करी। हाथी। |

**सरलानुवादः**

कोयल ही वसन्त ऋतु का महत्त्व समझती है न कि कौवा, इसलिए गुणी व्यक्ति ही दूसरे गुणी के गुण का महत्त्व समझ सकता है न कि गुणहीन व्यक्ति। इसी प्रकार, सिंह की शक्ति हाथी ही समझता है न कि चूहा, इसलिए एक बलवान् ही दूसरे बलवान् के बल का महत्त्व समझ सकता है, न कि बलहीन व्यक्ति।

**विमर्शः**

आचार्य चाणक्य ने इस पद्य में यह तथ्य सामने रखा है कि एक योग्य व्यक्ति ही दूसरे योग्य व्यक्ति की योग्यता की पहचान और आदर कर सकता है न कि अयोग्य व्यक्ति।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) गुणं कः वेत्ति?
(ख) निर्बलः किं न वेत्ति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) वसन्तस्य गुणं कः वेत्ति?
(ख) करी कस्य बलं वेत्ति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'काकः' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(ख) 'बली' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(ग) 'गुणी' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

**मूलपाठः**

**अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।**
**भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषापहम्॥10॥**

**अन्वयः**

(भुक्तान्ने) अजीर्णे (सति) वारि भेषजम् (भवति), (भुक्तान्ने) जीर्णे (सति) वारि बलप्रदम् (भवति), भोजने च वारि अमृतम् (भवति), (एवम्) भोजनान्ते (वारि) विषापहम् (भवति)।

**पदार्थाः**

**अजीर्णे** – जृ+क्त = जीर्णम् = पक्वम्। न जीर्णम् अजीर्णम्। नहीं पचने पर।
**वारि** – जलम्।
**भेषजम्** – औषधम्

**बलप्रदम्** - बलं प्रददाति इति बलप्रदम्। शक्तिवर्धकम्।
**भोजनान्ते** - भोजनस्य अन्ते।
**विषापहम्** - विषम् अपहन्ति इति विषापहम्। विषनिवारकम्।

**सरलानुवादः**

खायी हुई वस्तु न पचने पर पीया हुआ पानी औषध के समान है, भोज्य वस्तु के पच जाने पर पीया हुआ पानी शक्तिवर्धक होता है, भोजन काल में (लस्सी आदि के रूप में) लिया गया पानी अमृत के समान होता है तथा भोजन के (कुछ काल बाद) पीया गया पानी अन्नगत विषैले अंश को समाप्त करता है।

**विमर्शः**

'वैद्यकीय सुभाषित संग्रह' से उद्धृत यह पद्य अलग-अलग स्थितियों में जलसेवन के महत्त्वों को प्रकाशित करता है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) वारि कदा भेषजं भवति?
(ख) जीर्णे वारि कीदृशं भवति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) भोजने वारि कीदृशं भवति?
(ख) भोजनान्ते किं विषापहं भवति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

(क) जलस्यार्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(ख) विष-शब्दस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।**
**सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः॥11॥**

**अन्वयः**

**अनेकसंशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शकम्, सर्वस्य लोचनम्,**
**शास्त्रं यस्य (जनस्य) न अस्ति, सः अन्धः एव (अस्ति)।**

**पदार्थाः**

**सरलानुवादः**

अनेकों सन्देहों का निवारण करने वाला, छिपे हुए तथ्यों को उजागर करने वाला, सभी मानवों की आँख के समान स्थित शास्त्र अर्थात् सद्ज्ञान जिसके पास नहीं है वह (आँखों के होते हुए भी) अन्धा ही है।

**विमर्शः**

हितोपदेश से उद्धृत इस पद्य में शास्त्र ज्ञान की महत्ता प्रतिपादित की गयी है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत –**

(क) सर्वस्य लोचनं किम् अस्ति?
(ख) यस्य शास्त्रं लोचनं नास्ति, सः कीदृशः?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) शास्त्रं सर्वस्य कीदृशं लोचनम्?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'सः' इति सर्वनाम कस्मै प्रयुक्तम्?
(ख) 'नास्ति' इति क्रियायाः कर्ता कः?
(ग) नेत्रस्य अर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(घ) प्रत्यक्ष-शब्दस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं**
**पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी।**
**कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं**
**तद्वत् सुवर्णमिह नैव करोति नादम्॥12॥**

**अन्वयः**

अल्पज्ञः एव पुरुषः अजस्रं प्रलपति, पाण्डित्यसंभृतमतिः (जनः) तु मितप्रभाषी (भवति) हि यथा कास्यम् अतितरां निनादं कुरुते (परम्) इह सुवर्णं तद्वत् नादं नैव करोति।

**पदार्थाः**

**अल्पज्ञः** – अल्पं जानाति। थोड़ा जानने वाला, मंदबुद्धि।
**प्रलपति** – अनर्गलं जल्पति। अनाप-शनाप बोलता रहता है।
**अजस्रम्** – निरन्तरम्।
**पाण्डित्यसंभृतमतिः** – पाण्डित्येन = वैदुष्येण संभृता = भूषिता मतिः यस्य सः। विद्वान् व्यक्ति।
**मितप्रभाषी** – मितं स्वल्पं प्रभाषते ब्रवीति। नपे-तुले शब्दों में बोलने वाला।
**निनादम्/नादम्** – कोलाहलम्। शोर।

**सरलानुवादः**

थोड़ा बहुत जानने वाला मंदबुद्धि व्यक्ति ही अनर्गल प्रलाप करता रहता है – हमेशा अनाप-शनाप बोलता रहता है। (इसके विपरीत) वैदुष्य संपन्न या ज्ञानी जन अत्यन्त कम बोलने वाले होते हैं। जैसे काँस का बर्तन बहुत अधिक शोर करता है किन्तु सोने का आभूषण आदि उस प्रकार शोर नहीं मचाता।

**विमर्शः**

विद्या से विनम्रता मिलती है। अतः विद्यावान् व्यक्ति स्वयं अनुशासित होता है और अपनी वाणी पर संयम रखकर केवल आवश्यक होने पर ही बोलता है। इसके विपरीत मूर्ख व्यक्ति अत्यधिक एवं अनावश्यक रूप से बोलता रहता है – यही इन दोनों के व्यक्तित्व की पहचान है। अतः हम सोच-समझ कर ही वाणी का प्रयोग करें – यह इस सूक्ति का सार है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत –**

(क) कः अजस्रं प्रलपति?
(ख) कः मितप्रभाषी?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत –**

(क) किम् अतितरां निनादं कुरुते?
(ख) सुवर्णं कं नैव करोति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत –**

(क) 'तद्वत्' इत्यत्र तत्पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(ख) 'प्रलपति' इति क्रियायाः कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्?
(ग) 'मूर्खः' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(घ) 'बहुभाषी' इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

# नैकेनापि समं गता वसुमती

**( सप्तमपाठः )**

**पाठपरिचयः**

प्रस्तुत पाठ बल्लाल सेन द्वारा रचित भोजप्रबन्ध के 'भोजराजस्य राज्यप्राप्तिबन्ध' अंश का रूपान्तरण है। मनुष्य के मन में लोभ व्याप्त होने पर वह घृणित कार्य करने को भी तत्पर रहता है। प्रस्तुत पाठ में बालक भोज के चाचा 'मुञ्ज' भोज को मरवाने का षड्यन्त्र बनाते हैं। मृत्युसमय से ठीक पहले बालक भोज 'मुञ्ज' को एक श्लोक के माध्यम से सन्देश देता है जिसमें वह मान्धाता, राम इत्यादि का उदाहरण देते हुए संसार की नश्वरता को बताता है। भोज के द्वारा दिए गए इस सन्देश से भोज के मन में वैराग्य उत्पन्न होता है तथा प्रायश्चितस्वरूप वह अग्नि में प्रवेश करना चाहता है। भोज के प्राणों की रक्षा कर ली जाती है। पाठ का मुख्य संदेश है कि जब संसार नश्वर है तो लोभ करना व्यर्थ ही है। बड़े-बड़े राजाओं के साथ भी जब यह पृथ्वी नहीं गई तो फिर सत्ता के लालच में दूसरे को किसी प्रकार की पीड़ा पहुँचाना व्यर्थ ही है।

**पाठोद्देश्यानि**

1. गद्य पाठ के माध्यम से पठन, वाचन व लेखन कौशल का विकास करना।
2. प्रस्तुत पाठ द्वारा लोभ, लालच, ईर्ष्या, वैमनस्य जैसे अवगुणों को दूर करके नैतिकता व मानवीय मूल्यों का विकास करना।
3. श्लोक के माध्यम से संसार की नश्वरता का संदेश देना।
4. पाठ में आए संधि पद, क्रिया पद तथा प्रत्यय पदों का परिचय देना।

**मूलपाठः**

**पुरा धाराराज्ये सिन्धुलसंज्ञो राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्। तस्य वार्धक्ये भोज इति पुत्रः समजनि। सः यदा पञ्चवार्षिकस्तदा पिता ह्यात्मनो जरां ज्ञात्वा मुख्यामात्योनाहूयानुजं मुञ्जं महाबलमालोक्य पुत्रं च बालं संवीक्ष्य विचारयामास यद्यहं राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थं सहोदरमपहाय राज्यं पुत्राय प्रयच्छामि, तदा लोकापवादः। अथ वा बालं मे पुत्रं मुञ्जो राज्यलोभाद्विषादिना मारयिष्यति तदा दत्तमपि राज्यं वृथा। पुत्रहानिर्वंशोच्छेदश्च इति विचार्य राज्यं मुञ्जाय दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोजमात्मानं मुमोच।**
**ततः क्रमाद् राजनि दिवङ्गते सम्प्राप्तराज्यसम्पत्तिर्मुञ्जो मुख्यामात्यं बुद्धिसागरनामानं व्यापारमुद्रया दूरीकृत्य तत्पदेऽन्यं नियोजयामास। अथ कदाचन सभायां ज्योतिःशास्त्रपारङ्गतः कश्चन ब्राह्मणः समागम्य राजानम् आह - देव! लोकाः मां सर्वज्ञं कथयन्ति। तत्किमपि यथेच्छं पृच्छ।**

**पदार्थः -**

**पर्यपालयत्** (परि + अपालयत्) - पालन किया, **समजनि** (जनि प्रादुर्भावे + लुङ्) - उत्पन्न हुआ, **संवीक्ष्य** (सम् + वि + ईक्ष् + ल्यप्) - देखकर (जानकर), **राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थम्** (राज्यलक्ष्म्याः भारः, राज्यलक्ष्मीभारः तस्य धारणे समर्थः इति) - राज्यलक्ष्मी के भार को धारण करने में समर्थ,

**लोकापवादः** (लोकस्य अपवादः, लोककर्तृकः अपवादः, अप + वद् + घञ् अपकथनमित्यर्थः) – लोक का अपकथन, **तदुत्सङ्गे** (तस्य उत्सङ्गे) – उसकी गोद में, मुमोच (मुच् + लिट्, प्रथम पुरुष एकवचन) – छोड़ा, **सम्प्राप्तराज्यसम्पत्तिः** (सम्प्राप्ता राज्यस्य सम्पत्तिः येन सः) – जिसने राज्य सम्पत्ति प्राप्त कर ली है, **दूरीकृत्य** (अदूरं दूरीकरोति इति, दूर + निः + कृ + ल्यप्) – दूर करके, दूर भेजकर, **शास्त्रपारङ्गतः** (शास्त्रेषु पारङ्गतः) – शास्त्र में पारंगत, **यथेच्छम्** (इच्छाम् अनतिक्रम्य, सप्तमी तत्पुरुष) – इच्छानुसार।

**सरलानुवादः –**

प्राचीन समय में धाराराज्य में सिन्धुल नाम के राजा ने बहुत काल तक प्रजा का पालन किया। उसके वृद्ध होने पर 'भोज' (नामक) पुत्र उत्पन्न हुआ। जब वह पाँच वर्ष का हुआ तो पिता ने अपनी वृद्धावस्था को जानकर, मुख्य सचिवों को बुलाकर, छोटे भाई मुञ्ज को महाबलशाली देखकर तथा (अपने) पुत्र को बालक देखकर (जानकर) विचार–विमर्श करने लगा – यदि मैं राज्य के कार्यभार को सम्हालने योग्य छोटे भाई को छोड़कर राज्य पुत्र को देता हूँ तो लोक अर्थात् जगत् का अपकथन या जगहँसाई होगी। या फिर मुञ्ज राज्य–लोभ के विषाद से दुःखी होकर मेरे पुत्र को मार देगा तथा (पुत्र को) दिया हुआ राज्य भी बेकार हो जाएगा। पुत्र की हानि तथा वंश के विनाश सोचकर राज्य को (छोटे भाई) मुञ्ज को देकर उसकी गोद में आत्मज भोज को सौंप दिया। इसके बाद राजा के स्वर्गवासी होने पर राज्यसम्पत्ति प्राप्त कर चुके मुञ्ज ने बुद्धिसागर नामक मुख्यमंत्री को बुलाकर व्यापार मुद्रा के साथ भेजा तथा उसके पद पर किसी अन्य को नियुक्त किया। इसके बाद सभा में ज्योतिषशास्त्र में प्रवीण किसी ब्राह्मण ने (सभा में आकर) कहा – देव! यह संसार मुझे सर्वज्ञ कहता है तो जो इच्छा हो, पूछो।

**विमर्शः –**

सिन्धुल राजा ने 'लोकापवाद' न हो इस कारण बालक भोज को तथा राज्य के कार्यभार को मुञ्ज को सौंपा। यहाँ 'लोकापवाद' में 'लोककर्तृकः अपवादः' यह अर्थ ग्राह्य है। अतः 'कर्तृकर्मणोः कृति' द्वारा षष्ठी विधान है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत**

   (क) राज्ञः पुत्रस्य नाम किमासीत्?
   (ख) राजा कस्मै राज्यभारं दत्तवान्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

   (क) राजा मुख्यामात्यानाहूय किं विचारितवान्?
   (ख) दत्तमपि राज्यं कथं वृथा स्यात्?

3. **यथानिर्देशम्**

   (क) 'मुञ्जं महाबलमोलाक्य' अत्र विशेषणपदं किमस्ति?
   (ख) 'वार्धक्यम्' इति पदस्य किं समानार्थकपदं प्रयुक्तम्?
   (ग) 'मारयिष्यति' इति क्रियायाः कर्तृपदं किमस्ति?

**मूलपाठः**

**ततो मुञ्जः प्राह - भोजस्य जन्मपत्रिकां विधेहि इति। विप्रः जन्मपत्रिकां विधाय उक्तवान्-**
**पञ्चाशत्पञ्चवर्षाणि सप्तमासदिनत्रयम्।**
**भोजराजेन भोक्तव्यः सगौडत्रे दक्षिणापथः॥**

**भोजविषयिणीम् इमां भविष्यवाणीं निशम्य मुञ्जो विच्छायवदनोऽभूत्। ततो राजा ब्राह्मणं संप्रेष्य निशीथे शयनमासाद्य व्यचिन्तयत् - यदि राजलक्ष्मीर्भोजकुमारं गमिष्यति, तदाहं जीवन्नपि मृतः। ततश्च अभुक्त एव सः एकाकी किमपि चिन्तयित्वा बङ्गदेशाधीश्वरं वत्सराजं समाकारितवान्। वत्सराजश्च धारानगरीं सम्प्राप्य राजानं प्रणिपत्योपविष्टः। राजा च सौधं निर्जनं विधाय वत्सराजं प्राह - त्वया भोजो भुवनेश्वरी-विपिने रात्रौ हन्तव्यः, छिन्नं च तस्य शिरः मत्पार्श्वे अन्तःपुरम् आनेतव्यम्। एतन्निशम्य वत्सराजः उत्थाय नृपं नत्वा प्रावोचत् - यद्यपि देवादेशः प्रमाणम्, पुनरपि किञ्चिद् वक्तुकामोऽस्मि, सापराधमपि मे वचः क्षन्तव्यम्। देव! पुत्रवध ो न कदापि हिताय भवतीति।**

**अन्वयः -**

भोजराजेन सगौडः दक्षिणापथः पञ्चाशत्पञ्चवर्षाणि सप्तमासदिनत्रयं भोक्तव्यः।

**पदार्थः -**

**विधाय** (वि + धा + ल्यप्) - बनकर, **सगौडः** (गौडेन सह सगौडः, गौडप्रान्तैः सहितः इत्यर्थः) - गौड प्रान्तों सहित, **विच्छायवदनः** (विच्छायं वदनं यस्य सः) - कान्तिहीन मुख वाला, **शयनमासाद्य** (शयनम् आ + सद् + ल्यप्) - बिस्तर पर लेटकर, **जीवन्नपि** (जीव + शतृ) - जीवित होते हुए भी, **समाकारितवान्** (सम् + आकारितवान्) - बुलवाया, **प्रणिपत्य** (प्रणिपातं कृत्वा इत्यर्थः प्रनि + पत् + ल्यप्) - प्रणाम करके, **सौधं** (सौध वासमुटजेन रघु. प्रयोगः) - महल को, **प्रावोचत्** (प्र + अवोचत्, वच् + लुङ्) - कहा, **देवादेशः** (देवस्य, राज्ञः आदेशः) - राजाज्ञा, **क्षन्तव्यम्** (क्षम् + तव्यत्) - क्षमा करने योग्य।

**सरलानुवादः -**

उसके बाद मुञ्ज ने कहा - भोज की जन्म पत्रिका बनाओ। ब्राह्मण ने जन्मपत्रिका बनाकर कहा -
भोजराज के द्वारा उत्तर से (लेकर) दक्षिण तक (समस्त भारत पर) पचपन वर्ष सात मास तीन दिन (तक) (राज्य) भोगा जाना चाहिए।

भोज के बारे में इस भविष्यवाणी को सुनकर मुञ्ज कान्तिहीन मुख वाला हो गया। उसके बाद राजा, ब्राह्मण को भेजकर, शयन करते हुए सोचने लगा - यदि राज्यलक्ष्मी राजकुमार भोज के पास चली जाएगी तो मैं जीते हुए मरा हुआ हूँ। इसके बाद उसने बिना (कुछ) खाए अकेले में कुछ सोचकर बंगालदेश के राजा वत्सराज को बुलवाया तथा वत्सराज धारानगरी पहुँचकर राजा को प्रणाम करके बैठ गया। राजा ने (अन्त:पुर) को खाली करके वत्सराज से कहा - तुम्हारे द्वारा भोज, भुवनेश्वरी (नायक) जंगल में रात्रि में मारा जाना चाहिए। तथा उसका कटा हुआ मस्तक मेरे पास अन्त:पुर में लाना है। इसे सुनकर वत्सराज ने उठकर राजा को नमस्कार करके कहा - यद्यपि राजाज्ञा ही प्रमाण है, फिर भी कुछ कहना चाहता हूँ, अपराधयुक्त होने पर भी मेरे शब्दों को क्षमा कीजिए। हे राजन्! पुत्र की हत्या कभी भी हित के लिए नहीं होती।

**विमर्शः -**

स्वयं से राज्यसम्पत्ति छिन जाने की भावना से राजा मुञ्ज बंगालदेश के राजा द्वारा बालक को मरवाने का आदेश देता है। इस बात को सही न समझते हुए वत्सराज राजा को समझाने का प्रयास करता है। राजा की बात को काटने को वह 'सापराध' शब्द से व्यक्त करता है।

**विशेषः -**

'सगौडो दक्षिणापथः' में 'सगौडः' शब्द से उत्तर भारत के प्रान्त, जो कि इस समय व्यास नदी से ऊपर का भाग था इसमें नेपाल इत्यादि भी सम्मिलित थे, वे प्रान्त ग्रहण किये गए है। अर्थ है उत्तर से लेकर समस्त दक्षिण भारत पर।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत**

   (क) विप्रानुसारं सगौडो दक्षिणापथः केन भोक्तव्यः भवेत्?
   (ख) वत्सराजः कः आसीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

   (क) शयनमासाद्य राजा किं चिन्तितवान्?
   (ख) राजा वत्सराजं भोजस्य विषये किमुक्तवान्?

3. **यथानिर्देशम्**

   (क) 'वने' इति पदस्य किं पर्यायशब्दमत्र प्रयुक्तम्?
   (ख) 'प्रावोचत्' इति क्रियायाः कर्ता कः अस्ति?
   (ग) 'विच्छायवदनः' इति पदस्य विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः-**

**वत्सराजस्य इदं वचनमाकर्ण्य कुपितो राजा प्राह - त्वं मम सेवकोऽस्ति, मया यत्कथ्यते त्वया तद् विधेयम्। पुनः वत्सराजः राजाज्ञा पालनीयैवेति मत्वा तूष्णीं बभूव। अनन्तरम् अनिच्छन्नपि वत्सराजः भोजं रथे निवेश्य रात्रौ वनं नीतवान्। तत्र आत्मनो वधयोजनां ज्ञात्वा भोजः किमपि वत्सराजं कथितवान्। तद्वचनैः वैराग्यमापन्नो वत्सराजः तं न हतवान्, अपितु गृहमागत्य भोजं गृहाभ्यन्तरे भूमौ निक्षिप्य ररक्ष। पुनः कृत्रिमरूपेण भोजस्य मस्तकं कारयित्वा राजवभनं गत्वा वत्सराजो राजानं प्राह-श्रीमता यदादिष्टं तत्साधितमिति। ततो राजा भोजवधं ज्ञात्वा तं पृष्टवान् वत्सराज! खड्गप्रहारसमये तेन किमुक्तवान्।**

**पदार्थः -**

**पालनीयैवेति** (पालन + अनीयर् + टाप्, पालनीया रु एव + इति) - पालन करने योग्य है। **बभूव** (भू + लिट्) - हो गया, **अनिच्छन्नपि** (अन् + इच्छ् + शतृ, अनिच्छन् + अपि) - न चाहते हुए भी, **वधयोजनाम्** (वधस्य योजनाम्) - वध की योजना को, **वैराग्यमापन्नः** (गतापन्नः ...... उपपदद्वितीया) - वैराग्य को प्राप्त, **निक्षिप्य** (नि + क्षिप् + ल्यप्) - रखकर / छिपाकर, **ररक्ष** (रक्ष + लिट्) - रक्षा की, **कृत्रिमरूपेण** - बनावटी / नकली, **यदादिष्टम्** (यत् + आदिष्टम्) - जैसा आदेश किया गया, **साधितम्** - किया गया है। **खड्गप्रहारसमये** (खड्गस्य

प्रहारः खड्गप्रहारस्य समये) – तलवार से प्रहार के समय, **तद्वचनैः** (तस्य वचनं तैः) – उसके वचनों से।

**सरलानुवाद–**

वत्सराज के इन शब्दों को सुनकर कुपित राजा ने कहा – तुम मेरे सेवक हो, मेरे द्वारा जो कहा जाए, तुम्हारे द्वारा वह करना चाहिए। फिर, राजाज्ञा का पालन तो करना ही चाहिए (ऐसा) मानकर वत्सराज चुप हो गया। बाद में न चाहते हुए भी वत्सराज भोज को रथ पर बैठाकर रात्रि में वन ले गया। वहाँ अपनी वधयोजना के बारे में जानकर भोज ने वत्सराज को कुछ कहा। उसके वचनों से वैराग्य को प्राप्त हुए वत्सराज ने उसको नहीं मारा, बल्कि घर आकर भोज का बनावटी मस्तक बनवाकर राजभवन जाकर वत्सराज ने राजा को कहा – श्रीमान् के द्वारा जो आदेश दिया गया वह कर दिया गया है। तब राजा ने भोज की हत्या के बारे में जानकर उससे पूछा – वत्सराज! तलवार के प्रहार के समय उसने (भोज ने) क्या कहा?

**विमर्शः –**

भोज की हत्या के समय वत्सराज से भोज ने जो कहा उसे सुनकर वत्सराज को वैराग्य हो गया। अतः उसने बालक को न मारकर उसे भूमिगत करके उसके प्राणों की रक्षा की।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत**

   (क) कस्य वचनमाकर्ण्य राजा कुपितवान्?
   (ख) वत्सराजः भोजं कुत्र नीतवान्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

   (क) वैराग्यं प्राप्तः वत्सराजः किम् कृतवान्?
   (ख) राजा भोजवधं ज्ञात्वा किमुक्तवान्?

3. **यथानिर्देशम्**

   (क) 'नीतवान्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
   (ख) 'तं न हतवान्' इत्यत्र 'तं' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ग) 'बाह्ये' इति पदस्य विपर्ययपदं किमुक्तम्?

**मूलपाठः–**

**वत्सराजेन च राज्ञे भोजस्य अन्तिमसन्देशरूपेण तत्प्रदत्तः श्लोकः समर्पितः –**
**मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः**
**सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।**
**अन्ये वापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते**
**नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति॥**
**श्लोकमिमम् अधीत्य शोकसन्तप्तो मुञ्जः प्रायश्चित्तं कर्तुं आत्मनो वह्नौ प्रवेशनं निश्चितवान्। राज्ञः**

**वह्निप्रवेशकार्यक्रमं श्रुत्वा वत्सराजः बुद्धिसागरं नत्वा शनैः शनैः प्राह – तात! मया भोजराजो रक्षित एवास्ति। पुनः बुद्धिसागरेण तस्य कर्णे किमपि कथितम्, यन्निशम्य वत्सराजः ततो निष्क्रान्तः। पुनः राज्ञो वह्निप्रवेशकाले कश्चन् कापालिकः सभां समागतः। सभामागतं कापालिकं दण्डवत् प्रणम्य मुञ्जः प्रावोचद् – हे योगीन्द्र! मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति। अथ कापालिकस्तं प्रावोचत् – राजन्! मा भैषीः। शिवप्रसादेन स जीवितो भविष्यति। तदा श्मशानभूमौ कापालिकस्य योजनानुसारं भोजः तत्र समानीतः। 'योगिना भोजो जीवितः' इति कथा लोकेषु प्रसृता। पुनः गजेन्द्रारूढो भोजो राजभवनमगात्। संतुष्टो राजा मुञ्जः भोजं निजसिंहासने निवेश्य निजपट्टराज्ञीभिश्च सह तपोवनभूमिं गत्वा परं तपस्तेपे। भोजश्चापि चिरं प्रजाः पालितवान्।**

**अन्वयः –**

महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतः च मान्धाता गतः, महोदधौ येन सेतुः विरचितः असौ दशास्यान्तकः क्व (गतः) भूपते! युधिष्ठिरप्रभृतयः अन्ये चापि दिवं याताः, वसुमती न एकेन अपि समं गता, त्वया नूनं यास्यति।

**पदार्थः–**

**तत्प्रदत्तः** (तेन प्रदत्तः) – उसके द्वारा दिया गया, **महीपतिः** (महीन् पाति इति) – भूमिपति, **कृतयुगालङ्कारभूतः** (कृतयुगः, सत्ययुगः, तस्य अलङ्कारभूतः) – सत्ययुग के अलंकार स्वरूप, **महोदधौ** (महान् चासौ उदधिः, तस्मिन्) – महासागर, **क्वासौ** (क्व + असौ) – यह कहा है,

**दशास्यान्तकः**

(दश आस्यानि यस्य इति रावणस्य अन्तकः नाशकः) – रावण का विनाश करने वाला (राम), **युधिष्ठिरप्रभृतयः** – युधिष्ठिर के सदृश, **याता** – चले गए, **नैकेनापि** (न + एकेन + अपि) – एक भी नहीं, **यास्यति** – जाएगी, **शोकसन्तप्तः** (शोकेन सन्तप्तः) – शोक से दुःखी होकर, **वह्निप्रवेशकार्यक्रमं** (वह्नौ प्रवेशः तस्य कार्यक्रमः) – अग्नि में प्रवेश के कार्यक्रम को, **महापापिना** (महान् चासौ पापी इति, तेन) – महापापी द्वारा, **गजेन्द्रारूढः** (गजेन्द्रे आरूढः) – गज पर सवार।

**सरलानुवादः–**

वत्सराज ने भोज के अन्तिम सन्देश के रूप में उसके द्वारा प्रदत्त श्लोक राजा के लिए समर्पित किया – सत्ययुग के अलङ्कारस्वरूप तथा पृथ्वी की रक्षा करने वाले राजा मान्धाता दुनिया से चले गए, महासागर में पुल बनाने वाले तथा रावण के विनाशक (राम) कहाँ चले गए। हे राजन्! युधिष्ठिर के समान अन्य (राजा) भी स्वर्ग को चले गए। (यह) पृथ्वी किसी एक के साथ भी नहीं गई। तुम्हारे साथ यह अवश्य जाएगी।

इस श्लोक को पढ़कर शोक से दुःखी मुञ्ज ने प्रायश्चित स्वरूप स्वयं अग्नि में प्रवेश करने का निश्चय किया। राजा के अग्नि में प्रवेश के कार्यक्रम को सुनकर वत्सराज बुद्धिसागर को प्रणाम करके धीरे-धीरे बोला – हे! राजन मेरे द्वारा भोजराज की रक्षा ही की गई है। फिर बुद्धिसागर ने उसके कान में कुछ कहा जिसे सुनकर वत्सराज वहाँ से निकल गया। फिर राजा को अग्नि प्रवेश के समय कोई कापालिक सभा में आया। सभा में आए कापालिक को दण्डवत् प्रणाम करके मुञ्ज बोला – हे योगीन्द्र! मेरे द्वारा मारे गए पुत्र को प्राणदान देकर मेरी रक्षा कीजिए। इसके बाद कापालिक ने उससे कहा – राजन! मत डरो। शिव के प्रसाद से वह जीवित हो जाएगा। तब श्मशान भूमि में कापालिक की योजना के अनुसार भोज को वहाँ लाया गया। 'योगी भोज को जीवित किया' यह कथा लोक में

फैल गई। फिर भोज हाथी पर सवार होकर राजभवन आया। राजा मुञ्ज ने (भोज के प्राण द्वारा) संतुष्ट होकर भोज को अपने सिंहासन पर बैठाकर अपनी पट्टरानी के साथ तपोवनभूमि को जाकर महान् तप किया तथा भोज ने लम्बे समय तक प्रजा का पालन किया।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत**

(क) कः शोकसन्तप्तः आसीत्?
(ख) योगिना कः जीवितः?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत**

(क) मुञ्जः कापालिकं किम् अवदत्?
(ख) श्लोकमधीत्य शोकसंतप्तः मुञ्जः किं निश्चितवान्?

**3. यथानिर्देशम्**

(क) 'मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन' इत्यत्र विशेषणपदं किमस्ति?
(ख) 'निष्क्रान्तः' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्?
(ग) 'पृथिवी' इति पदस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?
(घ) 'शिवप्रसादेन जीवितो भविष्यति' वाक्येऽस्मिन् 'स' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्।

**अनुभवविस्तारः-**

इस पाठ में बताया गया है कि मनुष्य को राज्य व धन का लालच होने पर वह निन्दनीय कार्य कर बैठता है। पाठ में श्लोक द्वारा एक भावात्मक संदेश दिया गया है कि जब संसार ही नश्वर है तो लोभ क्यों करना। आज की परिस्थितियों में भी जमीन व धन को लेकर आपसी सम्बन्धों में कलह व्याप्त है। लालच होने पर जन-सामान्य अपनों के प्राण हरण भी कर लेते हैं। इस दृष्टि से पाठगत संदेश अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि जब कुछ भी संसार में शाश्वत नहीं तो 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' की भावना से जीवन-यापन करना चाहिए।

इस पाठ के शिक्षण को अभिनय-विधि द्वारा प्रभावी बनाया जा सकता है। साथ ही पाठ के मुख्य संदेश पर सामूहिक चर्चा करके सम्बद्ध अन्य कथाओं की चर्चा व लेखन कार्य किया जा सकता है।

# हल्दीघाटी

**( अष्टमः पाठः )**

**पाठ-परिचयः**

भारतभूमि शताब्दियों तक पराधीन रही, विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा दमन किये जाने पर भी भारतीयों की स्वतन्त्रता प्राप्ति की इच्छा सदैव बलवती रही। महाराणा प्रताप मुगल शासकों के साथ आजीवन संघर्ष करते रहे तथा अत्यधिक साधन-सम्पन्न न होने पर भी विशाल मुगल साम्राज्य से लोहा लेते रहे। राजस्थान में हल्दीघाटी नामक स्थान पर विशाल मुगल सेना को मुट्ठी भर महाराणा प्रताप के सैनिकों ने नाकों चने चबवाए - यह तथ्य इतिहास से परिपुष्ट है। हल्दीघाटी की लड़ाई को आधार बनाकर लेखकों ने अनेक रचनाएँ प्रस्तुत कर उन शहीदों को श्रद्धाञ्जलि दी। 'प्रतापविजयः' नामक इस खण्डकाव्य में लेखक श्री ईशदत्त शास्त्री हल्दीघाटी के प्रत्येक कण को उस संघर्ष का साक्षी मानते हुए सुन्दर मनोरम पद्यों में इस ऐतिहासिक कथानक को उपनिबद्ध करते हैं। यह पाठ निश्चित ही आज के युवकों को प्रेरणा देगा तथा उनमें स्वाभिमान की भावना भरेगा।

**मूलपाठः**

**स्वाधीनताऽऽर्यभुवि मूर्तिमती समाना**
**राणाप्रताप-बलवीर्यविभासमाना।**
**आटीकते समुपमा नहि यां सुशोचिः**
**शाटीव सा जयति काचन हल्दिघाटी॥1॥**

**प्राची यदा हसति हे प्रिय! मन्दमन्दं**
**वायुर्यदा वहति नन्दनजं मरन्दम्।**
**या प्रत्यहं किल तदा मतिमाननीयां**
**शोभां दधात्युषसि काञ्चनकाञ्चनीयाम्॥2॥**

**मा कातराः! स्पृशत मां प्रिय-पारतन्त्र्याः!**
**अद्यापि यन्न विहिता जननी स्वतन्त्रा।**
**यत्रेदमेव गदतीव ततिस्तरूणां**
**शाखाकदम्ब-कृत-मर्मरमातनोति॥3॥**

**अन्वयः**

यां समुपमा न हि आटीकते, सा शाटी इव सुशोचिः, आर्यभुवि समाना मूर्त्तिमती स्वाधीनता, राणाप्रतापबलवीर्य. विभासमाना, काचन हल्दिघाटी जयति॥1॥

हे प्रिय ! यदा प्राची मन्दमन्दं हसति, यदा वायुः नन्दनजं मरन्दं वहति, तदा उषसि प्रत्यहं या मतिमाननीयां काञ्चनीयां काञ्चनशोभां दधाति किल॥2॥

यत्र तरूणां ततिः - "हे प्रिय-पारतन्त्र्याः कातराः यत् अद्यापि जननी स्वतन्त्रा न विहिता (तत्) मां मा स्पृशत" - (इति) इदम् एव गदति इव, शाखाकदम्बकृतमर्मरम् आतनोति (च)॥3॥

**सरलानुवादः**

जिसकी (इस धरती पर) कोई उपमा नहीं प्राप्त होती, वह साड़ी की तरह चमकने वाली, आर्यावर्त भारतभूमि पर शरीर धारण की हुई स्वाधीनता के समान (सभी के लिए) सम्मानयोग्य, महाराज राणा प्रताप की शक्ति और वीरता से प्रकाशित होने वाली 'हल्दीघाटी' नामक स्थली पूरे जगत् में श्रेष्ठ मानी जाती है।।1।।

हे प्रिय मित्र ! जब पूर्व दिशा (सूर्योदय होने के कारण) मन्द मन्द मुस्कुराती है (अर्थात् प्रकाशित होती है), जब वायु स्वर्ग के उपवन नन्दन वन के पुष्पों का पराग लिये हुए बहती है, तब प्रतिदिन उषाकाल में यह हल्दीघाटी की धरती एक अद्भुत सुनहली शोभा धारण करती है।।2।।

इस हल्दीघाटी के वृक्षों का समूह – "अरे पराधीनता चाहने वाले कायरो, तुमने आज भी अपनी धरती माँ को स्वतन्त्र नहीं करवाया, मुझे तुम मत छूना" – ऐसा कहकर (परतन्त्र भारतीयों को मानो आज भी) धिक्कारता है एवं अपनी डालों के द्वारा सूखे पत्तों की ध्वनि से शोर मचाता है।।3।।

**पदार्थाः**

**आर्यभुवि** – आर्याणां भुवि। आर्यभूमि पर।

**मूर्त्तिमती स्वाधीनता** – साकारा स्वाधीनता। मूर्तरूप धारण की हुई स्वतन्त्रता के समान।

**राणाप्रतापबलवीर्यविभासमाना** – राणाप्रतापस्य बलेन वीर्येण च विभासमाना। राणाप्रताप के बल एवं वीरता से प्रकाशमान।

**आटीकते** – प्राप्नोति।

**सुशोचिः** – सुष्ठु शोभनं शोचिः प्रभा यस्याः सा। मनोरम कान्ति युक्त।

**नन्दनजम्** – नन्दनं स्वर्गोपवनं तस्माज्जातम्। नन्दन वन में उत्पन्न।

**मरन्दम्** – पुष्प पराग।

**दधाति** – धारयति। धा+लट्।

**काञ्चनीयाम्** – काञ्चनसदृशीम्। सुनहली कान्ति।

**मतिमाननीयाम्** – बुद्धिसम्मताम्।

**प्रियपारतन्त्र्याः** – प्रियं पारतन्त्र्यं येषाम्। पराधीनता जिन्हें प्यारी है वे।

**कातराः** – कायर।

**शाखाकदम्बकृतमर्मरम्** – शाखानां कदम्बेन = समूहेन कृतः मर्मरः = शुष्कपत्रध्वनिः तम्। डालों के समूह द्वारा सूखे पत्तों का शोर।

**विमर्शः**

कवि ईशदत्त शास्त्री ने इन पद्यों के माध्यम से हल्दीघाटी की धरती का मनोरम वर्णन प्रस्तुत किया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

   (क) का इव हल्दीघाटी जयति?
   (ख) सा उषसि कीदृशीं शोभां दधाति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

   (क) तरूणां ततिः किं गदति इव?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

   (क) 'तदा' इति सर्वनाम कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ख) 'नन्दनजं मरन्दम्' इत्यत्र विशेषणपदं किम्?
   (ग) भारतस्यार्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
   (घ) 'रोदिति' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः**

**वीराग्रणीरभय-युद्धकलाकलापः**
**क्वाऽस्तेऽद्य हा! स तनयः सनयः प्रतापी।**
**अत्रत्य-निर्जनवनेऽथ यदा कदाचिद्**
**मातेव रोदिति सखे! कुररी नु काचित्॥4॥**
**पुष्पं फलं तदनु गन्धवहः समीरः**
**खद्योत-पंक्तिरमला च पिकालि-गीतिः।**
**अद्यापि यत्र सरल-प्रकृति-प्रणीतं**
**पञ्चोपचारमिव पूजनमस्ति मातुः॥5॥**
**नीलेन पक्ष-निवहेन खमाहसन्तः**
**चञ्च्वा फलानि विमलानि समञ्चयन्तः।**
**'श्रीराम'-नाम मधुरं मधुरं क्वणन्तः**
**अद्यापि यत्र सुशुका विलसन्ति सन्तः॥6॥**

**अन्वयः**

(हे) सखे ! अथ यदा कदाचित् अत्रत्य-निर्जनवने काचित् कुररीमाता इव - हा ! सः वीराग्रणीः, अभययुद्धकलाकलापः, सनयः प्रतापी तनयः अद्य क्व आस्ते - (इति) रोदिति नु॥4॥

अद्यापि यत्र पुष्पम्, फलम्, तदनु गन्धवहः समीरः, अमला खद्योतपंक्तिः, पिकालिगीतिः च - इति पञ्चोपचारं पूजनं मातुः (कृते) सरल-प्रकृति-प्रणीतम् अस्ति इव॥5॥

यत्र अद्यापि नीलेन पक्ष-निवहेन खम् आहसन्तः, चञ्च्वा विमलानि फलानि समञ्चयन्तः, श्रीरामनाम मधुरं मधुरं क्वणन्तः सन्तः सुशुकाः विलसन्ति॥6॥

**सरलानुवादः-**

हे मित्र ! यहाँ के निर्जन वन में (आप भी) समय-समय पर क्रौंची पक्षी माता की तरह - हा ! वह वीरों में अग्रगण्य भयरहित युद्धकला में निपुण, नीतिज्ञ, प्रतापी (मेरा) पुत्र आप कहाँ हो? - ऐसा (कहती हुई सी) विलाप करती है।।4।।

आज भी यहाँ - फूल, फल, सुगन्धित पवन, जुगनुओं का चमकता झुण्ड और कोयलों का मधुर गीत - इस प्रकार पञ्चोपचार युक्त पूजन मातृभूमि के लिए प्रकृति के द्वारा सहज रूप से उपलब्ध रहता है।।5।।

यहाँ आज भी अपने नीले पंखों से आकाश को तिरस्कृत करने वाले, अपनी चोंच से बेदाग़ फलों को शोभित करने वाले, मीठे स्वर में 'राम-राम' बोलने वाले सज्जन तोते निवास करते हैं।।6।।

**पदार्थाः**

**वीराग्रणीः** - वीरेषु अग्रणीः। वीरों में अग्रगण्य।

**अभययुद्धकलाकलापः** - अभयायां युद्धकलायां कलापः = निपुणः। निर्भय होकर युद्ध करने की कला में निपुण।

**सनयः** - नयेन सहितः। नीतिनिपुण।

**पिकालिगीतिः** - पिकानां = कोकिलानाम् आलिः = पंक्तिः, तस्याः गीतिः। कोयलों के समूह का गीत।

**सरलप्रकृतिप्रणीतम्** - सरलया प्रकृत्या प्रणीतम्। सरल प्रकृति के द्वारा उपलब्ध किया गया।

**पञ्चोपचारं पूजनम्** - पञ्च उपचाराः पूजा वस्तूनि यत्र तत् पञ्चोपचारं पूजनम्।

**पक्षनिवहेन** - पक्षाणां निवहेन = समूहेन। पंखों के समूह द्वारा।

**क्वणन्तः** - निगदन्तः। बोलते हुए।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) अत्रत्य-निर्जनवने का रोदिति?
(ख) अद्यापि अत्र मातुः कीदृशं पूजनमस्ति?
(ग) अत्र अद्यापि के विलसन्ति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) कुररी किं रोदिति?
(ख) मातुः पञ्चोपचारं पूजनं किं किमस्ति?
(ग) कीदृशाः सुशुकाः अद्यापि विलसन्ति?

**मूलपाठः**

**अत्र प्रताप-नृपतेः प्रकट-प्रतापा**
**एकाऽपि हन्त! शतधाऽभवदस्त्र-धारा।**
**युद्धेऽधिकोशमपि शत्रुवधे क्रमेण**
**ज्योत्स्ना तमः-सहचरी चपलेति चित्रम्॥7॥**
**सैषा स्थली चकित-चेतकचङ्क्रमाणां**
**सैषा स्थली कुटिलकुन्तपराक्रमाणाम्।**
**सैषा स्थली प्रियतमाऽप्यसुतोऽमराणां**
**सैषा स्थली भयकरी नर-पामराणाम्॥8॥**
**वीक्ष्य प्रभा हसित-चारु-पुरन्दराणां**
**सङ्गं स नृत्यममलं शिखिसुन्दराणाम्**
**सम्भासते वरभुवः सुषमात्युदारः**
**हर्षाङ्कितो हरितहीरक-कण्ठहारः॥9॥**

**अन्वयः**

हन्त ! अत्र युद्धे प्रतापनृपतेः अधिकोशम् अपि (स्थिता) एका अपि प्रकटप्रतापा अस्रधारा शत्रुवधे क्रमेण ज्योत्स्ना इव शतधा अभवत्। चपला तमः सहचरी इति चित्रम्॥7॥

सा एषा चकित-चेतक-चङ्क्रमाणां स्थली, सा एषा कुटिलकुन्तपराक्रमाणां स्थली, सा एषा अमराणाम् असुतः अपि प्रियतमा स्थली, सा एषा नर-पामराणां भयकरी स्थली (विराजते)॥8॥

सः वरभुवः सुषमात्युदारः हर्षाङ्कितः हरित-हीरक-कण्ठहारः प्रभा-हसित-चारु-पुरन्दराणां शिखि-सुन्दराणाम् अमलं संगं नृत्यं वीक्ष्य संभासते॥9॥

**सरलानुवादः**

अहो ! यहाँ हल्दीघाटी के ऐतिहासिक युद्ध महाराज राणा प्रताप की म्यान में स्थित अकेली शक्तिशाली तलवार (अस्त्रधारा) भी शत्रुओं के वध के समय अंधेरे में चाँदनी की तरह मानो सैकड़ों की संख्या वाली हो जाया करती थी ! यह बड़े आश्चर्य की बात है !॥7॥

यह धरती आश्चर्य में पड़े चेतक घोड़े के टापों की है, यह धरती टेढ़े भालों की पराक्रमों की है, यह धरती देवताओं को प्राणों से प्यारी है और यह धरती दुष्ट जनों को डराने वाली है॥8॥

(महाराणा प्रताप की विजय गाथा वाली) इस श्रेष्ठ धरती पर स्थित उनका वह हरे हीरों वाला अतिशोभायुक्त कण्ठहार अपनी कान्ति से स्वर्गीय वैभव को भी तिरस्कृत करने वाले मयूरों के सुन्दर सामूहिक नृत्य को देखकर मानो और चमक उठता है॥9॥

**पदार्थाः**

| | |
|---|---|
| **प्रकटप्रतापा** | - प्रकटः स्फुटः प्रतापः पराक्रमः यस्याः। अत्यन्त पराक्रम वाली। |
| **अस्त्रधारा** | - अस्त्रस्य धारा। तलवार की धार। |
| **अधिकोशम्** | - कोशे इति अधिकोशम्। म्यान में (स्थित)। |

**शत्रुवधे** - शत्रूणां वधे। शत्रुओं के वध के समय।

**चकितचेतकचंक्रमाणाम्** - चकितस्य चेतकस्य चंक्रमाणाम्, पदक्षेपाणाम्। चकित चेतक के पदचापों का।

**कुटिलकुन्तपराक्रमाणाम्** - कुटिला: वक्रा: कुन्ता: भल्ला:, तेषां पराक्रमाणाम्। टेढ़े भालों के पराक्रमों का।

**असुतः प्रियतमा** - असुत: प्राणेभ्य: प्रियतमा। प्राणों से भी अधिक प्रिय।

**नर-पामराणाम्** - नरेषु पामराणां दुष्टानाम्। दुष्टों के लिए।

**प्रभाहसितचारुपुरन्दराणाम्**- प्रभाभि: हसिता: तिरस्कृता: चारुपुरन्दरा: यै:। अपनी कान्ति से स्वर्गीय इन्द्र-शोभा को भी तिरस्कृत कर देने वाले।

**शिखिसुन्दराणाम्** - शिखिषु मयूरेषु सुन्दराणाम्। सुन्दर मयूरों का।

**सुषमात्युदारः** - सुषमया कान्त्या अत्युदार: आकर्षक:।

**हर्षाङ्कितः** - हर्षेण अङ्कित: = प्रकाशमय:। प्रकाशमान।

**हरितहीरककण्ठहारः** - हरितै: हीरकै: युक्त: कण्ठहार:। हरे हीरों का कण्ठहार।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) प्रतापनृपते: अस्रधारा शत्रुवधे कतिधा अभवत्?
(ख) सैषा स्थली केषां भयकरी?
(ग) कण्ठहार: किं वीक्ष्य संभाषते?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) प्रतापनृपते: अस्रधारा कीदृशी आसीत्?
(ख) का अमराणाम् असुतोऽपि प्रियतमा?
(ग) कण्ठहार: केषां नृत्यं वीक्ष्य संभासते?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत -**

(क) 'अत्र' इति सर्वनाम कस्यै प्रयुक्तम्?
(ख) 'अभवत्' इति क्रियाया: कर्तृपदं किम्?
(ग) दुष्टस्यार्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?
(घ) 'विषाद:' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

# मदालसा

**( नवमः समुन्मेषः )**

**पाठपरिचयः-**

"स्त्री विमर्श" को रेखांकित करता रूपकसंग्रह पुरन्ध्रीपंचकम् संस्कृत-साहित्य में अत्यधिक प्रसिद्ध है। इसमें सम-सामयिक एवं शिक्षाप्रद रूपकों का संग्रह है। इसी पुरन्ध्रीपंचकम् के तीसरे रूपक से "मदालसा" संगृहीत है। इसकी लेखिका प्रो0 वेद कुमारी घई हैं। इस संकलित एवं संपादित अंश में राजकुमार ऋतध्वज और मदालसा के संवाद के माध्यम से स्त्री-अस्मिता और विवाह की अनिवार्यता अथवा निवार्यता पर नये परिप्रेक्ष्य में चर्चा की गई है।

**उद्देश्यानिः-**

क- स्त्री विमर्श पर चर्चा।

ख- मदालसा के चरित्र-वर्णन के माध्यम से तत्कालीन स्त्रियों में शिक्षा-दीक्षा के प्रसार और विवाह का निर्णय स्वयं लेने के अधिकार का उल्लेख।

ग- प्राचीन और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारीस्वतंत्रता पर विमर्श।

घ- स्त्री और पुरुष दोनों के सामंजस्य से ही समाज का संतुलन।

**मूलपाठः-**

(ततः प्रविशति प्रकृतिसौन्दर्यमवलोकयन् महाराजस्य शत्रुजितः पुत्रः ऋतुध्वजः)

**ऋतध्वजः-** अहो शोभनं गन्धर्वराजविश्वावसोः राजोद्यानम्। आम्रमञ्जरीणां परां शोभां दृष्ट्वा कोकिलानां च मधुरवचांसि श्रुत्वा कस्य यूनो हृदयं सहसा उत्कण्ठितं न भविष्यति?

वामपार्श्वे रमणीनामालाप इव श्रूयते। अत्रैव स्थित्वा श्रोष्यामि।

**कुण्डला-**सखि मदालसे! त्वं तु केवलं विद्याध्ययने एव रता कियन्तं कालं यावत् ब्रह्मचर्यव्रतं धारयिष्यसि?

**मदालसा-**ज्ञानोदधिस्तु अनन्तपारो गभीरश्च। मया सागरतटे स्थित्वा कतिपयबिन्दव एव प्राप्ता अद्यावधि।

**कुण्डला-**विनयशीले! विद्या ददाति विनयम् अतएव एवं भणसि। कुलगुरु-तुम्बरुमहाभागैस्तु गन्धर्वराजाय अन्यदेव सू. चितम्।

**मदालसा-** किं श्रुतं त्वया यद् गुरुवर्यैः माम् अधिकृत्य पित्रे कथितम्?

**कुण्डला-**अथ किम्। राजकुमारी मदालसा सर्वविद्यानिष्णाता जाता परं तया स्वयं वरः न प्राप्तः अतः तस्यै योग्यवरस्य अन्वेषणं कार्यम् इत्यासीद् गुरुपादानां मतम्।

**पदार्थाः-**

राजोद्यानम्-राजा+उद्यानम्, राज्ञः उद्यानम्, राजा का उद्यान-ष0 तत्पु0।

अवलोकयन्- अव+ लोकृ+ शतृ-देखता हुआ।

परां शोभाम्-(पृ+अच्+टाप्)-अत्यधिक सुन्दरता को।
आम्रमञ्जरीणाम्-आम्रस्य मञ्जरीणाम्-आम की बौरों का-ष0 तत्पु0।
मधुरवचांसि-मधुराणि वचांसि-मधुर वचनों को, कर्मधारय।
यून:- युवक का, युवन् शब्द-ष0 वि0 एकवचन।
उत्कण्ठितम्-उद्+कण्ठ्+क्त-लालसायुक्त।
वामपार्श्वे-बाईं तरफ।
रमणीनाम्-युवतियों का।
आलाप इव- आलाप:+इव।
रता-रम+क्त,टाप्-लगी हुई, संलग्न।
ज्ञानोदधि-ज्ञानस्य उदधि:-ज्ञान का सागर।
अनन्तपार:- न अन्त:-अनन्त:, अनन्तं पारं यस्य स:, बहु ब्री0-अन्तहीन।
अद्यावधि- अद्य+अवधि-आज तक।
भणसि-कथयसि-कहती हो।
महाभागैस्तु- महाभागै:+तु।
अधिकृत्य-अधि+कृ+ल्यप्, आधार को लेकर।
सर्वविद्यानिष्णाता-सर्वासु विद्यासु निष्णाता-सभी विद्याओं में पारंगत-सप्तमी तत्पु0।
अन्वेषणम्- अनु+इष्+ल्युट्-खोज।
इत्यासीत्- इति आसीत्।
मतम्-मन्+क्त-विचार।
जाता- जन्+क्त+टाप्-हो चुकी है, है।

**अनुवाद:-**

तब महाराज शत्रुजित् का पुत्र ऋतध्वज प्रकृतिसौन्दर्य का अवलोकन करते हुए प्रवेश करते हैं।

**ऋतुध्वज**-अहो! गन्धर्वराज विश्वावसु का राजोद्यान तो अत्यधिक सुन्दर है। किस युवा का हृदय आम की मञ्जरियों की अद्‌भुत सुन्दरता को देखकर तथा कोयलों की मीठी बोली सुनकर सहसा ही उत्कण्ठित नहीं हो जायेगा?

बाई ओर युवतियों की बातचीत-सी सुनाई दे रही है। यहीं रुककर उनकी बातचीत सुनता हूँ।

**कुण्डला**-ओ सखी मदालसा! तुम केवल विद्या के अध्ययन में लगी हुई कब तक ब्रह्मचर्यव्रत धारण करोगी?

**मदालसा**-ज्ञान का सागर तो अत्यधिक गहरा और अन्तहीन होता है। मैंने तो उस समुद्र के तट पर स्थित होकर अब तक उसकी कुछ बिन्दुएँ ही प्राप्त की हैं।

**कुण्डला**- ओ विनयशील (शिष्ट)! तुम ऐसा इसलिए कह रही हो कि विद्या विनय देती है। गन्धर्वराज को कुलगुरु तुम्बरू महोदय ने कुछ और ही कहा है। (सूचित किया है)

**मदालसा**- गुरुदेव ने पिताजी को मेरे विषय में जो कहा, क्या तुमने वह सुन लिया है?

**कुण्डला**- और क्या? राजकुमारी मदालसा सभी विद्याओं में पारङ्गत हो गई है, लेकिन अब तक उसने स्वयं ही अपने वर का चयन नहीं किया है, अत: उसके लिए योग्य वर ढूँढने का कार्य हमें करना चाहिए, यह गुरुवर का मत था।

**विमर्श:-**

इस नाट्यांश में राजकुमारी मदालसा का विद्या के प्रति अनुराग और उसका विनय स्पष्टत: परिलक्षित हो रहा है। गुरु की दृष्टि में सभी विद्याओं में निष्णात होने पर भी वह स्वयं को ज्ञान की कुछ बूँदों की अधिकारिणी मानती हैं।

**अभ्यास प्रश्नाः-**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

क- राजोद्यानं कीदृशम् आसीत्?
ख- कुत्र रमणीनाम् आलाप: श्रूयते?
ग- अनन्तपार: क:?
घ- का विनयं ददाति ?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

क- यूनां हृदयं कथम् उत्कण्ठितं भविष्यति?
ख- मदालसा सागरतटे स्थित्वा किं प्राप्तवती?
ग- गुरुपादानां किं मतम् आसीत्?
घ- मदालसा कस्मिन् एव रता आसीत्?

**3. यथानिर्देशम् उत्तरत-**

क- ''वार्तालाप:'' इति पदस्य समानार्थकपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत?
ख- ''कियन्तं कालम्'' इत्यनयो: पदयो: किं विशेषणपदम्?
ग- ''कस्य यूनो हृदयम् उत्कण्ठितं न भविष्यति'' इत्यस्मिन् वाक्ये किं कर्तृपदम्?
घ- ''किं श्रुतं त्वया'' इत्यत्र 'त्वया' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः-**

**मदालसा** - (हसित्वा) नहि जानन्ति ते यदहं तु विवाहबन्धनं स्वीकर्तुं न इच्छामि।
**कुण्डला** - किं करिष्यसि तदा।
**मदालसा** - ब्रह्मवादिनी भविष्यामि। आचार्येतिपदं प्राप्य शिष्येभ्य: जीवनकलां शिक्षयिष्यामि।
**कुण्डला** - जाने तेऽभिरुचिम् अध्ययने अध्यापने च। परं यथा लतेयं सहकारमवलम्बते तथैव नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरम् अपेक्षते य: तस्या: अवलम्बनं स्यात्।
**मदालसा** - नास्ति मत्कृते आवश्यकता अवलम्बनस्य। स्वयं समर्था जीवनपथे चलितुमहं न कस्यापि सङ्केतै: नर्तितुं पारयामि।
**कुण्डला** - नर्तिष्यसि तदा एकाकिनी एव।
**मदालसा** - (विहस्य) यदि त्वं शीघ्रमेव पतिगृहं गमिष्यसि तदा एकाकिनी भविष्यामि परं एक: उपाय: अपि चिन्तित: मया।
**कुण्डला** - क: उपाय?
**मदालसा** - सङ्गीतसाहित्यमाध्यमेन ब्रह्मविद्यां सरसां विधाय बहुभ्य: शिशुभ्य: शिक्षणं प्रदास्यामि।

**पदार्थाः-**

आचार्येति - आचार्या+ इति, आचार्या-आचार्य+टाप्।
जीवनकलाम् - जीवनस्य कलाम्, जीने की कला को, (ष0 तत्पु0)।
तेऽभिरूचिम् - ते+अभिरुचिम्-तुम्हारी अभिरूचि को।
सहकारम् - आम के पेड़ को।
अवलम्बते - अवलम्बनं करोति-सहारा लेता है/लेती है।
लतेयम् - लता+इयम्।
नर्तुिम् - नृत+तुमुन्-नाचने के लिए।
एकाकिनी - एकाकिन्+ङीप्, अकेली।
पतिगृहम् - पत्युः गृहम्, ष0 तत्पु0।
सरसाम् - रसेन सह विद्यमाना सरसा ताम् (बहु ब्री0) स्त्री0द्वि0ए0व0।
विधाय - वि+धा+ल्यप्-कृत्वा-करके।
ब्रह्मविद्याम् - अध्यात्मविद्या को।

**अनुवादः-**

मदालसा (हंसकर) - वे लोग यह नहीं जानते कि मैं तो विवाह का बन्धन स्वीकार करना ही नहीं चाहती/विवाह करना ही नहीं चाहती।

कुण्डला - तब क्या करोगी?

मदालसा - ब्रह्मवादिनी (वेदान्त की ज्ञाता) बनूंगी। आचार्य का पद पाकर शिष्यों को जीवन की कला सिखाऊंगी।

कुण्डला - मै जानती हूँ कि तुम्हारी अध्ययन और अध्यापन में रूचि है। पर जिस प्रकार यह लता आम के पेड़ का अवलम्बन (सहारा) लेती है उसी प्रकार स्त्री भी अपनी जीवनयात्रा में किसी सहचर की अपेक्षा करती है जो उसका सहारा बन सके।

मदालसा - मेरे लिए किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है। मैं जीवन के पथ पर चलने में स्वयं ही समर्थ हूँ। मैं किसी के इशारे पर नाच नहीं सकती।

कुण्डला - तो अकेले ही नाचोगी।

मदालसा (हंसकर) - हां, तुम यदि शीघ्र ही पति के घर चली जाओगी तब जरूर अकेली हो जाऊंगी, पर मैंने एक उपाय सोच लिया है।

कुण्डला - कौन सा उपाय?

मदालसा - सङ्गीत और साहित्य के माध्यम से ब्रह्मविद्या को सरस बनाकर बहुत से बच्चों को शिक्षा दूंगी।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

क- मदालसा किं स्वीकर्तुं न इच्छति?
ख- आचार्येति पदं प्राप्य सा केभ्यः जीवन कलां शिक्षयिष्यति?
ग- कस्याः कृते अवलम्बनस्य आवश्यकता नास्ति?
घ- मदालसा कैः नर्तितुं न पारयति?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

क- जीवन यात्रायां नारी किम् इच्छति?
ख- कुण्डला मदालसायाः रुचिविषये किं जानाति?
ग- मदालसा कथं शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यति?
घ- मदालसा कदा एकाकिनी भविष्यति?

**3. यथानिर्देशम् उत्तरत-**

क- ''जाने तेऽभिरूचिम् अध्ययने अधयापने च'' इत्यस्मिन् वाक्ये 'ते' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
ख- ''नर्तिष्यासि तदा एकाकिनी एव'' इत्यस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?
ग- ''नहि जानन्ति ते----इच्छामि" इति वाक्ये किं कर्तृपदम्?
घ- ''असमर्थाः'' इति पदस्य विलोमपदं लिखत।

**मूलपाठः-**

**कुण्डला** - गृहस्थाश्रमं प्रविश्य स्वशिशूनां चरित्रनिर्माणं मातुराधीनम्। तत्र का विचारणा?

**मदालसा** - यथाहं पश्यामि पुरुषः भार्यायां स्वाधिपत्यं स्थापयति। द्रौपदीं स्वीयां सम्पर्त्तिं मन्यमानः युधिष्ठिरः तां द्यूते हारितवान् यथा सा निर्जीवं वस्तु आसीत्।

**कुण्डला** - निर्जीवं तु नासीत् परं युधिष्ठिरस्य एषा एव चिन्तनसरणिः आसीत् इति प्रतीयते।

**मदालसा** - हरिश्चन्द्रः स्वपत्नीं शैव्यां, पुत्रं रोहितं च जनसङ्कुले आपणे विक्रीतवान्। नास्ति मे मनोरथः ईदृशं पत्नीपदमङ्गीकर्तुम्।

**कुण्डला** - कटु सत्यं खल्वेतत्। परं सखि! अस्मिन् संसारे विभिन्नप्रकृतिकाः पुरुषा वसन्ति। स्वप्रकृत्यनुकूलः वरः अपि प्राप्यते।त्वं तु नवनवोन्मेषशालिन्या प्रतिभया विहितैः नूतनैः प्रयोगैः अस्मान् सर्वान् विस्मापयसि। गृहस्थाश्रमोऽपि एका प्रयोगशाला यस्यां त्वं स्वज्ञानविज्ञानयोः प्रयोगं कर्तु शक्ष्यसि।

**मदालसा** - कुण्डले! दुर्लभो जनः ईदृशः यः गृहस्थप्रयोगशालायां स्वपत्न्यै स्वतन्त्रतां दद्यात्।

**पदार्थाः-**

| | | |
|---|---|---|
| गृहस्थाश्रमम् | – | गृहस्थ+आश्रमम्, गृहे स्थितः-गृहस्थः। |
| मातुराधीनम् | – | मातुः+आधीनम्/?अधीनम्/(आसमन्तात् अधीनम् इति)। |
| विचारणा | – | वि+चर्+णिच्+युच्+टाप्-चिन्तन, विचार-विमर्श। |
| स्वाधिपत्यम् | – | स्व+आधिपत्यम्, अपना स्वामित्व/सर्वोपरिता। |
| मन्यमानः | – | मन्+शानच्-मानता हुआ। |
| द्यूते | – | जुए में। |
| हारितवान् | – | हार गया (हृ, णिच् + क्तवतु) |
| जनसङ्कुले | – | जनैः सङ्कुले-लोगों से भरी भीड़ में। |
| आपणे | – | बजार में। |
| विक्रीतवान् | – | वि+क्री+क्तवतु-बेच दिया। |
| खल्वेतत् | – | खलु+एतत्। |
| विभिन्नप्रकृतिकाः | – | विभिन्नाः प्रकृतयः येषां ते-भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले (बहुब्रीहि) |
| नवोन्मेषः | – | नव+उन्मेषः (उद्+मिष्+घञ्)-प्रकाश/कौंध/दीप्ति/आँख का खुलना |
| प्रकृत्यनुकूलः | – | प्रकृति+अनुकूलः, प्रकृतेः अनुकूलः-ष0 तत्पुरुष- स्वभाव के अनुकूल |
| नवनवोन्मेषशालिन्या | – | नवनवेन उन्मेषेण शालते या तया, नए नए प्रकाश की किरणों से पूर्ण है जो उससे। |
| विस्मापयसि | – | वि+स्मि+णिच्, लट्लकार म0 पु0 ए0 व0-विस्मित करती हो। |
| विहितैः | – | (वि+धा+क्त, तृ0 बहु0 व0)-किए हुए। |

**अनुवादः-**

| | | |
|---|---|---|
| कुण्डला | – | गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर अपने बच्चों के चरित्र का निर्माण माँ के अधीन होता है। इस विषय में तुम्हारा क्या विचार है? |
| मदालसा | – | जैसा मैं देखती हूँ कि पुरुष अपनी पत्नी पर आधिपत्य (स्वामित्व) स्थापित करता है। युधिष्ठिर द्रौपदी को अपनी सम्पत्ति मानते हुए उसे जुए मे हार गया मानो वह कोई निर्जीव वस्तु हो। |
| कुण्डला | – | निर्जीव तो नहीं थी, पर ऐसा प्रतीत होता है मानो वह युधिष्ठिर की दृष्टि में/सोच में (चिन्तन के मार्ग में) निर्जीव हो। |
| मदालसा | – | हरिश्चन्द्र ने अपनी पत्नी शैव्या और पुत्र रोहित को भीड़ भरे बाजार में बेच दिया। मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं कि मैं ऐसा पत्नी-पद प्राप्त करूँ। |
| कुण्डला | – | निश्चय ही यह कड़वा सच है। पर सखी! इस संसार में भिन्न-भिन्न स्वभाव वाले पुरुष रहते हैं। अपने स्वभाव के अनुकूल वर भी पाया जाता है। तुम तो नई-नई |

और दीप्तिमती प्रतिभा से किए गए नए-नए प्रयोगों से हम सभी को विस्मय में डाल देती हो। गृहस्थाश्रम भी एक प्रयोगशाला ही है, जिसमें तुम अपने ज्ञान-विज्ञान का प्रयोग कर सकती हो।

मदालसा - सखि कुण्डले! ऐसा पुरुष दुर्लभ ही है जो गृहस्थी रूपी प्रयोगशाला में अपनी पत्नी को स्वतंत्रता दे।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

क- केषां चरित्रनिर्माणं मातुराधीनम्?
ख- पुरुषः कस्याम् आधिपत्यं स्थापयति?
ग- अस्मिन् संसारे कीदृशाः पुरुषाः वसन्ति?
घ- स्वप्रकृत्यनुकुलः कः प्राप्यते?

**विमर्शः-**

स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्वामिनी मदालसा को विवाह का बन्धन स्वीकार्य नहीं, क्योंकि वह कहती है कि मैं स्वयं समर्थ हूँ, शिक्षिता हूँ, किसी के इशारे पर नाचना मेरे वश में नहीं। संस्कृत साहित्य में मुखर स्त्री-विमर्श के रूप में मदालसा के इस कथन को रखा जा सकता है पर साथ ही जीवन का एक ध्येय निश्चित है-वेदान्त के शुष्क ज्ञान को साहित्य और सङ्गीत के माध्यम से बच्चों को शिक्षा देना, जिससे बालकों की रूचि ब्रह्मविद्या की ओर आकर्षित हो।

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

क- द्रौपदीं स्वीयां सम्पत्तिं मन्यमानः युधिष्ठिरः किं कृतवान्?
ख- हरिश्चन्द्रः कान् विक्रीतवान्?
ग- मदालसा कथं सर्वान् विस्मापयति?
घ- कीदृशः जनः दुर्लभः?

**3. यथानिर्देशम् उत्तरत-**

क- ''नास्ति मे मनोरथः'' इत्यस्मिन् वाक्ये 'मे' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
ख- ''स्वीयां सम्पत्तिं'' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?
ग- ''मार्गः'' इति पदस्य समानार्थकपदम् नाट्यांशात् चित्वा लिखत्?
घ- ''प्रतिकूलः'' इति पदस्य विलोमपदं लिखत।

**मूलपाठः-**

**ऋतध्वजः** - (स्वगतम्) अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम।(प्रकाशम्)उपस्थितोऽहं शत्रुजितः पुत्रः ऋतध्वजः आज्ञा चेत् अहमपि अस्यां परिचर्यायां सम्मिलितो भवेयम्।

**कुण्डला** – स्वागतम् अतिथये। अपि श्रुता: भवद्‌भि:मम सखीविचारा:?

**ऋतध्वज:** – आम्! अतएव प्रष्टुमुत्सहे किं गन्धर्वराजविश्वावसुमहाभागा: अपि स्वपत्नीं युधिष्ठिर इव हारितवन्त: हरिश्चन्द्र इव विक्रीतवन्त:?

**कुण्डला** – मदालसे तूष्णीं किमर्थं तिष्ठसि? देहि प्रत्युत्तरम्।

**ऋतध्वज:** – एकस्य अपराधेन सर्वा जाति: दण्ड्या इति विचित्रे न्याय: तव सख्या:।

**म्दालसा** – अत्रभवन्त: नारीस्वाधीनतामधिकृत्य किं कथयन्ति?

**ऋतध्वज:** – माता एव प्रथमा आचार्या इत्यस्ति मे अवधारणा। नारी एव समस्तसृष्टे: निर्मात्री। परं कथनेन किम्? परीक्ष्य एव ज्ञास्यति अत्रभवती। परीक्षार्थमुद्यतोऽस्मि गृहस्थाश्रमप्रयोगशालायाम्।

**मदालसा:** – स्वीकृत: प्रस्ताव:।

**कुण्डला** – दिष्ट्या वर्धेथां युवाम्। मित्रवर, गन्धर्वकन्या मदालसा गान्धर्वविवाहविधिना वृणोति अत्रभवन्तम्। आकारये अहं कुलगुरुं तुम्बुरुम्। असौ अग्निं साक्षीकृत्य आशीर्वचांसि वक्ष्यति।

**पदार्था:-**

| | |
|---|---|
| अवसरोऽयमात्मानम् | – अवसर:+अयम्+आत्मानम्। |
| उपस्थितोऽहम् | – उपस्थित:+अहम्। |
| प्रष्टुमुत्सहे | – प्रष्टुम् उत्सहे-प्रष्टुम्-पृच्छ्+तुमुन्-पूछने के लिए। |
| तूष्णीम् | – (अव्यय)-चुपचाप। |
| प्रत्युत्तरम् | – प्रति+ उत्तरम् |
| अवधारणा | – अव+धृ,णिच्+ल्युट्-अवधारण+टाप्, निश्चय। |
| परीक्ष्य | – परि+ईक्ष्+ल्यप्, जॉच कर। |
| परीक्षार्थमुद्यतोऽस्मि | – परीक्षा+अर्थम्+उद्यत:+अस्मि। |
| दिष्ट्या | – भाग्य से। |
| वर्धेथाम् | – वृध्,लोट्लकार,म0पु0द्वि0-तुम दोनों बढ़ो। |
| वृणोति | – वरण करती है। |
| अत्रभवान्/तत्रभवान् | – पुरुष के लिए सम्मानसूचक शब्द। |
| अत्रभवती/तत्रभवती | – स्त्री के लिए सम्मानसूचक शब्द। |

**अनुवाद:-**

**ऋतध्वज** – (मन ही मन) अपने आप को प्रकट करने का यही अवसर है। (प्रकट में) मैं शत्रुजित् का पुत्र ऋतध्वज उपस्थित हूँ। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं भी इस परिचर्चा में सम्मिलित होना चाहता हूँ।

**कुण्डला** – अतिथि! आपका स्वागत है। क्या आपने मेरी सखी के विचार सुने?

**ऋतध्वज** – हाँ सुने। इसीलिए पूछना चाहता हूँ कि क्या गन्धर्वराज विश्वावसु महोदय ने भी अपनी पत्नी को युधिष्ठिर की भाँति हार गये या हरिश्चन्द्र की भाँति बेच दिया।

**कुण्डला** – ओ मदालसा, चुप क्यों हो? इस प्रश्न का उत्तर दो।

**ऋतध्वज** – तुम्हारी सखी का तो यह विचित्र न्याय है कि एक के द्वारा किए गए अपराध के लिए सम्पूर्ण जाति दण्डनीय है।

**मदालसा** – श्रीमान् नारी-स्वतंत्रता के विषय में क्या कहते हैं?

**ऋतध्वज** – मेरी राय यह है कि माता ही पहली शिक्षिका है। नारी ही सम्पूर्ण संसार को बनाने वाली है। पर कहने से क्या? परीक्षा करके ही आप जान पाएंगी। इस गृहस्थाश्रम रूपी प्रयोगशाला में मैं परीक्षा के लिए तैयार हूँ।

**मदालसा** – मैंने आपका प्रस्ताव स्वीकार किया।

**कुण्डला** – आप दोनों को बहुत-बहुत बधाई। मित्रवर! गन्धर्वराजपुत्री मदालसा गान्धर्वविवाह की विधि से आपका वरण करती हैं। मैं कुलगुरु तुम्बुरु को बुलाती हूँ। वे अग्नि को साक्षी मानकर आशीर्वचन बोलेंगे।

**विमर्शः-**

इस नाट्यांश में मदालसा के पुरुष विषयक एकांगी विचारधारा का खण्डन लेखिका ऋतध्वज के माध्यम से करवाती हैं। ऋतध्वज स्पष्टतः कहता है कि तुम्हारे आसपास ही अनेक अच्छे पुरुष विद्यमान हैं सो उन्हें देखकर तुम अपने जीवन का निर्णय लो न कि दो चार खराब पुरुषों को देखकर सम्पूर्ण पुरुष जाति पर लांछन लगाओ। इस नाट्यांश में स्त्री के स्वयं पतिचयन के अधिकार को और नारीस्वतंत्रता के पक्षधर पुरुष की विचारधारा को रेखांकित किया गया है।

**अभ्यास प्रश्नाः-**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

क- कुण्डला कां प्रत्युत्तरं दातुं कथयति?
ख- नारीः कस्याः निर्मात्री?
ग- कया ऋतध्वजस्य प्रस्तावः स्वीकृतः?
घ- कुलगुरुः तुम्बुरुः किं वक्ष्यति?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

क- ऋतध्वजः कस्यां सम्मिलितो भवितुम् इच्छति?

ख- मदालसायाः कः विचित्रः न्यायः आसीत्?

ग- ऋतध्वजः किमर्थम् उद्यतः आसीत्?

घ- मदालसा केन विधिना ऋतध्वजं वृणोति?

**3. यथानिर्देशम् उत्तरत-**

क- ''मौनम्'' इत्यस्य समानार्थकपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

ख- ''पराधीनता'' इत्यस्य विलोमपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

ग- ''आज्ञा चेत्--भवेयम्'' इत्यस्मिन् वाक्ये किम् अव्ययपदम्?

घ- ''प्रथमा आचार्या'' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?

ङ- ''आकारये--तुम्बुरुम्'' इत्यस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?

च- ''अपि श्रुताः--विचाराः'' इत्यस्मिन् वाक्ये ''भवद्भिः'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

**मूलपाठः-**

**ऋतध्वजः** - प्रथमं तु सखीवचनं श्रोष्यावः। तदनु स्वयमेव कुलगुरुं पितरौ च सभाजयितुं गमिष्यावः।

**कुण्डला** - परस्परप्रीतिमतोः भवतोः उपदेशस्य नास्ति कोऽपि अवकाशः, तदापि सखीस्नेहः मां भाषयति-'भर्त्रा सदैव भार्या भर्तव्या रक्षितव्या च। यतो हि धर्मार्थकामसंसिद्धये यथा भार्या भर्तुः सहायिनी भवति तथा न कोऽपि अन्यः। परस्परमनुव्रतौ पतिपत्न्यौ त्रिवर्गं साधयतः। पतिः यदि प्रभूतं धनम् अर्जयित्वा गृहमानयति तत् खलु पत्न्यभावे कुपात्रेषु दीयमानं क्षयमेति।

**ऋतध्वजः** - लक्ष्म्याः रक्षार्थं पत्न्याः सहयोगः अनिवार्यः।

**मदालसाः** - कुण्डले! लक्ष्मीपूजायां न मे प्रवृत्तिः। यदि लक्ष्मीः पूज्या प्रिया च अतिथिवर्यस्य, तदा इदानीमेव मे नमस्कारः।

**ऋतध्वजः** - स्वाभिमानिनि प्रिये! समक्षं ते कथं कापि सपत्नी स्थातुं शक्नोति? लक्ष्मीस्तु तव दासी भविष्यति नैव सपत्नी। मद्गार्हस्थ्यं तु त्वदधीनं भविष्यति। आत्मानं भाविसन्ततिं च ज्ञानविज्ञानानुसन्धत्र्या हस्ते समर्पयितुमीहे। आगम्यताम् गुरुभ्यः पितृभ्यां च समाचारं श्रावयावः।

**पदार्थाः-**

त्रिवर्गः - सांसारिक जीवन के तीन पदार्थ-धर्म, अर्थ और काम।

तीन स्थितियाँ - हानि, स्थिरता और वृद्धि।

सभाजयितुम् - सभाज्+तुमुन्-प्रणाम करने के लिए।

अनुव्रतौ - निष्ठावान्(द्वि0व0)।

प्रीतिमतोः - प्रीति+मतुप्, षष्ठी द्वि0 व0- प्रेम से युक्त का।

सखीस्नेहः - सख्याः स्नेहः, सखी का प्रेम षष्ठी तत्पु0।

भाषयति - बुलवाता है, भाष्+णिच् लट्लकार प्र0 पु0 ए0 व0।

भर्तव्या - भृ+तव्यत्+टाप्, स्त्री-भरण पोषण किया जाना चाहिए।

धर्मार्थकामसंसिद्धये- धर्मः च अर्थः च कामः च धर्मार्थकामाः तेषां संसिद्धिः तस्यै धर्म, अर्थ और काम (पुरुषार्थ) की सिद्धि के लिए।

दीयमानम्ः - दा+शानच् दिया जाता हुआ।

सपत्नी - समानः पतिः यस्याः सा, सौत।

ज्ञानविज्ञानानुसन्धत्र्याः- ज्ञान और विज्ञान की अनुसंधान करने वाली के, ईहे-ईह्, लट्लकार उ0पु0ए0व0-चाहता हूँ।

**अनुवादः-**

ऋतध्वजः - पहले तो हम सखी (आपकी/कुण्डला की) की बातें सुनेंगे। उसके बाद स्वयं कुलगुरु और माता- पिता को प्रणाम करने जाएँगे।

कुण्डला - परस्पर प्रेम से भरे हुए आप दोनों को उपदेश देने की कोई आवश्यकता नहीं, फिर भी सखी के स्नेह के कारण मैं बोल रही हूँ (सहेली का स्नेह मुझे बुलवा रहा है)-"पति के द्वारा हमेशा ही पत्नी का भरण-पोषण और रक्षण होना चाहिए। क्योंकि धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि में जिस प्रकार पत्नी, पति की सहायिका होती है, वैसा कोई अन्य नहीं होता। एक दूसरे से निष्ठावान् पति और पत्नी त्रिवर्ग को अपने वश में कर लेते हैं। यदि पति बहुत सारा धन कमाकर घर लाता है तो वह धन पत्नी के न रहने पर कुपात्रों को दिया जाता हुआ क्षीण हो जाता है।

ऋतध्वज - हाँ, लक्ष्मी की रक्षा के लिए पत्नी का सहयोग अनिवार्य है।

मदालसा - कुण्डला, लक्ष्मी की पूजा में मेरी रुचि नहीं। यदि सम्मानित अतिथि के लिए लक्ष्मी प्रिय और पूजनीय है, तो अभी ही इनको नमस्कार है।

ऋतुधवज - ओ स्वाभिमानिनी प्रिया! तुम्हारे सामने तुम्हारी सौत कैसे रह सकती है? लक्ष्मी तुम्हारी सौत नहीं हो सकती दासी हो सकती है। मेरी गृहस्थी तो तुम्हारे अधीन होगी। स्वयं को और अपनी होने वाली सन्तान को ज्ञान और विज्ञान की खोज करने वाली के हाथों सौंपना चाहता हूँ। आओ गुरुवर और माता-पिता को समाचार सुनाते हैं।

**अभ्यास प्रश्नाः-**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

क- कः कुण्डलां भाषयति?

ख- केन भार्या रक्षितव्या?

ग- कौ त्रिवर्गं साधायतः?

घ- कस्यां रक्षार्थं पत्न्याः सहयोगः अनिवार्यः?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

क- धानं कथं क्षयमेति?

ख- ऋतध्वजः आत्मानं कस्य हस्ते समर्पयितुम् इच्छति?

ग- कयोः कृते उपदेशस्य आवश्यकता नास्ति?

घ- भार्या कुत्र भर्तुः सहायिनी भवति?

**3. यथानिर्देशम् उत्तरत-**

क- ''सेविका'' इत्यस्य समानार्थकपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

ख- ''परोक्षम्'' इत्यस्य विलोमपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत।

ग- ''परस्परमनुव्रतौ पतिपत्न्यौ'' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम?

घ- ''लक्ष्मीपूजायां न मे प्रवृत्तिः'' इत्यस्मिन् वाक्ये 'मे' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

**परामर्शाः-**

क- नाट्यांश के सभी पात्रों के संवादों का छात्रों द्वारा अभिनयपूर्वक वाचन करवाएँ।

ख- अभिनय करते समय छात्रों की भाव-भंगिमा पर दृष्टि डालें और उन्हें भावानुसार वाचन और अभिनय हेतु प्रेरित करें।

ग- विद्यार्थियों के मन में सहानुभूति और निर्णय क्षमता आदि कौशलों के विकास के लिए उस परिस्थिति में मदालसा द्वारा पहले और बाद में लिए गए निर्णयों की समीक्षा के लिए उन्हें प्रेरित करें।

**अनुभवविस्तारः-**

प्रसिद्ध आधुनिक लेखिका श्रीमती वेद कुमारी घई द्वारा रचित पुरन्ध्रीपंचकम् नामक नाटक में स्त्री-स्वातंत्र्य के नाम पर समाज में फैल रहे मिथ्या भ्रम को दूर करने का यथोचित प्रयास किया गया है। समाज में न सभी पुरुष अच्छे होते हैं और न सभी स्त्रियाँ। इसलिए कुछ खराब निदर्शनों को देखकर विवाहबन्धन को ही अस्वीकार कर देना कथमपि तर्कसंगत नहीं है। समाज के स्वस्थ-विकास के लिए स्त्री-पुरुष का परस्पर विश्वास, प्रेम, समर्पण और सकारात्मक सहयोग वांछित होता है।

# प्रतीक्षा

**( दशमः पाठः )**

**पाठपरिचयः**

प्रस्तुत पाठ 'प्रतीक्षा' मूर्धन्य उड़िया लेखक श्री रमाकान्त रथ की कविता का संस्कृत अनुवाद है। श्री रथ की कविताओं का देश-विदेश की भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। इसी क्रम में राधा-कृष्ण के प्रेम को प्रदर्शित करने वाले गीतों का अनुवाद संस्कृत-भाषा में श्री गोविन्द चन्द्र उद्गाता ने 'श्रीराधा' शीर्षक से किया है। कृष्ण की प्रतीक्षा करती हुई राधा प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों में उनकी छवि देखती है तथा विविधरूपों में उनका दर्शन करती है। भक्त व आराध्य के प्रेम की भाँति इसमें भी एक औदात्य है, प्रतीकात्मकता है। जिस प्रकार भक्त को कण-कण में अपने आराध्य दृष्टिगोचर होते हैं, उसी प्रकार राधा को भी कृष्ण दिखाई देते हैं।

1. **प्रतीक्षेऽहं तव कृते दिनं दिनं, रजनीं रजनीं च।**
**न जातु दर्शनं ददासि मे, किं तावन्मे सा प्रतीक्षा?**
**तस्यां मे चांचल्यपरिपूरितायां प्रतीक्षायाम्,**
**कुत्र वा विद्यते स्थानम् अवस्थानाय तव पूर्णतया?**

**अन्वयः-**

अहं दिनं दिनं रजनीं रजनीं च तव कृते प्रतीक्षे (किन्तु) (त्वं) मे जातु दर्शनं न ददासि, सा तावत् मे प्रतीक्षा किम्?

अथवा चांचल्यपरिपूरितायां तस्यां मे प्रतीक्षायां तव पूर्णतया अवस्थानाय स्थानं वा कुत्र विद्यते?

**पदार्थाः-**

**जातु**-(कदाचित्) = कभी भी, **मे** - (मह्यम्)-मुझे अथवा (माम्) मुझको।

**चांचल्यपरिपूरितायाम्** -(चंचलतायाः भावः चांचल्यम्, तेन परिपूरितायां भरितायाम् इति भावः) चपलता से भरी हुई, **स्थानम्** - अवकाश, **अवस्थानाय** - ठहरने के लिए, **पूर्णतया** - पूरी तरह से,

**सरलानुवादः-**

(राधा जी श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा करती हुई कहती है कि) मैं दिन-दिन व रात-रात (भर) तुम्हारे लिए प्रतीक्षा करती रहती हूँ, (किन्तु) तुम मुझे कभी भी दर्शन नहीं देते हो तो तेरी उस प्रतीक्षा का क्या (लाभ)? (या फिर) चंचलताओं से भरी हुई मेरी उस प्रतीक्षा में तुम्हारे पूरी तरह से ठहरने (रुकने) के लिए अवकाश भी कहाँ है? अर्थात् प्रतीक्षा इतनी चंचल है कि तुम उसमें पूरी तरह ठहर ही नहीं सकते हो।

**विमर्शः-**

प्रतीक्षे-प्रति+ईक्ष्, उ.पु.ए.व., तावन्मे-तावत्+मे। अवस्थानाय-अव+स्था+ ल्युट्, च.ए.व, विद्यते-विद्+लट् प्र.पु. गीत होने के कारण इसमें छन्द का अभाव है किन्तु लयात्मकता है।

2. **यदा वा दृश्यते रूपस्यार्धाधिकं तदा तव**
**लोचनविषयातीतं भूत्वा तिष्ठति।**
**यत् किंचिदपि दृश्यते तथापि न भजति स्पष्टरूपताम्।**
**यतस्तत् समाच्छन्नमेव भवति अशान्तिप्रसूतैर्मे**
**स्मृति दृश्याभिलाषैर्बहुविधैः।**

**अन्वयः-**

यदा वा दृश्यते, तदा तव रूपस्य अर्धाधिकं लोचनविषयातीतं भूत्वा तिष्ठति। यत् किंचिद् अपि दृश्यते तथापि स्पष्टरूपतां न भजति, यतः तत् अशान्तिप्रसूतैः मे बहुविधैः स्मृति-दृश्य-अभिलाषैः समाच्छन्नम् एव भवति।

**पदार्थाः-**

**वा** - यदि, **लोचनविषयातीतं** - आँखों के विषय के बाहर (अदृश्य/ओझल), **तिष्ठति** - रहता है। **स्पष्टरूपताम्** - (स्पष्टाकारताम्) साफ-साफ (दिखाई देना), **समाच्छन्नम्** - ढका हुआ/ आच्छादित, **अशान्ति-प्रसूतैः** - (अशान्त्या समुत्पन्नैः) अशान्ति (चपलता) से उत्पन्न, **बहुविधैः** - (बहुप्रकारकैः)- अनेक प्रकार के, **स्मृति-दृश्य-अभिलाषैः** - यादें, चित्र एवं इच्छाओं से।

**सरलानुवादः-**

यदि (कभी तुम्हारा रूप) दिखाई भी देता है, तो (तब भी) तुम्हारे रूप का आधे से अधिक भाग तो आँखों के बाहर ही रह जाता है, (अर्थात् आँखों में समा ही नहीं पाता), और जो कुछ (थोड़ा बहुत) दिखाई भी देता है, वह भी स्पष्टरूपता को प्राप्त नहीं कर पाता अर्थात् साफ-साफ नहीं दिखाई देता, क्योंकि वह (दिखने वाला रूप भी) प्रायः मेरे (मन की) अशान्ति से उत्पन्न अनेक प्रकार की यादों, चित्रों तथा इच्छाओं से ही ढका हुआ रहता है। अर्थात् जो थोड़ा बहुत तुम्हारा रूप मेरे आँखों से दिखाई भी देता है, उसमें पुरानी यादों, दृश्यों तथा इच्छाओं की छाया ही अधिक दिखती है।

**विमर्शः-**

भाव यह है कि श्रीकृष्ण का रूप सौंदर्य अप्रतिम है, जो राधा जी की आँखों में पूर्णतया नहीं समा पाता है। भक्त जिस प्रकार ईश्वर की कल्पना अपनी पुरानी यादों, चित्रों तथा इच्छाओं के अनुरूप करता है, उसी प्रकार राधा जी भी श्रीकृष्ण के रूप को देख रही हैं।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**प्रोक्तं गीतद्वयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) 'प्रतीक्षा' पाठस्य संस्कृतानुवादकः कः?
(ख) का प्रतीक्षां करोति?
(ग) लोचनविषयातीतं भूत्वा किं तिष्ठति?
(घ) कः दर्शनं न ददाति?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) प्रतीक्षायां कस्मै स्थानं न विद्यते?
(ख) श्रीकृष्णस्य रूपं राधाया: कै: समाच्छन्नं भवति?

**3. यथानिर्देशमुत्तरत–**

(क) 'प्रतीक्षेऽहम्' अत्र कर्तृपदं किम्?
(ख) 'सा प्रतीक्षा' अनयो: विशेषणपदं किम्?
(ग) 'मे' इत्यस्य किं विलोमपदं गीते प्रयुक्तम्?

3. **अथ वा दृश्यसे स्फुरज्जलवक्षसि,**
**छायेव पादपानामुपकूलवर्तिनाम्।**
**दृष्टे सति कस्यचिन्नाम्नो रूपे**
**स्थाने तस्योपजायमानं दृश्यते।**
**अन्यच्चन किंचन रूपं नामान्तर-चिह्नितम्।**
**एकमेव रूपं भूत्वा।**
**हन्त नाहं भाजनमभवमेतावताऽपि कालेन**
**एकमेव रूपं कर्तुमात्मनः पूर्णतया।।**

**अन्वयः–**

अथ स्फुरत् जलवक्षसि उपकूलवर्तिनां पादपानां छाया इव वा दृश्यसे। कस्यचित् नाम्न: रूपे दृष्टे सति तस्य स्थाने एकम् एव रूपं भूत्वा अन्यच्चन किंचन नामान्तर–चिह्नितं रूपम् उपजायमानं दृश्यते। हन्त! अहम् एतावता कालेन अपि एकम् एव रूपं पूर्णतया आत्मन: कर्तुं भाजनं न अभवम्।

**पदार्थाः–**

**स्फुरत्** – काँपते हुए/ हिलते हुए, **जलवक्षसि** – पानी के ऊपर, **उपकूलवर्तिनाम्** – किनारे पर स्थित, **अन्यच्चन** – और ही, **उपजायमानम्** – (उप+जनि+शानच्) – उत्पन्न होता हुआ, **नामान्तर** – (अन्तरं नाम – नामान्तरम्) – अन्य नाम (नामान्तरेण चिह्नितम्) से चिह्नित्, **हन्त** – दुर्भाग्य, **भाजनम्** – (पात्रम्) = पात्र/योग्य।

**सरलनानुवादः–**

इसके उपरान्त यदि (कभी) हिलते हुए पानी की छाती पर (जल के ऊपर) किनारे पर स्थित पेड़ों की छाया की भाँति दिखते हो। किसी (विशेष) नाम और रूप में दिखने पर भी (मेरी दृष्टि में) उसके स्थान पर एक ही रूप होकर भी अन्य ही कोई नाम और चिह्न वाला रूप उत्पन्न होता हुआ सा दिखाई देता है। हाय! (मेरा दुर्भाग्य) कि मैं इतना समय बीतने पर भी (तुम्हारे) एक ही रूप को पूरी तरह अपना बनाने के योग्य (पात्र) नहीं हो पाई। अर्थात् जब भी मैं तुम्हारा कोई भी रूप देखती हूँ तो मुझे उसमें कई अन्य छवियाँ झिलमिलाती हुई दिखाई देती हैं। अत: कोई एक रूप मेरे हृदय में आत्मसात् नहीं हो पाता।

**विमर्शः–**

यहाँ भक्त ईश्वर के अनेक रूपों को निहारने तथा उनके अनन्त गुणों से प्रभावित होने के कारण उन्हें किसी एक रूप की सीमा में बाँधने में स्वयं को असमर्थ पाता है। ईश्वर की अनन्त शक्तियों का निदर्शन उक्त गीत के

माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

4. **किया‍न् पुनः कलो वर्तते शेषः**
**यदहं चिन्तयिष्यामि**
**यदसि त्वं तद्रूपतयाऽगत्य**
**एकदा समुपस्थास्यसि मदन्तिके**
**निर्जनवेलायां मे परमायुषः?**

**अन्वयः-**

पुनः कियान् कालः शेषः वर्तते यत् अहं चिन्तयिष्यामि-त्वं यत् असि एकदा तद्रूपतया मे परमायुषः निर्जनवेलायां मदन्तिके आगत्य समुपस्थास्यसि?

**पदार्थाः-**

**कियान्** - कितना, **तद्रपूतया** - उसी रूप में, **परमायुषः** - (परमः चासौ आयुः अथवा आयुषः परम्, तस्य) आयु के अन्तिम क्षणों में, **निर्जनवेलायाम्** - (निर्जना च सा वेला, तस्याम्) एकान्त के क्षणों में, **मदन्तिके** - मेरे पास **समुपस्थास्यसि** - (सम्+उप+स्था, लृट् म.पु.ए.व.) -उपस्थित होओगे।

**सरलानुवाद-**

अब और कितना समय शेष बचा है जो मैं सोचूँगी कि- तुम जो हो/जैसे हो, एक बार उसी रूप में (अपने वास्तविक रूप में) मेरी आयु के अन्तिम क्षणों में, जब मैं नितान्त अकेली रहूँ, (तब तुम) मेरे पास आकर उपस्थित होओगे? अर्थात् मैं कब तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँ।

**विमर्शः-**

यहाँ पर राधा जी अथवा भक्त का धैर्य डगमगाने लगा है कि प्रतीक्षा बहुत लम्बी हो गई है, ईश्वर या आराध्य के दर्शन को अब उसका मन व्याकुल है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**प्रोक्तं गीतद्वयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

1. **'एकपदेन उत्तरत-**

(क) तीरवर्तिनां केषां छाया दृश्यते?
(ख) भक्तः किं पूर्णतया आत्मनः कर्तुम् इच्छति?
(ग) अस्य गीतस्य वक्त्री का अस्ति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) राधा कदा यावत् श्रीकृष्णस्य प्रतीक्षां कर्तुं चिन्तयिष्यति?
(ख) एकस्य रूपस्य दृष्टे सत्यपि तत्र अन्यत् किं दृश्यते?

3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'यदहं चिन्तयिष्यामि' इत्यत्र कर्तृपदं किम्?
(ख) 'कालो वर्तते शेषः' इत्यत्र विशेषणपदं किम् अस्ति?

(ग) 'यदसि त्वम्' इत्यत्र 'त्वम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

**पाठोद्देश्यानि-**

(i) लेखक की काव्यकला से परिचय कराते हुए राधा-कृष्ण के उदात्त-प्रेम का निरूपण कराना।
(ii) राधा-कृष्ण के प्रेम के माध्यम से उपास्य-उपासक अथवा भक्त एवं भगवान् के शुद्ध प्रेम का परिचय कराना।
(iii) काव्य-कला का निरूपण करते हुए रहस्यवाद या छायावाद का प्रभाव स्पष्ट कराना।
(iv) विभिन्न काव्यतत्त्वों यथा- रस, छन्द, अलंकार आदि का बोध कराते हुए संस्कृत-काव्य की सरसता का आस्वादन कराना।
(v) गीत-गोविन्द आदि काव्यों से भाव-सम्य करते हुए उसकी छाया प्रस्तुत कविता में प्रदर्शित कराना।

**शिक्षणपरामर्शः -**

(i) गीत का गायन गति, यति, लय, स्वर ताल पूर्वक किया जा सकता है।
(ii) संस्कृत में अनूदित अन्य फिल्मी गीतों के साथ प्रस्तुत गीत का अभ्यास कराया जा सकता है।
(iii) गीति-नाट्यरूपान्तर करके गीत का कक्षा में प्रदर्शन कराया जा सकता है।

**अनुभवविस्तारः-**

(i) राधा-कृष्ण के प्रेम का उदात्तरूप प्रस्तुत करने वाले अन्य गीतों का संकलन करके उनकी कक्षा में प्रस्तुति कराई जा सकती है।
(ii) वर्तमान सन्दर्भ में आप राधा-कृष्ण के प्रेम को किस रूप में देखते हैं? क्या आज इतना उदात्त-प्रेम संभव है? इस विषय पर छात्रों को अपने अनुभव के आधार पर लिखने का निर्देश दिया जा सकता है।

# कार्याकार्यव्यवस्थितिः

**( एकादशः पाठः )**

**पाठपरिचयः**

प्रस्तुत पाठ श्रीमद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय से संकलित है। गीता का उपदेश अपने आरंभिक काल से ही समाज के लिए अत्यन्त प्रेरणाप्रद एवं उपयोगी रहा है। प्रस्तुत पाठ के अन्तर्गत एकत्रित पक्षों में भी दैवी संपद् तथा आसुरी संपद् का भेद बताते हुए आसुरी संपद् को बन्धन कराने वाली तथा अशान्ति, दुःख आदि का मूल बताया गया है, जीवन में सुख, शान्ति तथा मुक्ति पाने के लिए दैवी संपद् को प्राप्त करने तथा उसका अनुपालन करने का उपदेश दिया गया है। यही कार्य एवं अकार्य की व्यवस्था इस पाठ में प्रदर्शित की गई है।

**श्रीभगवानुवाचः**

**अभयं सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।**
**दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।1**

**अन्वयः-**

अभयं, सत्त्व-संशुद्धिः, ज्ञान-योग-व्यवस्थितिः, दानं, दमः च, यज्ञः, स्वाध्यायः, तपः, आर्जवं च (दैवी सम्पद् अभिजातस्य भवन्ति)

**पदार्थाः-**

**श्री भगवान् = श्रीकृष्ण, उवाच** - बोले, अभयम् (न भयम्) - निर्भयता, **सत्त्वसंशुद्धिः** (सत्त्वस्य संशुद्धिः)- स्व-अस्तित्व की शुद्धि, **ज्ञानयोगव्यवस्थितिः**(ज्ञाने योगः, तस्मिन् व्यवस्थितिः) - ज्ञानयोग में स्थिति, **दमः** - (मनसः निग्रहः) - मन पर नियन्त्रण, **आर्जवम्** (सारल्यम्) - सरलता/निश्छलता।

**सरलानुवादः-**

श्रीकृष्ण जी कहते हैं कि (हे अर्जुन!) निर्भीकता, अपने अस्तित्व की शुद्धि अर्थात् आत्मशुद्धि, ज्ञानयोग की स्थिति अर्थात् ज्ञान का अनुशीलन करना, दान देना, मन पर नियन्त्रण करना, यज्ञ करना, (सद्ग्रन्थों का) स्वाध्याय करना, तप करना और सरलता या निश्छलता होना, (ये सभी दैवी सम्पद् कहलाते हैं।) अर्थात् ये सभी गुण दिव्य पुरुषों में ही पाए जाते हैं।

**विमर्शः-** इस पाठ में भी अनुष्टुप् छन्द का ही प्रयोग किया गया है।

**अहिंसा-सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।**
**दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।2**

**अन्वयः-**

अहिंसा, सत्यम्, अक्रोधः, त्यागः, शान्तिः, अपैशुनम्, भूतेषु दया अलोलुप्त्वम्, मार्दवम्, ह्रीः, अचापलम् (इति दैवी संपदम् अभिजातस्य भवन्ति।)

**पदार्थाः–**

**अपैशुनम्** – पिशुनतायाः भावः–पैशुनम्, पैशुनस्य अभावः अपैशुनम्)= चुगलखोरी में अरुचि, **भूतेषु** –प्राणियों के प्रति, **मार्दवम्** – (मृदुत्वस्य भावः) कोमलता, भद्रता, **ह्रीः** – लोकलज्जा, **अचापलम्** – (चपलतायाः भावः चापलम्, तस्य अभावः) चंचलता का अभाव।

**सरलानुवादः–**

हिंसा न करना, सत्य बोलना, क्रोध न करना, त्याग की भावना होना, शान्ति रखना, चुगलखोरी का अभाव, प्राणियों में दया का भाव होना, लोभ का अभाव होना, (व्यवहार में) मृदुता या कोमलता होना, लज्जा का भाव अर्थात् गलत कर्मों से लज्जा का भाव होना और चपलता का अभाव (जल्दबाजी से कार्य न करना), (ये भी दैवी संपद् अर्थात् दिव्य गुण कहलाते हैं।)

**तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।**
**भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।।3**

**अन्वयः–**

भारत! तेजः क्षमा, धृतिः, शौचम्, अद्रोहः, न अतिमानिता (इति) दैवीं सम्पदम् अभिजातस्य भवन्ति।

**पदार्थाः–**

**भारत** – भरतकुलोत्पन्न अर्जुन, **धृतिः** – धैर्य, **शौचम्** – शुद्धता/पवित्रता, **अद्रोहः** (न द्रोहः) – द्रोह/द्वेष की भावना न होना, **अतिमानिता** – सम्मान की प्रत्याशा, **अभिजातस्य** – उच्च कुलोत्पन्न या कुलीन व्यक्ति के, **दैवीय** – दिव्य, **सम्पदम्** – गुण।

**सरलानुवादः–**

हे अर्जुन! तेज या बल, क्षमा करना, धैर्य रखना, पवित्रता रखना, ईर्ष्या या द्वेष की भावना न होना, सम्मान की प्रत्याशा न करना, ये सभी दिव्य गुण हैं, जो कुलीन व्यक्तियों में पाए जाते हैं अथवा ये सभी गुण दैवी प्रवृत्ति से सम्पन्न देवतुल्य पुरुषों में पाए जाते हैं।

**विमर्शः–**

उक्त तीनों श्लोकों में दिव्य गुणों का निरूपण किया गया है, जो एक साधारण मानव को दिव्यता की ओर ले जाते हैं, इसीलिए इनको दैवी सम्पद् अर्थात् दिव्य सम्पत्ति कहा गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत–**

1. **एकपदेन उत्तरत–**

   (क) अस्य पाठस्य वक्ता कः?

   (ख) अयं पाठः गीतायाः कस्मात् अध्यायात् संकलितः?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) द्वितीये श्लोके के गुणाः दैवी–सम्पद्रूपेण निरूपिताः सन्ति?
(ख) एते दिव्याः गुणाः केषां भवन्ति?

**3. यथानिर्देशमुत्तरत–**

(क) 'संपदं दैवीम्' अनयोः विशेष्यपदं किम्?
(ख) 'करुणा' इत्यर्थे द्वितीये श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्?
(ग) 'हिंसा' इत्यस्य किं विलोमपदं द्वितीये श्लोके प्रयुक्तम्?

**दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च**
**अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम्।4**

**अन्वयः–**

पार्थ, दम्भः, दर्पः अभिमानः च, क्रोधः पारुष्यम् एव च, अज्ञानं च आसुरीं सम्पदं अभिजातस्य (भवन्ति)।

**पदार्थाः–**

**दम्भः** – अहंकार, **दर्पः** – घमंड, **अभिमानः** – गर्व, **पारुष्यम्** (परुषस्य भावः) – निष्ठुरता, **अभिजातस्य** (समुत्पन्नस्य) – उत्पन्न हुए के, **आसुरीम्** – आसुरी प्रवृत्ति।

**सरलानुवादः–**

हे पार्थ! (अर्जुन), आसुरी प्रवृत्ति में उत्पन्न (पुरुषों में) अहंकार, घमण्ड, (व्यर्थ का) गर्व और क्रोध तथा निष्ठुरता (निर्ममता) और अज्ञान, ये गुण होते हैं।

**विमर्शः–**

इस श्लोक में आसुरी गुणों का निरूपण करते हुए कहा गया है कि वे लोग अज्ञानी होते हैं तथा उनमें अहंकार आदि दुर्गुण स्वभाव से ही होते हैं, यहाँ दम्भ, दर्प तथा अभिमान तीनों ही पद एक से अर्थ वाले प्रतीत होते हैं किंतु तीनों में मौलिक अन्तर है। दम्भ में झूठा प्रदर्शन अधिक होता है, दर्प में केवल घमंड होता है तथा अभिमान में स्वयं को बड़ा या शक्तिशाली, धनी, मानी आदि मानने का भाव ही प्रमुख होता है।

**दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।**
**मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।।5**

**अन्वयः–**

दैवी संपद् विमोक्षाय आसुरी (च) निबन्धाय मता, (हे) पाण्डव! मा शुचः, दैवीं संपदम् अभिजातः असि।

**पदार्थाः–**

**विमोक्षाय** – (मुक्तये) = मुक्ति या मोक्ष के लिए, **निबन्धाय** – (बन्धनार्थम्) = बन्धन के लिए; **मा शुचः** = चिन्ता मत करो, **मता** – (स्वीकृता) – मानी गई है, **पाण्डव** – अर्जुन।

**सरलानुवादः-**

दैवी संपद् अर्थात् दिव्य गुण मोक्ष के लिए (अनुकूल) होते हैं। तथा आसुरी संपद् (आसुरी गुण) बन्धन कराने के लिए (अनुकूल) होते हैं। हे पाण्डुपुत्र अर्जुन! तुम चिन्ता मत करो, (क्योंकि) तुम दैवी गुणों से सम्पन्न होकर उत्पन्न हुए (जन्मे) हो।

**प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जनाः न विदुरासुराः।**
**न शौचं नापि चाऽचारो न सत्यं तेषु विद्यते।।6**

**अन्वयः-**

आसुराः जनाः प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च न विदुः, तेषु न शौचं न अपि च आचारः न च सत्यं विद्यते।

**पदार्थाः -**

**आसुराः** - आसुरी गुणों वाले, **प्रवृत्तिम्** - करणीय कर्मों में प्रवृत्ति, **निवृत्तिम्** - अकरणीय कर्मों से निवृत्ति, **विदुः** - जानते हैं, **शौचम्** - शुद्धता/पवित्रता, **आचारः** - आचरण।

**सरलानुवादः-**

जो व्यक्ति आसुरी गुणों से युक्त होते हैं, वे करणीय कर्मों (सत्य, शौच, तप, दान आदि) में प्रवृत्ति तथा अकरणीय कर्मों (दम्भ, मान, क्रोध असत्य आदि) से निवृत्ति (के मर्म) को नहीं जानते हैं, अर्थात् हमें कौन से कर्म करने चाहिए तथा कौन से नहीं, इन्हें नहीं पहचानते हैं। उनमें न तो पवित्रता, न उचित आचरण; न ही सत्य (के प्रति निष्ठा) आदि गुण विद्यमान होते हैं। अर्थात् वे अपवित्र रहकर अनुचित आचरण तथा असत्य का ही अनुसरण करते हैं।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) दम्भादिः कीदृशी संपद् कथिता?
(ख) का संपद् विमोक्षाय भवति?
(ग) अर्जुनः कीदृशीं सपंदम् अभिजातोऽस्ति?
(घ) प्रवृत्तिं निवृत्तिं च के जनाः न विदुः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) आसुरगुणसम्पन्नेषु नरेषु किं किं न विद्यते?
(ख) किं किम् आसुरीं सम्पदं वदन्ति?

3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'ज्ञानम्' इत्यस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?
(ख) 'अभिजातोऽसि पाण्डव' इत्यत्र 'पाण्डव' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(ग) 'संपदं दैवीम्' अनयोः विशेषणपदं किम्?

**एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।**
**प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः।7**

**अन्वयः-**

नष्टात्मानः, अल्पबुद्धयः, उग्रकर्माणः जगतः अहिताः (आसुराः) एतां दृष्टिम् अवष्टभ्य क्षयाय प्रभवन्ति।

**पदार्थाः-**

**अवष्टभ्य (स्वीकृत्य इत्यर्थः)** - मानकर, स्वीकार करके, **नष्टात्मानः** - (नष्टः आत्मा येषां, ते)- आत्मा को नष्ट करके/आत्मा को खोने वाले, **उग्रकर्माणः** (उग्रं कर्म येषां, ते) - क्रूर/हिंसक कर्म करने वाले, **प्रभवन्ति** - समर्थ होते हैं/दूसरों पर अधिकार करते हैं, **क्षयाय** - विनाश के लिए, **अहिताः** - (न हिताः) जो हितकर या हित के लिए नहीं हैं/अनिष्टकर।

**सरलानुवादः -**

(पूर्व श्लोक के प्रसंग के अनुसार ईश्वर को न मानने वाले तथा संसार को केवल काम से उत्पन्न समझने वाले आसुरी गुणों वाले लोग) जिनकी आत्मा नष्टप्राय हो चुकी है या आत्मा के अस्तित्व को नकारने वाले, मन्दबुद्धि (सूक्ष्म चिन्तन की क्षमता से हीन), क्रूर या हिंसक कर्म करने वाले एवं संसार के लिए अनुपयोगी या अनिष्टकर लोग, इसी दृष्टि को स्वीकार करके (ईश्वर को न मानकर केवल काम से उत्पन्न जगत् को मानने वाले) (स्वयं तथा संसार के) विनाश के लिए ही समर्थ होते हैं। अर्थात् ऐसे लोग यद्यपि प्रभावशाली प्रतीत होते हैं किन्तु अन्ततः वे सृष्टि के विनाशक ही होते हैं, पोषक नहीं।

**इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।**
**इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।8**

**अन्वयः-**

मया अद्य इदं लब्धम्, इमं मनोरथं प्राप्स्ये, इदम् अस्ति, पुनः इदम् अपि धनं मे भविष्यति।

**पदार्थाः -**

**इदम्** - यह, **लब्धम्** - प्राप्त कर लिया, **प्राप्स्ये** - प्राप्त करूँगा, **इदम् अस्ति** - यह (मेरा) है, **इदम् अपि मे** - यह भी मेरा है, **पुनः धनम्** - फिर से (और अधिक) धन।

**सरलानुवादः-**

(आसुरी व्यक्तियों की धनसंग्रह की प्रवृत्ति को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि वे सोचते रहते हैं कि) आज मैंने इतना (धन) प्राप्त कर लिया है, (आगे) मैं अपने इन-इन मनोरथों को (भी) प्राप्त कर लूँगा अर्थात् मेरी अमुकामुक इच्छाएँ भी पूर्ण हो जाएँगी। अब मेरे पास इतना (धन) हो गया है तथा भविष्य में (और अधिक) धन भी मेरा हो जाएगा।

**विमर्शः-**

आशय यह है कि आसुरी प्रवृत्ति के लोग सदा संग्रह में ही लगे रहते हैं। उनकी तृष्णा कभी शान्त नहीं होती तथा वे अपने मनोरथों की पूर्ति के लिए सदा कुकृत्यों या गलत कृत्यों में लिप्त रहते हैं। त्याग, दया, करुणा आदि गुण उनमें नहीं देखे जाते।

**असौ मया हतः शत्र्रुर्हनिष्ये चापरानपि।**
**ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी॥9**

**अन्वयः-**

असौ शत्रुः मया हतः, अपरान् अपि च हनिष्ये अहम् ईश्वरः, अहं भोगी, अहं सिद्धः, बलवान् सुखी (च अस्मि)।

**पदार्थाः -**

**हतः** - (हन् + क्त) - मार दिया है, **हनिष्ये** - मारूँगा, **ईश्वरः** - प्रभु/स्वामी, **भोगी** - भोक्ता, **सिद्धः** - सिद्ध (जिनके सभी कार्य सिद्ध हो गए हों)।

**सरलानुवादः-**

इस शत्रु को मैंने मार दिया है, दूसरों को भी मैं मार डालूँगा। मैं ही प्रभु अर्थात् समर्थ हूँ, मैं ही (इस सारी संपत्ति का) भोक्ता हूँ, मैं ही सिद्ध अर्थात् सभी कार्य सिद्ध करने वाला हूँ तथा मैं ही बलवान् एवं सुखी हूँ। अर्थात् मैं ही सर्वश्रेष्ठ तथा सब कुछ करने में समर्थ हूँ।

**आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।**
**यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः॥10**

**अन्वयः-**

(अहं) आढ्यः अभिजनवान् (च) अस्मि; मया सदृशः अन्यः कः अस्ति? (अहं) यक्ष्ये, दास्यामि, मोदिष्ये इति अज्ञानविमोहिताः (भवन्ति)।

**पदार्थाः-**

**आढ्यः** - धनवान्, **अभिजनवान्** - कुलीन सम्बन्धियों वाला, **यक्ष्ये** - (यज्. लृट्, उ.पु.ए.व.) यज्ञ करूँगा, **मोदिष्ये** - (मुद्+लृट, उ.पु. ए.का.) प्रसन्न होऊँगा/खुश रहूँगा, **अज्ञानविमोहिताः** (अज्ञानेन विमोहिताः) - अज्ञान से मोहग्रस्त।

**सरलानुवादः-**

(आसुरी प्रवृत्ति के लोग सोचते हैं कि) (मैं ही) धनवान् हूँ, मेरे सम्बन्ध सभी कुलीन लोगों के साथ हैं, अथवा मेरे सम्बन्धी सभी उच्च कुलीन हैं। मेरे जैसा (यहाँ) दूसरा कौन है? अर्थात् कोई नहीं। (मैं ही) यज्ञ करूँगा अर्थात् यज्ञ करने की सामर्थ्य भी सिर्फ मेरे ही पास है, अन्य के पास नहीं मैं ही दूँगा, अर्थात् देने का सामर्थ्य भी मेरे ही पास है, इसलिए मैं ही प्रसन्न रहूँगा (अन्य नहीं) इस प्रकार ये (आसुरी गुणों वाले लोग) सदा अज्ञान से मोहग्रस्त रहते हैं; अर्थात् इसी भ्रम में जीवन जीते रहते हैं।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**प्रोक्तं श्लोकचतुष्टयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

**1. एकपदेन उत्तरत**

(क) उग्रकर्माण: के कथिता:?
(ख) आसुरप्रवृत्तय: जना: कस्य संग्रहे निरता: भवन्ति?
(ग) आसुर: नर: कान् हन्तुं प्रयत्नशील: भवति?
(घ) आसुरा: नरा: केन विमोहिता: भवन्ति?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) आसुरप्रवृत्तिक: नर: आत्मानं कीदृशं मनुते?
(ख) क: आत्मानं धनवान् अभिजनवान् च मनुते?

**3. यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) सप्तमे श्लोकें 'विनाशाय' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
(ख) 'ईश्वरोऽहम्' इत्यत्र 'अहम्' इति सर्वनाम कस्मै प्रयुक्तम्?

**अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजाल-समावृता:।**
**प्रसक्ता: कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।11**

**अन्वय: -**

अनेकचित्तविभ्रान्ता:, मोहजालसमावृता:, कामभोगेषु प्रसक्ता: अशुचौ नरके पतन्ति।

**पदार्था:-**

**अनेकचित्तविभ्रान्ता:** - (अनेकत्र चित्तं विभ्रान्तं येषां ते) अनेक व्यसनों/ चिन्ताओं में मन भटका हुआ है जिनका, **मोहजालसमावृता:** - (मोहस्य जालेन समावृता:) - मोहरूपी - जाल से घिरे हुए/ बँधे हुए, **प्रसक्ता:** (आसक्ता: निरता: वा) निमग्न/लीन, **अशुचौ** - (न शुचि:, तस्मिन्) = अपवित्र

**सरलानुवाद:-**

(जो आसुरी प्रवृत्ति के लोग) अनेक प्रकार की चिंताओं में मन भटकाते रहते हैं या जिनका मन भटकता रहता है, जो मोहरूपी जाल से घिरे हुए रहते हैं तथा सदा कामभोगों अर्थात् इन्द्रियों की तृप्ति में लीन रहते हैं, (वे लोग) अपवित्र नरक में पड़ते हैं। अर्थात् अन्तत: वे कुत्सित नरक के भागीदार बनते हैं।

**12. आत्मसंभाविता: स्तब्धा: धनमानमदान्विता:।**
**यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्।।**

**अन्वय: -**

ते आत्मसंभाविता:, स्तब्धा:, धनमानमदान्विता:, नामयज्ञै:, दम्भेन अविधिपूर्वकं यजन्ते।।

**पदार्था: -**

**आत्मसंभाविता:** (आत्मना एव संभाविता: - मानिता: इति भाव:) - स्वंय से ही स्वयं को सम्मानित मानने वाले, श्रेष्ठ मानने वाले, **स्तब्धा:** (गर्विता:) - घमण्डी, **धनमानमदान्विता:** - (धनस्य मानस्य च मदेन अन्विता:, सहिता:) - जो धन एवं मान के घमंड से युक्त हैं; **नामयज्ञै:** (नाममात्रेण यज्ञै:) - नाम मात्र के यज्ञों से, दम्भेन (गर्वेण) घंमडपूर्वक।

**सरलानुवादः -**

(आसुरी प्रवृत्ति के लोग) स्वयं ही स्वयं को श्रेष्ठ या सम्माननीय मानने वाले, घमंडी, धन और मान के मद से चूर केवल नाम मात्र के यज्ञों को बिना किसी विधि-विधान के घमंडपूर्वक (आडंबरपूर्वक) करते हैं।

**विमर्शः-**

आशय यह है कि यदि आसुरी गुणों से युक्त लोग यज्ञ या पूजा विधान भी करते हैं, तो उसमें विधि-विधान के स्थान पर आडम्बर एवं प्रदर्शन का भाव ही प्रमुख होता है।, उनके यज्ञ दिखाने के लिए ही अधिक होते हैं।

**अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।**
**मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।।13**

**अन्वयः-**

(ते) अहंकारं, बलं, दर्पं, कामं क्रोधं च संश्रिताः आत्म-पर-देहेषु (स्थितं) माम् प्रद्विषन्तः अभ्यसूयकाः (भवन्ति)!

**पदार्थाः-**

**अहंकारम् -** अभिमान, **दर्पम्** =मिथ्यागर्व, **संश्रिताः** (आश्रिताः इति भावः) - प्राप्त हुए/ आश्रित, माम् - (ईश्वरम् इति भावः) - मुझे ईश्वर या आत्मा को, **आत्म-पर-देहेषु** - (आत्मनः परेषां च देहेषु) - अपने और दूसरों के शरीरों में, **प्रद्विषन्तः** - द्वेष करने वाले, **अभ्यसूयकाः** (ईर्ष्यालवः) - ईर्ष्या करने वाले।

**सरलानुवादः-**

(ये आसुरी संपदा से युक्त लोग) (झूठे) अभिमान, ताकत, घमंड, वासनाओं तथा क्रोध को प्राप्त कर (इनका आश्रय लेकर) मुझ (ईश्वर या आत्मतत्त्व) को अपने तथा दूसरों के शरीरों में (स्थित देखकर भी) द्वेष करते हैं तथा निन्दा भी करते हैं। अर्थात् शरीर को ही श्रेष्ठ मानकर आत्मतत्त्व की अवमानना या हिंसा करते रहते हैं।

**विमर्शः-**

भाव यह है कि ईश्वर सभी जीवों में आत्मतत्त्व के रूप में विद्यमान है, किन्तु आसुरी प्रवृत्ति के लोग झूठे अहंकार तथा बल आदि के कारण दूसरे शरीरों में स्थित आत्माओं का हनन करते हैं तथा स्वयं में स्थित आत्मा को देखकर भी उसकी निन्दा करते हैं, उसके अस्तित्व को नकारते हैं।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

**1. एकपदेन उत्तरत -**

(क) आसुराः नराः कुत्र पतन्ति?
(ख) ते कथं यजन्ते?
(ग) ते ईश्वरं किं कुर्वन्ति?
(घ) आसुराः जनाः प्रायः केन समावृताः भवन्ति?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) आसुराः नराः किं किं संश्रिताः भवन्ति?
(ख) ते कीदृशैः यज्ञैः कथं च यजन्ते?

3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'माम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(ख) 'अभिमानेन' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

**तानहं द्विषतः क्रूरान् संसारेषु नराधमान्।**
**क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु।।14**

**अन्वयः-**

अहं तान् द्विषतः, क्रूरान्, नराधमान्, अशुभान् (च) अजस्रम् आसुरीषु एव योनिषु संसारेषु (च) क्षिपामि।

**पदार्थाः-**

**द्विषतः** (द्विष् + शतृ, द्वि.व.व.) – ईर्ष्या करने वालों को, **क्रूरान्** हिंसकों को, **नराधमान्** – नीच लोगों को, **अजस्रम्** – (निरन्तरम्) – लगातार, **संसारेषु** – नरकों या भवसागरों में, **क्षिपामि** – फेंकता हूँ।

**सरलानुवादः-**

मैं उन (आसुरी गुणों वाले) द्वेष करने वाले, निर्मम या हिंसक नीच लोगों को जो कि (हर प्रकार से) अशुभ या अमंगलकारी हैं, को निरन्तर आसुरी योनियों तथा नारकीय संसारों या भवसागरों में फेंकता रहता हूँ। अर्थात् इन्हें कभी भी मुक्ति प्रदान नहीं करता हूँ।

**विमर्शः-**

यहाँ पर श्रीकृष्ण जी अर्जुन से कहते हैं कि आसुरी प्रवृत्ति के लोग सदा गलत कृत्यों में तथा हिंसा, निंदा आदि कार्यों में लिप्त रहते हैं, अतः कभी भी भवसागर से मुक्त नहीं हो पाते।

**आसुरीं योनिमापन्ना मूढाः जन्मनि जन्मनि।**
**मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्।।15**

**अन्वयः-**

कौन्तेय! आसुरीं योनिम् आपन्नाः मूढाः जन्मनि जन्मनि माम् अप्राप्य एव ततः अधमां गतिं यान्ति।

**पदार्थाः-**

**आपन्नाः** (आ + पद् + क्त) – प्राप्त/पड़े हुए, **मूढाः** – मूर्ख, **अप्राप्य** – (अ + प्र + आप् + ल्यप्) – न पाकर, **यान्ति** – जाते हैं।

**सरलानुवादः-**

हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! आसुरी योनि को प्राप्त हुए मूर्ख मनुष्य कई जन्मों में भी मुझकों प्राप्त नहीं कर पाते तथा निरन्तर अधम गति को प्राप्त करते रहते हैं। अर्थात् वे कभी भी भवसागर से मुक्त हो ही नहीं पाते।

16. **त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।**
**कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।**

**अन्वयः-**

इदं कामः, क्रोधः तथा लोभः आत्मनः नाशनं त्रिविधं नरकस्य द्वारम् (अस्ति), तस्मात् एतत् त्रयं त्यजेत्।

**पदार्थाः -**

**आत्मनः** आत्मा का, **नाशनम्** = विनाशक, **त्रिविधम्** = तीन प्रकार का, **त्रयम्** = तीनों को, **त्यजेत्** = छोड़ देना चाहिए।

**सरलानुवादः-**

ये काम,क्रोध तथा लोभ, आत्मा का नाश करने वाले अर्थात् आत्मा का हनन करने वाले तीन प्रकार के नरक के द्वार हैं। अतः इन तीनों को ही त्याग देना चाहिए।

**विमर्शः-**

आशय यह है कि काम, क्रोध तथा लोभ सदा आत्मा को क्षति पहुंचाते हैं, उसे हीन बनाने का कार्य करते हैं, अतः इन्हें नरक का द्वार कहा गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

(क) ईश्वरः नराधमान् कासु योनिषु क्षिपति?
(ख) मूढाः जन्मनि जन्मनि कां गतिं यान्ति?
(ग) काम-क्रोध-लोभाः कस्य द्वाररूपेण कथिताः?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) ईश्वरः कान् आसुरीषु योनिषु क्षिपति?
(ख) त्रिविधं नरकस्य द्वारं किम्?

**3. यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'तानहम्' इत्यत्र 'तान्' इति सर्वनामपदं केभ्यः प्रयुक्तम्?
(ख) 'निरन्तरम्' इत्यर्थे चतुर्दशे श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्?

**पाठोद्देश्यानि**

(i) श्रीमद्भगवद्गीता का परिचय कराते हुए उसकी आज के सन्दर्भ में उपयोगिता को रेखांकित कराना।
(ii) दैवी संपद् तथा आसुरी संपद् का भेद स्पष्ट करते हुए त्याज्य एवं ग्राह्य का संकेत कराना।
(iii) आसुरी संपद् का वर्तमान सन्दर्भ में व्यावहारिक प्रयोग प्रदर्शित करते हुए समाज के लिए उसकी अनुपयोगिता या उससे होने वाली हानियों को रेखांकित कराना।
(iv) अहिंसा, सत्य, त्याग, तप आदि जीवनमूल्यों का महत्त्व बताते हुए उनकी प्रासंगिकता तथा उपयोगिता से छात्रों को अवगत कराना तथा जीवन में अपनाना।

(v) श्लोकों का गायन कराना, भाषिक तत्त्वों का परिचय कराना एवं भाषा शैली से अवगत कराना।

**शिक्षणपरामर्शः -**

(i) दैवी संपद् तथा आसुरी संपद् के अलग-अलग चार्ट बनवाए जा सकते हैं।

(ii) अपने आस-पास स्थित व्यक्तियों में उक्त प्रकार के गुणों या अवगुणों की सूची बनाने का निर्देश दिया जा सकता है।

(iii) अनुष्टुप् छन्द का परिचय कराते हुए उसके लक्षण एवं उदाहरण से अवगत कराया जा सकता है।

**अनुभवविस्तारः-**

(i) आज के परिप्रेक्ष्य में दैवी तथा आसुरी गुणों का क्या महत्त्व हैं? क्या आज गीता में वर्णित दैवी गुण अर्जित किए जा सकते है इस विषय पर छात्रों को अपने विचार लिखने का निर्देश दिया जा सकता है।

(ii) पाठ के आधार पर गीता में वर्णित आसुरी संपद् का वर्तमान समाज पर क्या प्रभाव दिखाई देता है? इसका वर्णन छात्रों से अपने शब्दों में करने के लिए कहा जा सकता है।

# विद्यास्थानानि

**( द्वादशः पाठः )**

**पाठपरिचयः-**

यह पाठ 'यायावर' उपाधि से विभूषित प्रसिद्ध आचार्य राजशेखर की अनुपम रचना 'काव्यमीमांसा' के द्वितीय अध्याय से संग्रहीत है। इस ग्रंथ में काव्यपुरुष की अद्वितीय परिकल्पना व काव्यशास्त्र की विशेष व्याख्या के अतिरिक्त संस्कृत साहित्य की विस्तृत ज्ञानराशि का वस्तुनिष्ठ व सारगर्भित वर्णन प्राप्त होता है। इस पाठ में चतुर्दश विद्याओं के विषय में व्यापक चर्चा की गई है।

**पाठोद्देश्यानि-**

- छात्रों को संस्कृत साहित्यपरम्परा से अवगत करवाना।
- संस्कृत में प्रसिद्ध चौदह विद्याओं से छात्रों का परिचय करवाना।
- गद्यविधा के माध्यम से छात्रों के पठन व लेखन कौशल का विकास करना।
- संस्कृत-साहित्य के प्रति छात्रों में रुचि जागृत करना।

**मूलपाठः -**

**इह हि वाङ्मयमुभयथा शास्त्रं काव्यं च। शास्त्रं द्विधा-अपौरुषेयं पौरुषेयं च। अपौरुषेयं श्रुतिः। श्रुतिः पुनः द्विविधा-मन्त्राः ब्राह्मणं च। विवृत्तक्रियातन्त्रा मन्त्राः। मन्त्राणां स्तुतिनिन्दाव्याख्यानविनियोगग्रन्थो ब्राह्मणम्। ऋग्यजुःसामवेदास्त्रयी आथर्वणश्च तुरीयः।**

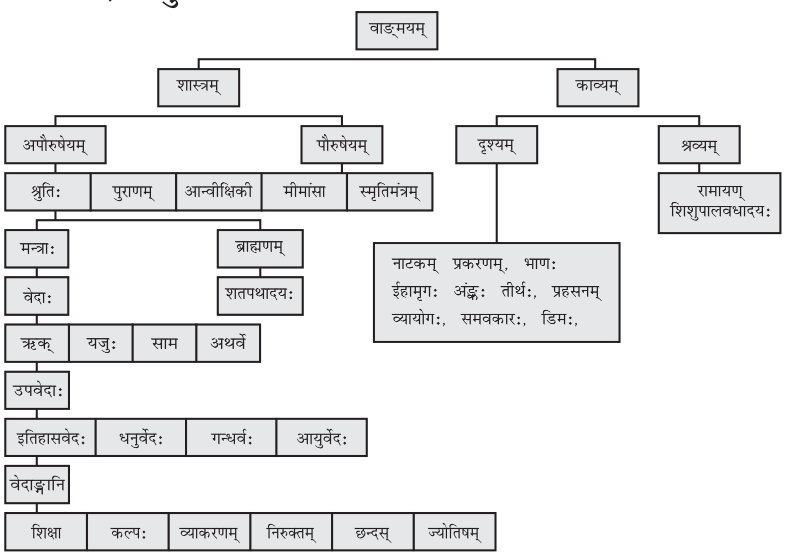

**पदार्थाः-**

**वाङ्मयम् -** साहित्य, **अपौरुषेयम् -** जो मनुष्य द्वारा रचित न हो, **श्रुतिः -** वेद, विवृत्तक्रियातन्त्राः, (विवृत्ताः क्रियातन्त्राः यैः ते) सम्यक् प्रकार से वर्णित है समस्त कर्मकाण्ड जिनके द्वारा, वे, **तुरीयः -** चतुर्थ, **आन्वीक्षिकी -** न्यायविद्या अथवा न्यायशास्त्र, **विनियोग -** प्रयोग।

**सरलानुवादः-**

साहित्य/वाङ्मय दो प्रकार का है - शास्त्र एवं काव्य। इनमें से शास्त्र दो प्रकार का है - एक जो पुरुष द्वारा रचित न हो अपौरूषेय, दूसरा जो पुरुष द्वारा रचित हो अर्थात् पौरुषेय। श्रुति अर्थात् वेद अपौरुषेय हैं। वेद के पुनः दो भाग हैं - मंत्र तथा ब्राह्मण। जिनसे वैदिक कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञादि क्रियाएं ठीक प्रकार से करायी जा सकें, वे मंत्र हैं। इन मंत्रों की स्तुति, निंदा, व्याख्यान व प्रयोग आदि का ज्ञान कराने वाला वेदभाग ब्राह्मण है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद - ये तीन वेद हैं तथा अथर्ववेद चतुर्थ वेद है। (इस वर्गीकरण को उपरिप्रदत्त तालिका द्वारा भी जाना जा सकता है।)

**विमर्शः**

(क) यहां वाङ्मय के विविध भेदों व उपभेदों का निवर्चन सहित वर्णन हुआ है।
(ख) प्रस्तुत विवरण आचार्य राजशेखर - विरचित काव्यमीमांसा के द्वितीय अध्याय 'शास्त्र-निर्देशः' से उद्धृत है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

**1. एकपदेन उत्तरत-**

(क) शास्त्रं काव्यं च कस्य भेदौ?
(ख) तुरीयः वेदः कः?
(ग) काव्यं कतिविधम्?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) शास्त्रं कतिधा विभज्यते? नामोल्लेखपूर्वकं लिखत।
(ख) कीदृशः ग्रन्थः ब्राह्मणम्?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत।**

(क) 'द्विविधा' इति विशेषणपदस्य किं विशेष्यमत्र?
(ख) 'चतुर्थः' इत्यर्थे किं पदमत्रागतम्?

**2. मूलपाठः-**

**तत्रार्थव्यवस्थितपादाः ऋचः। ताः सगीतयः सामानि। अच्छन्दांस्यगीतानि यजूंषि। ऋचो यजूंषि सामानि चाथर्वणं त इमे चत्वारो वेदाः। इतिहासवेदः धनुर्वेदः गन्धर्ववेदः आयुर्वेदः च उपवेदाः। "वेदोपवेदात्मा सार्ववर्णिकः पञ्चमो गेयवेदः'' इति द्रौहिणिः। "शिक्षा, कल्पो, व्याकरणं, निरुक्तं, छन्दोविचितिः, ज्योतिषं च षडङ्गानि इत्याचार्याः। "उपकारकत्वादलङ्कारः सप्तममङ्गम्'' इति यायावरीयः। ऋते च तत्स्वरूपपरिज्ञानाद्वेदार्थानवगतिः।**

**यथा–**

> **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते॥**
> **तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्यो अभिचाकशीति॥**

**अन्वयः–**

द्वा सखाया सयुजा सुपर्णा समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोः अन्यः (जीवात्मा) स्वादु पिप्पलम् अत्ति, अन्यः च (परमात्मा) अनश्नन् अभिचाकशीति।

**पदार्थाः–**

**अर्थव्यवस्थितपादाः** – (अर्थानुकूलं व्यवस्थिताः पादाः यासाम्, ताः) अर्थ के अनुकूल व्यवस्थित हैं चारों चरण जिनके अर्थात् छन्दोबद्ध, **सगीतयः** – गान से युक्त, **अच्छंदांस्यगीतानि** – (अ + छन्दांसि + अगीतानि) जो छन्द न हो, न गान से युक्त हो, **सार्ववर्णिकः** – सभी वर्णों के लिए उपयुक्त, **उपकारकत्वात्** –उपकार करने वाले होने से, **यायावरीयः** – 'यायावर' उपाधि से विभूषित आचार्य राजशेखर, **वेदार्थानवगतिः** –(वेदानाम् अर्थस्य न अवगतिः) वेदों के अर्थ का ज्ञान न हो पाना, **सुपर्णा** – सुंदर पंखों वाले पक्षी, **सयुजा** – एक साथ रहने वाले, **परिषस्वजाते** – आलिंगन या निवास करते हैं, **अभिचाकशीति** – प्रकाशित होता है या दिखायी देता है।

**सरलानुवादः**

उनमें (चारों वेदों में) से अर्थ के अनुकूल पादों या चरणों की व्यवस्था वाला अर्थात् छन्दोबद्ध ऋचाओं वाला ऋग्वेद है। उनमें से भी गायन के योग्य ऋचाएं सामवेद हैं, जो छन्दोबद्ध नहीं है व जिसे गाया भी न जा सके, वह यजुर्वेद है। इस प्रकार ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद ये चार वेद हैं। इतिहासवेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद व आयुर्वेद क्रमशः इन वेदों के उपवेद हैं। वेदों तथा उपवेदों का साररूप व सभी वर्णो के लिए उपयुक्त पाँचवा गेयवेद (नाट्यवेद) है। यह द्रौहिणि अर्थात् ब्रह्मपुत्र भरतमुनि का मत है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दशास्त्र व ज्योतिष – ये छः वेदांग हैं, ऐसा आचार्यों का मत है। वेदों के अर्थ का उपकारक होने से अलंकार सातवां वेदांग है, ऐसा 'यायावर' राजशेखर का मानना है तथा उसके (अलंकार के) स्वरूप के ज्ञान के बिना वेदों का अर्थज्ञान भी सम्यक्तया नहीं हो पाता। जैसे –

मित्र भाव से एक साथ रहने वाले सुंदर पंखों वाले दो पक्षी (जीवात्मा व परमात्मा) एक ही वृक्ष का आलिंगन करते हैं अर्थात् रहते हैं। उनमें से एक (जीवात्मा) उस वृक्ष के स्वादिष्ट (सुख-दुःखरूपी) फल को खाता है और दूसरा (परमात्मा) उस फल को न खाता हुआ ही प्रकाशित होता है या दिखाई देता है।

**विमर्शः**

(क) आचार्य राजशेखर का मानना है कि वेदांगों का लक्ष्य वेदों के अर्थ को स्पष्ट करना है। यह वेदार्थ उपकारकत्व अलंकार में भी है क्योंकि जब तक किसी स्थलविशेष में अलंकार का ज्ञान नहीं होगा, तब तक वेदार्थ का ज्ञान भी नहीं होगा। जैसे – 'द्वा सुपर्णा' इस वैदिक मंत्र में दो पक्षियों के माध्यम से एक ही शरीर में रहने वाले जीव और ईश्वर की विलक्षणता का प्रतिपादन किया गया है। यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है। जब तक अतिशयोक्ति अलंकार का ज्ञान नहीं होगा, तक तक इस मंत्र का अर्थज्ञान नहीं होगा।

(ख) 'पंचमो गेयवेदः' यहाँ पाँचवे वेद के रूप में गेयवेद का वर्णन हुआ है। काव्यमीमांसा के कुछ संस्करणों में गेयवेद के स्थान पर 'नाट्यवेद' शब्द का प्रयोग भी हुआ है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) पंचमः वेदः कः कथितः?
(ख) कति वेदाङ्गानि?
(ग) सप्तमवेदाङ्गं किम् कथितम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) के उपवेदाः कथिताः?
(ख) आचार्याणां मते कानि वेदाङ्गानि सन्ति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'सार्ववर्णिकः' इति कस्य पदस्य विशेषणम्?
(ख) 'अभिचाकशीति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
(ग) 'खादति' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

**3. मूलपाठः-**

**तत्र वर्णानां स्थान-करण-प्रयत्नादिभिः निष्पत्तिनिर्णयिनी शिक्षा। नानाशाखाधीतानां मन्त्राणां विनियोजकं सूत्रं कल्पः। सा च यजुर्विद्या। शब्दानामन्वाख्यानं व्याकरणम्। निर्वचनं निरुक्तम्। छन्दसां प्रतिपादयित्री छन्दोविचितिः। ग्रहगणितं ज्योतिषम्। पौरुषेयं तु पुराणम्, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृतितन्त्रम् इति चत्वारि शास्त्राणि। तत्र वेदाख्यानोपनिबन्धनप्रायं पुराणमष्टादशधा। यदाहुः-**

**सर्गः प्रतिसंहारः कल्पो मन्वन्तराणि वंशविधिः।**
**जगतो यत्र निबद्धं तद्विज्ञेयं पुराणमिति**

**पदार्थाः**

**निर्णयिनी** - निर्णय करने वाली, **नानाशाखाधीतानाम्** - विभिन्न शाखाओं में पढ़े गए, **अन्वाख्यानम्** - प्रकृति प्रत्यय के विभाजन-द्वारा शब्दार्थ-ज्ञान, **छन्दोविचितिः** - छन्दशास्त्र, **वेदाख्यानोपनिबन्धनम्** -वेदों के कथन का संग्रह, **प्रतिसंहारः** - ब्रह्म की उत्पत्ति के पश्चात् दक्षादि की उत्पत्ति।

**सरलानुवादः-**

वहाँ स्थान-करण प्रयत्न आदियों के द्वारा वर्णो की उत्पत्ति का निर्णय करने वाली शिक्षा है। वेदों की अनेक शाखाओं में पढ़े गए मंत्रों का विनियोग या प्रयोग बताने वाला सूत्र ग्रंथ कल्प कहलाता है और यही यज्ञविद्या भी कहलाती है। शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय को पृथक् करके अर्थ बताने वाला वेदांग व्याकरण कहलाता है। तात्पर्य के अनुकूल शब्दों का निर्वचन जहां किया गया हो, वह निरुक्त कहलाता है। छन्द के नियमों का प्रतिपादन करने वाला छन्दशास्त्र है। ग्रहों के गणित की व्याख्या करने वाला ज्योतिषशास्त्र है। मनुष्य द्वारा रचित अर्थात् अपौरुषेय शास्त्र चार हैं - पुराण, न्यायशास्त्र, मीमांसा व स्मृतियाँ। उनमें भी जहाँ वेदों के कथनों का संग्रह प्राप्त होता है, वह पुराण अठारह प्रकार का है। जो कहा भी गया है कि-
संसार की उत्पत्ति, ब्रह्म जी के पश्चात् दक्षादि की उत्पत्ति, कल्प, चौदह मन्वन्तर व तात्कालिक राजाओं के वंशक्रम का वर्णन जहां निबद्ध है, उसे पुराण मानना चाहिए अर्थात् वही पुराण है।

**विमर्शः**

यहां षड् वेदांगों व चार पौरुषेय शास्त्रों का विशदतया विवेचन किया गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः-**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) किं व्याकरणम्?
(ख) ग्रहगणितं किं कथ्यते?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) पुराणेषु किं निबद्धम् अस्ति?
(ख) कीदृशं सूत्रं कल्पः?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'प्रतिपादयित्री' इति पदस्य किं विशेष्यमत्र?
(ख) 'न्यायविद्या' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

4. **मूलपाठः- 'पुराणप्रभेद एवेतिहासः' इत्येके। स च द्विधा परिक्रियापुराकल्पाभ्याम्। यदाहुः-**

**परिक्रिया पुराकल्प इतिहासगतिर्द्विधा।**
**स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका।।**

**तत्र रामायणं भारतं चोदाहरणे। निगमवाक्यानां न्यायैः सहस्रेण विवेक्त्री मीमांसा। सा च द्विविधा विधिविवेचनी ब्रह्मनिदर्शनी च। अष्टादशैव श्रुत्यर्थस्मरणात्स्मृतयः। तानि इमानि चतुर्दश विद्यास्थानानि, यदुत वेदाश्चत्वारः षडङ्गानि, चत्वारि शास्त्राणि इत्याचार्याः।**

**विद्यास्थानानिः**

| **वेदाः** | **वेदाङ्गानि** | **शास्त्राणि** |
|---|---|---|
| 1. ऋक् | 5. शिक्षा | 11. पुराणम् |
| 2. यजुः | 6. कल्प | 12. आन्वीक्षिकी |
| 3. साम | 7. व्याकरणम् | 13. मीमांसा |
| 4. अथर्व | 8. निरुक्तः | 14. स्मृतितन्त्रम् |
| 9. छन्दः | | |
| 10. ज्योतिषम्। | | |

**पदार्थाः-**

**इतिहासगतिः** (इतिहासस्य गतिः) - इतिहास का स्वरूप/प्रकार, **निगमवाक्यानाम्** - वैदिक वाक्यों का, **न्यायैः सहस्रेण** - अनेक न्यायों से, **विवेक्त्री** - विवेचन करने वाली, **विधिविवेचनी** - विधिवाक्यों का विचार करने वाली, **ब्रह्मनिदर्शनी** - ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाली, **श्रुत्यर्थस्मरणात्** - वेदों के अर्थ का स्मरण कराने वाली होने से।

**सरलानुवादः-**

इतिहास पुराण का एक भेद ही है, ऐसा कुछ विद्वान् मानते हैं और वह परिक्रिया व पुराकल्प के भेद से दो प्रकार का होता है। जैसा कहा भी गया है कि- -

इतिहास की गति (स्वरूप) दो प्रकार की होती है - परिक्रिया व पुराकल्प। इनमें से पहला अर्थात् परिक्रिया एक नायक वाला तथा दूसरा पुराकल्प अनेक नायकों से सम्बद्ध कथाओं वाला होता है।

रामायण व महाभारत इनके क्रमशः उदाहरण हैं। वेदों के वाक्यों का अनेक न्यायों से विवेचन करने वाली मीमांसा है और वह दो प्रकार की है - विधिवाक्यों का विचार करने वाली तथा ब्रह्मतत्त्व का प्रतिपादन करने वाली। वेदों के अर्थ का स्मरण कराने वाली स्मृतियाँ अठारह प्रकार की हैं।

ये चौदह विद्या के स्थान या अधिकरण हैं - चार वेद, छः वेदांग तथा चार शास्त्र, ऐसा आचार्यों का मत है। (इन्हें मूलपाठ में प्रदत्त तालिका द्वारा भी संक्षेप में जाना जा सकता है।

**विमर्शः-**

रामायण व महाभारत के उदाहरण के माध्यम से इतिहास के दो भेदों को स्पष्ट किया गया है। आचार्य राजशेखर के द्वारा चौदह विद्याओं का व्युत्पत्तिपरक व सारगर्भित विवेचन किया गया है।

**अभ्यासप्रश्नाः**

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) कति विद्यास्थानानि सन्ति?
(ख) रामायणं कस्याः उदाहरणं कथितम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) का मीमांसा?
(ख) इतिहासस्य कति भेदाः? सोदाहरणं लिखत।

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'विवेक्त्री' इति पदस्य किं विशेषणमत्र?
(ख) 'एतानि' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तमत्र?

**परामर्शः-**

- लघु-लघु प्रश्नों के माध्यम से छात्रों से संवाद करते हुए पाठ को स्पष्ट किया जा सकता है।
- कक्षा को विभिन्न समूहों में बाँटकर प्रश्नोत्तरी आयोजित की जा सकती है।
- चौदह विद्याओं को चार्ट के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

**अनुभवविस्तारः-**

संस्कृत केवल एक विषय नहीं अपितु विषयों का सागर है, इस तथ्य को प्रस्तुत पाठ द्वारा भली-भाँति उपस्थापित किया जा सकता है। संस्कृत-काव्यशास्त्र को रोचक साहित्यिक शैली में प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय ग्रन्थ काव्यमीमांसा है। प्रस्तुत पाठ का अध्ययन न केवल छात्रों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करेगा अपितु संस्कृत साहित्य के अध्ययन के प्रति छात्रों की रूचि जागृत करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

# आदर्शप्रश्नपत्रम्

**अवधि-होरात्रयम्** **कक्षा-द्वादशी** **पूर्णाङ्कः-80**

**संस्कृत ( केन्द्रिक )**

**खण्डः - 'क'**

**अपठितांशावबोधनम्**

**प्रश्न-1 अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत।** 10

स्वामी विवेकानन्दः एकदा तीर्थयात्राप्रसङ्गेन काशीं गतः। तत्र भगवतः विश्वनाथस्य दर्शनं कृत्वा यदा सः मन्दिरात् बहिः आगच्छत्, तदा तत्र बहून् कपीन् अपश्यत्। ते कपयः विवेकानन्दम् अनुययुः। तस्य लम्बस्यूते पुस्तकानि पत्राणि च आसन्, तानि भ्रमवशात् खाद्यवस्तूनि बुद्ध्वा वानराः तम् अनुयान्ति स्म। वानराणाम् आक्रमणभयात् भीतः श्रीस्वामिविवेकानन्दः त्वरितम् अग्रे अगच्छत्, तदा वानराः अपि तम् अनुव्रजन्। स्वामिविवेकानन्दः भयभीतः जातः। अत्रान्तरे कस्यचिद् गम्भीरा वाणी तेन श्रुता- 'मा धाव' इति। श्री विवेकानन्दः तत् वचनम् श्रुत्वा तत्रैव दृढ़तया स्थिरः अभवत्। वानराः शनैः-शनैः प्रस्थिताः। अनया घटनया तेन शिक्षितम्, यत् दुरितस्य उपरि दृढ़ं प्रहर्तव्यम्। समाजे वा व्यक्तौ वा याः कुरीतयः ये च विकाराः सन्ति तेभ्यः ताभ्यः वा पलायनं न कर्तव्यम्।

1. **एकपदेन उत्तरत- 1/2×4=2**

(क) स्वामिविवेकानन्दः कुत्र गतः?
(ख) तस्य स्यूते कानि आसन्?
(ग) स्वामिविवेकानन्दं के अनुव्रजन्?
(घ) कः भयभीतः जातः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत - 1×4=2**

(क) स्वामिविवेकानन्दः आक्रमणभयात् किम् अकरोत्?
(ख) स्वामिविवेकानन्देन गम्भीरया वाण्या किं श्रुतम्?

3. **यथानिर्देशम् उत्तरत- 1×4=4**

(क) 'भगवतः विश्वनाथस्य' इति पदे विशेषणपदम् किम् अस्ति?
(ख) 'अनुयान्ति' इति पदस्य कर्तृपदं किम्?
(ग) 'आकर्ण्य' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(घ) 'त्वरितम्' इति पदस्य विलोमपदं लिखत।
(ङ) अस्य अनुच्छेदस्य कृते उचितशीर्षकं संस्कृतेन लिखत। **2**

**खण्डः - 'ख'**

## रचनात्मकं कार्यम्

**प्रश्न-2 अधोलिखितमञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहातया शुल्कक्षमार्थं प्रधानाचार्यं प्रति पत्रं लिखत। भवान् मनोजः द्वादश-कक्षायाः छात्रः। 5**

प्रथमस्थानं, सार्वजनिके स्थले, पञ्च-सहस्ररुप्यकाणि, काठिन्येन, शिक्षाशुल्कं, निवेद्यते, भरणपोषणं, मासिकं वेतनं, क्षन्तव्यम्, असमर्थः, सेवां करोति, सेवायाम्।

**प्रश्न-3 मञ्जूषाप्रदत्तशब्दानां सहायतया अधोलिखितां कथां पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां पुनः लिखत- 1/2×10=5**

बङ्गप्रदेशे बोपदेव नामा एकः (1) .............................. छात्रः अवसत्। सः परीक्षासु साफल्यं न भजति। तत्सहपाठिनः (2) .............................. उपहसन्ति स्म। गुरवः तं मूर्खं (3) .............................. तिरस्कुर्वन्ति स्म। एकदा असौ गुरुजनेन निर्भर्त्सितः विद्यालयात् (4) ..............................। आत्मग्लानिपीड़ितः सः अचिन्तयत् - 'मम भाग्ये (5) .............................. नास्ति। सम्प्रति पठनं परिहाय किं करिष्यामि? इति चिन्तयन् सः निरुद्देश्यं यत्र-तत्र अभ्रमत्। मार्गे तेन एकः (6) .............................. दृष्टः। तत्र काश्चन नार्यः स्वघटान् जलेन पूरयन्ति स्म। सोऽपि रज्ज्वा कूपात् जलनिष्कासनक्रियाम् उत्सुकः (7) .............................. व्यलोकयत्। बोपदेवः कूपस्य शिलाखण डे एकम् (8) .............................. अपश्यत्। सः एकां स्त्रियं अपृच्छत्-मातः! इमं सुन्दरं गर्तं कः निर्मितवान्। सा अवदत् एषः गर्तः प्रतिदिनं घटस्थापनेन निर्मितः अभवत्। बोपदेवः तद्वचः (9) .............................. अचिन्तयत् यदि भूयोभूयः मृणमयघटस्य स्थापनेन पाषाणशिलायां गर्तः सम्पद्यते तदा पुनः पुनः पठनेन मम (10) .............................. अपि तीव्रा भवेत्, इति विचार्य सः पुनः विद्यालये प्रवेशम् अलभत।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **मञ्जूषा -** | गर्तम्, | बुद्धिः, | निशम्य, | मन्दमतिः, | भूत्वा, |
| | तम्, | मत्वा, | कूपः, | निष्क्रान्तः | विद्या |

**अथवा**

**मञ्जूषातः समुचितवाक्यानि चित्वा वार्तालापं पूरयत- 1×5 = 5**

विनोद - भवत्याः पितुः नाम किम्?
लता - मम पितुः नाम (i) ..............................।
विनोद - तस्य आजीविकायाः साधनं किम्?
लता - सः (ii) .............................. अस्ति।
विनोद - सः कस्मिन् विद्यालये शिक्षयति?
लता - सः अशोकविहारस्य (iii) .............................. पाठयति।
विनोद - सः कं विषयं पाठयति?
लता - सः (iv) .............................. पाठयति।
विनोद - तस्य परीक्षापरिणामः कीदृशः भवति?
लता - प्रतिवर्षं (v) ..............................।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **मञ्जूषा-** | संस्कृतम्, | सर्वोदयविद्यालये, | शतप्रतिशतं, | श्रीदिनेशकुमारः, | शिक्षकः। |

**प्रश्न-4 मञ्जूषायां लिखितपदानां सहायतया पञ्चसंस्कृतवाक्येषु 'विद्यादानस्य महत्त्वम्' इति विषयम् अधिकृत्य वर्णनं कुरुत-** **5**

अज्ञानस्य निराकरणम्, वञ्चनायाः अभावः, समाजरक्षा, साक्षरतायाः प्रसारः, उचितमूल्येन क्रयणम्, धनलाभः, वस्तूनाम् उपयोगीकरणम्, स्वस्थ्यरक्षा, परोपकारः, जीवनस्य महत्त्वम्।

**अथवा**

**अधोलिखित-वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादः कार्यः।** **1×5=5**

1. मोनिका बाजार जाती है।
   Monika goes to market.
2. मेरी माँ स्वादिष्ट भोजन बनाती है।
   My mother cooks tasty food.
3. तुम्हें प्रतिदिन विद्यालय जाना चाहिए।
   You should go to school daily.
4. मैं कल दिल्ली जाऊँगा।
   I will go to Delhi tomorrow.
5. मेरे पिता जी एक संस्कृत शिक्षक हैं।
   My father is a sanskrit teacher.

## खण्डः - 'ग'

**अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्**

**प्रश्न-5 अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिच्छेदं कुरुत-** **6**

(i) स्वाध्यायान्मा प्रमदः।
(ii) स भार्गवस्याश्रमपदं ददर्श।
(iii) वैवस्वतः मनुः प्रणवश्छन्दसामिव आसीत्।
(iv) दौवारिकः सत्यपि दीपप्रकाशे कमपि न पश्यति।
(v) विद्याः जगत्याम् लभन्तेऽतितरां मानम्।
(vi) धाराराज्ये सिन्धुलसंज्ञो राजा प्रजाः पर्यपालयत्।

**प्रश्न-6 अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समासं विग्रहं वा कुरुत-** **5**

(i) यस्याः शक्रसमः भर्ता अस्ति।
(ii) कातराः! ...............! (प्रियं पारतन्त्र्यं येषां ते) मां मा स्पृशत।
(iii) मधुरवचांसि श्रुत्वा यूनां हृदयम् उत्कण्ठितं भवति।
(iv) तदा त्वं लोचनविषयातीतं भूत्वा तिष्ठति।
(v) स्थानकरणप्रयत्नादिभिः निष्पत्तिनिर्णयिनी शिक्षा।

**प्रश्न-7 निम्नलिखितवाक्येषु कोष्ठकान्तर्गतं प्रकृतिं प्रत्ययं च योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत- 6**

(i) इदं अद्य मया ..................। (लभ् + क्त)
(ii) इतिहासस्य .................. द्विधा वर्तते। (गम् + क्तिन्)
(iii) ऋतध्वजः प्रकृतिसौन्दर्यम् .................. प्रविशति। (अव्+लुक्+शतृ)
(iv) .................. विद्या एव रूपम्। (विद्या+मतुप्)
(v) अहम् .................. निखिलं निवेदयामि। (आ+गम्+ल्यप्)
(vi) .................. काले सौमित्रिणा धनुः गृहीतम्। (रुद्+तव्यत्)

**प्रश्न-8 अधोलिखितवाक्येषु कोष्ठकपदैः सह उपयुक्तविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत- 3**

(i) ................ न प्रमदितव्यम्। (धर्म)
(ii) सङ्गीतमाध्यमेन .................. शिक्षणं प्रदास्यामि। (शिशु)
(iii) .................. समीपम् आगत्य संन्यासिना उक्तम्। (दीप)

**खण्ड- 'घ' (I)**

**पठित-अवबोधनम्**

**प्रश्न-9 (क) अधोलिखितगद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् संस्कृतेनोत्तरत-**

पुरा धाराराज्ये सिन्धुलसंज्ञो राजा चिरं प्रजाः पर्यपालयत्। तस्य वार्धक्ये भोज इति पुत्रः समजनि। सः यदा पञ्चवार्षिकस्तदा पिता ह्यात्मनो जरां ज्ञात्वा मुख्यामात्यानाहूयानुजं मुञ्जं महाबलमालोक्य पुत्रं च बालं संवीक्ष्य विचारयामास - यद्यहं राज्यलक्ष्मीभारधारणसमर्थं सहोदरमपहाय राज्यं पुत्राय प्रयच्छामि, तदा लोकापवादः। अथ वा बालं मे पुत्रं मुञ्जो राज्यलोभाद्विषादिना मारयिष्यति तदा दत्तमपि राज्यं वृथा। पुत्रहानिर्वंशोच्छेदश्च इति विचार्य राज्यं मुञ्जाय दत्वा तदुत्सङ्गे भोजमात्मानं मुमोच।

**1. एकपदेन उत्तरत- ½×2 =1**

(क) सिन्धुलसंज्ञो राजा कुत्र वसति स्म?
(ख) राजा कस्य उत्सङ्गे भोजं मुमोच?

**2. पूर्णवाक्येन उत्तरत- 1×2=2**

(क) राजा किं विचारयामास?
(ख) किं विचार्य भोजः राज्यं मुञ्जाय दत्तवान्?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत - 1×2=2**

(क) 'बालं मे पुत्रं' इत्यत्र' मे इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(ख) 'मुञ्जं महाबलं' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

**प्रश्न-9 (ख) अधोलिखितपद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-**

**नीलेन पक्षिनिवहेन खमाहसन्तः**
**चञ्च्वा फलानि विमलानि समञ्चयन्तः**
**'श्री राम' नाम मधुरं मधुरं क्वणन्तः**
**अद्यापि यत्र सुशुका विलसन्ति सन्तः।**

1. **एकपदेन उत्तरत-** **½×2=1**

(क) सुशुकाः नीलेन पक्षनिवहेन कम् आहसन्ति?
(ख) चञ्च्वा कानि समञ्चयन्तः विलसन्ति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-** **2×1=2**

(क) सुशुकाः किं क्वणन्ति?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-** **1×2=2**

(क) 'फलानि' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?
(ख) 'आकाशम्' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?

**प्रश्न-9 (ग) अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत।**

संन्यासी - कथमस्मान् संन्यासिनोऽपि कठोरभाषणैस्तिरस्करोषि?

दौवारिकः - भगवन्! संन्यासी तुरीयाश्रमसेवीति प्रणम्यते, परन्तु प्रभूणामाज्ञामुल्लंघ्य निजपरिचय मददत्देवाऽऽयातीत्याक्रुश्यते।

संन्यासी - सत्यं क्षान्तोऽयमपराधः, परं संन्यासिनो ब्रह्मचारिणः पण्डिताः, स्त्रियो बालाश्च न किमपि प्रष्टव्याः। आत्मानम् अपरिचाययन्तोऽपि प्रवेष्टव्याः।

दौवारिकः - संन्यासिन्! संन्यासिन्! बहूक्तम्, विरम न वयं दौवारिका ब्रह्मणोऽप्याज्ञां प्रतीक्षामहे, केवलं महाराजशिववीरस्याज्ञां वयं शिरसा वहामः। प्राह्णे महाराजस्य सन्ध्योपासनसमये भवादृशानां प्रवेशसमयो भवति, न तु रात्रौ।

संन्यासी - तत् किं कोऽपि न प्रविशति रात्रौ?

दौवारिकः - (साक्षेपम्) कोऽपि कथं न प्रविशति? परिचिता वा, प्राप्तपरिचयपत्रा, आहूता वा प्रविशन्ति, न तु ये केऽपि समागता भवादृशाः।

1. **एकपदेन उत्तरत- ½×2=1**

(क) संन्यासिनः अपि कठोरभाषणैः कः तिरस्करोति?
(ख) दौवारिकः कस्य आज्ञां शिरसा वहति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत- 1×2=2**

(क) संन्यासिनः अनुसारं के किमपि न प्रष्टव्याः?
(ख) संन्यासिनां प्रवेशसमयो कदा भवति?

**3. निर्देशानुसारम् उत्तरत-** **1×2=2**

(क) 'दिवसे' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?
(ख) 'वयम्' इति सर्वनामपदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

**प्रश्न-10 अधोलिखितस्य पद्यस्य प्रदत्तं भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत** **½×6=3**

**स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा**
**विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।**
**विशेषतः सर्वविदां समाजे**
**विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥**

**भावार्थः-** विद्वत्सभायां मूर्खाणां (i) ............. एव तेषाम् (ii) .............. भवति। तेनैव (iii) ................ अज्ञतायाः रक्षणं (iv) ..................। यतो हि (v) ...........चिन्तयन्ति यत् असौ (vi) .................... एव मौनं धत्ते।

| **मञ्जूषा** | अलंकारः, | तेषाम्, | महापण्डितत्वात्, | मौनम्, | भवति, | जनाः |
|---|---|---|---|---|---|---|

**अथवा**

**प्रत्येकम् अंशस्य प्रदत्तभावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत।** **1×3=3**

**(i) स्वाध्यायान्मा प्रमदः।**
(क) स्वाध्यायात् आलस्यं न करणीयम्।
(ख) स्वाध्यायात् माम् आलस्यम्।
(ग) स्वाध्यायात् आलस्यं करणीयम्।

**(ii) यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि।**
(क) यानि कर्माणि निन्दनीयानि तानि करणीयानि।
(ख) अनिन्दनीयानि कर्माणि करणीयानि।
(ग) अनिन्दनीयानि कर्माणि न करणीयानि।

**प्रश्न-11. अधोलिखितश्लोकद्वयस्य प्रदत्तान्वयं मञ्जूषापदानां सहायतया पूरयत** **½×6=3**

**(क) असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।**
**ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी।**

**अन्वयः-** मया (i) .......... शत्रुः हतः अपरान् अपि हनिष्ये, अहम् (ii) ......अहं भोगी अहं सिद्धः (iii) ............ सुखी च।

**(ख) दैवी सम्पद् विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।**
**मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव॥**

**अन्वयः-** विमोक्षाय (iv)........... सम्पद्, आसुरी (च) निबन्धाय (v).......। पाण्डव! मा (vi) ......... दैवीं सम्पदम् अभिजातःअसि।

| **मञ्जूषा** | दैवी, | ईश्वरः, | शुचः, | असौ, | मता, | बलवान्! |
|---|---|---|---|---|---|---|

**प्रश्न-12 अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह सार्थकसम्मेलनं कुरुत। ½×4=2**

| **'क'** | **'ख'** |
|---|---|
| (क) अनेन मणिना छन्द | (i) निस्तीर्णमिति वाजिनम् |
| (ख) अवतीर्य च पस्पर्श | (ii) जीविते चञ्चले सति |
| (ग) को जनस्य फलस्थस्य | (iii) प्रणम्य हुशो नृपः |
| (घ) अकालो नास्ति धर्मस्य | (iv) न स्यादभिमुखो जनः |

**प्रश्न-13 अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् अर्थं चिनुत-**

**(i) आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।** 1×2=2

(क) प्रजां

(ख) वंशपरम्परां

(ग) तन्तून्

**(ii) अक्षोभ्यः क्षोभितः केन।**

(क) क्रुद्धः

(ख) प्रसन्नः

(ग) हर्षितः

## खण्ड 'घ' (II)

**सामान्यः संस्कृतसाहित्यपरिचयः**

**प्रश्न-14 अधोलिखितेषु कस्यापि एकस्य कवेः संक्षिप्तः परिचयः संस्कृतेन लिखत-** 3

(i) अम्बिकादत्त-व्यासः

(ii) कालिदासः

(iii) भासः

**प्रश्न-15 अधोलिखितवाक्येषु मञ्जूषापदसाहाय्येन रिक्तस्थानानि पूरयत-** ½×6=3

(i) छन्दोरहिता रचना ............. कथ्यते।

(ii) नाटकेषु सर्वश्राव्यं ............. अभिधीयते।

(iii) नाटकस्य अन्ते ............. भवति।

(iv) पद्यकाव्यं ............... भेदयोः विभक्तं भवति।

(v) ............... रुपकस्य भेदः भवति।

(vi) गद्यपद्यमयं काव्यं ...................भवति।

**मञ्जूषा** प्रकाशम्, नाटकम्, भरतवाक्यम्, चम्पू, गद्यम्, द्वयोः

**प्रश्न-16 गद्यकाव्यस्य चम्पूकाव्यस्य वा चतुर्विशेषताः लिखत।** 4

# संस्कृतम् कोड सं. 332 ( केन्द्रिकम् )
# पाठ्यक्रमः परीक्षानिर्देशाश्च )
# ( 2019-2020 )

| अवधिः-होरात्रम् | कक्षा- XII प्रश्नप्रत्रम् | पूर्णाङ्काः 80+20 |
|---|---|---|

**अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वारो भागाः भविष्यन्ति। अङ्काः**

| | |
|---|---|
| भागः 'क' अपठित-अवबोधनम् | 10 |
| भागः 'ख' रचनात्मककार्यम् | 15 |
| भागः 'ग' अनुप्रयुक्तव्याकरणम् | 20 |
| भागः 'घ' | 35 |
| • पठित-अवबोधनम् (25 अङ्काः) | |
| • संस्कृतसाहित्येतिहासस्य परिचयः (10 अङ्काः) | 20 |

**भागः 'ङ' आन्तरिक-मूल्याङ्कनम्**

## प्रतिभागं विस्तृतविवरणम्
## भागः 'क' अपठित-अवबोधनम्

| | अङ्काः | कालांशाः |
|---|---|---|
| **80-100 शब्दपरिमितः एकः सरलः अपठितः गद्यांशः।** | **10** | **20** |
| **प्रश्नवैविध्यम्** | | |
| i एकपदने उत्तरम् | 2 | |
| ii पूर्णवाक्येन उत्तरम् | 4 | |
| iii समुचितशीर्षकलेखनम् | 1 | |
| iv वाक्ये कर्तृक्रिया-पदचयनम्, सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः, विशेषण-विशेष्य/पर्याय/ विलोमादिचयनम् | | 3 |

## भागः 'ख' रचनात्मकं कार्यम्

**अङ्काः ( 15 ) कालांशाः ( 30 )**

1. औपचारिकम् अनौपचारिकं पत्रम्/प्रार्थनापत्रम्

   (मञ्जूषायाः सहायतया पूर्णं पत्रं लेखनीयम्) 5

2. लघुकथा (शब्दसूचीसाहय्येन, रिक्तस्थानपूर्ति-माध्यमेन)/वार्तालापे एकपक्षपूरणम् 5

3. सङ्केताधारितम् अनुच्छेदलेखनम्/हिन्दीभाषया आङ्लभाषया वा लिखिततानां पञ्चसरलवाक्यानां संकृततभाषया अनुवादः। 5

## भागः 'ग' अनुपयुक्तव्याकरणम्

**अङ्काः ( 20 ) कालांशाः ( 60 )**

1. पाठाधारिताः सन्धिविच्छेदाः-स्वरसंधिः, व्यञ्जनसंधि, विसर्गसन्धिः च। 2 +2 +2

2. पाठाधारिताः-समासाः विग्रहाः च-अव्ययीभावः, द्विगुः, द्वन्द्वः,

   तत्पुरुषः, कर्मधारयः, बहुव्रीहिः। 5

3. प्रत्ययाः-अधोलिखितप्रत्यययोगेन वाक्यसंयोजनम्/सङ्कताधारितरिक्तस्थानपूर्तिः 6

   (अ) कृत-क्त, क्तवतु, तव्यत्, अनीयर, शतृ, शानच् क्तिन्

   (आ) स्त्री-प्रत्ययाः-टाप्, ङीप्

4. उपपदविभक्तियोगः (पाठ्यपुस्तकम्) आधृत्य)

## भाग 'घ' (i) पठित-अवबोधनम्

**अङ्काः ( 35 ) कालांशाः ( 85 )**

**( अ )पठित-अवबोधनम्** 25

**1. अंशत्रयम्** 5 × 3 = 15

   (i) एकः गद्यांशः,

   (ii) एकः पद्यांशः

   (iii) एकः नाट्यांशः

**पाठ्यांश-आधारितं प्रश्नवैविध्यम्**

   (i) एकपदेन उत्तरम् 1

   (ii) पूर्णवाक्येन उत्तरम् 2

**भाषिककार्यम्-** **2**

(i) विशेषण-विशेष्य/पर्याय/विलोमादिचयनम्

(ii) वाक्ये कर्तृक्रिया-पदचनम्

(iii) सर्वनामस्थाने संज्ञानप्रयोगः

**3. भावार्थलेखनम्/ प्रदत्ते भावार्थत्रये शुद्धभावार्थचयनम्** **3**

4. प्रदत्तेषु अन्वयेषु रिक्तस्थानपूर्तिः/ प्रश्नपत्रात् भिन्नं पाठ्यपुस्तकस्य श्लोकमेकं लिखित्वा भावाथलेखनम् 3

5. प्रदत्तवाक्यांशनां सार्थकं संयोजनम्। 2

6. प्रदत्तपङ्क्तिषु प्रसङ्गानुसारं पदानाम् अर्थलेखनम्। 2

## भागः 'घ' (ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः

**अङ्काः( 10 ) कालांशः( 25 )**

**संस्कृतेन वस्तुनिष्ठ/ अतिलघूत्तरप्रश्नमाध्यमेन अधोलिखितसंस्कृतसाहित्यविषकः परिचयः**

1. पाठ्यपुस्तके सङ्कलितपाठ्यांशानां कवीनां परिचयः। 3
2. गद्य-पद्य नाटकादिविधानां मुख्य विशेषतानां परिचयः 3
3. गद्यकाव्यम् पद्यकाव्यम्, चम्पूकाव्यम् 4

## भागः 'ङ' आन्तरिक-मूल्याङ्कनम्

**अङ्काः( 20 )**

1. परियोजनाकार्यम् 10 अङ्काः
2. गतिविधयः 10 अङ्काः

**उद्देश्यानि-**

- छात्राणां विविध-जीवन-कौशलानां विकासः।
- छात्राः समाजस्य विविध-समस्याः ज्ञात्वा समाधने समर्थाः स्युः।
- गवेषणात्मक-चिन्तनशक्तेः विकासः।

- संस्कृत-जगतः समस्यानां सम्मुखीकरणम्।
- छात्राणां सृजनात्मकक्षमतायाः विकासः।
- श्रवण-भाषाण-पठन-लेखनकौशलानां विकासः।
- आत्मविश्वासस्य संवर्धनम्।

| क्र. सं. | गतिविधयः | उदाहरणानि | अङ्काः | निर्देशाः | मूल्याङ्कनबिन्दवः |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | परियोजना -कार्यम् | • मिथ्यावार्तायाः (Fake News) दुष्प्रभावाः।<br>• अध्ययने अन्तर्जालस्य उपयोगिता<br>• संस्कृतं व्यवहारभाषां कर्तुं समस्याः समाधानञ्च।<br>• 'सोशलमीडिया' इत्यस्य सदुपयोगः।<br>• भारतीयसंस्कृतौ वैज्ञानिकचिन्तनम्।<br>• स्वक्षेत्र जायमानस्य प्रदुषणस्य कारणानि समाधनञ्च।<br>• स्वक्षेत्रे स्वच्छभारताभियानस्य स्थितिः<br>• संस्कृताध्ययनं प्रति छात्राणाम् उदासीनतायाः कारणानि<br>• तन्निराकरणोपायाश्च।<br>• आयुष्मद्भरतम् 'इति सर्वकारीय-योजनाविषये लाभार्थिना जागरूकतायाः विशलेषण। | 10 | • सत्रारम्भे एव विषयः सूचनीयः।<br>• आवर्षं छात्राः एतेषु विषयेषु अध्ययनं कुर्यः।<br>• शिक्षकेण समये समये परियोजनाकार्यर्सस्य प्रगतिः ज्ञातव्या छात्राणां च मार्गदर्शनं करणीयम्<br>• कदाचित् छात्राः संस्कृतेन लेखितुं कष्टमनुभवन्ति तदा शिक्षकेण साहाय्यं करणीयम्<br>• परियोजनाकार्याणां विवरणं सप्रमाणं सुरक्षितं स्थापनीयम्।<br>• परियोजनाकार्याणि संस्कृतेन एव भवेयु | • मौलिकता<br>• विषय-सम्बद्धता<br>• शुद्धता<br>• समयबद्धता<br>• प्रस्तुतीकरणम् |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 2. | श्रवण-भाषण-कौशलम् | • कथा<br>• संवादः/वार्तालापः<br>• भाषणम्<br>• नाटकम्<br>• वार्ता:<br>• आशुभाषणम्<br>• वार्तावलिः (समूहचर्चा)<br>• संस्कृतगीतानि<br>• श्लोकोच्चारणम् | 05 | • छात्राः कामापि कथां श्रावयितु शुक्रवन्ति।<br>• शिक्षकः कमपि विषयं सूचयित्वा परस्परं संवादं कारयितुं नाय शक्रोति।<br>• दूरदर्शने वार्तावली इत्याख्यः संस्कृत-कार्यक्रमः प्रसारितः भवति तं द्रष्टुं छात्राः प्रेरणीयाः<br>• श्रवण-कौशल-मूल्याङ्कनाय शिक्षकः स्वयम् अपि कथां श्रावयित्वा ततः सम्बद्ध-प्रश्नान् प्रष्टुं शक्रोति।<br>• वर्षे न्यूनातिन्यूनं त्रयः गतिविधयः कारणीयाः तेषु सर्वोत्तमाः अङ्काः ग्राह्याः।<br>• विवरणं सप्रमाणं सुरक्षितं स्थापनीयम् | • उच्चारणम्<br>• शुद्धता<br>• समयबद्धता<br>• प्रस्तुती-करणम्<br>• आरोहवरोह-गतियति-प्रयोग |
| 3. | लेखन-कौशलम् | • विविधविषयान् आधृत्य मौलिकलेखनम्<br>• यथा-माता-पिता, गुरुः पर्यावरणम्, विद्या, योग, समस्य सदुपयोगः शिक्षा, अनुशासनम् इत्यादयः।<br>• शैक्षिकभ्रमणस्य संस्कृतेन प्रतिवदेनलेखनम्।<br>• दैनिन्दिनीयलेखनम्।<br>• सङ्केताधारितं कथालेखनम्।<br>• श्रुतलेखः | 05 | • छात्राः यथाशकांय कक्षायामेव लेखनकार्यं कुर्युः।<br>• अत्र पञ्जिका-निर्माणम् अपि कारयितुं शक्यते।<br>• विवरणं सप्रमाणं सुरक्षितं स्थापनीयम्। | • विषय-सम्बद्धता<br>• शुद्धता (विशेषतः पञ्चम-वर्णस्य प्रयोगः)<br>• समयबद्धता<br>• सुलेखः<br>• प्रस्तुती-करणम् |

**अधातव्यम्-**

1. उपर्युक्त-परियोनाकार्याणि गतिविधियश्च उदाहरणरूपेण प्रदत्ताः सन्ति। एतदतिरिच्य एतादृशाः अन्यविषयाः अपि भवितुमर्हन्ति।
2. केन्द्रिय-माध्यमिक-शिक्षा-बोर्ड (CBSE) इत्यस्य प्रपत्रसंख्या (Circular No.) -Acad-11/2019 इत्यनुसारम् 2019-2020 इति सत्रस्य आदर्शप्रश्नपत्रे वार्षिकप्रश्नपत्रे च 20 अङ्कानां वस्तुनिष्टाः प्रश्नाः भविष्यन्ति।

## पुस्तकानि

- भास्वती-द्वितीयो भागः (पाठ्यपुस्तकम्) रा.शै.अनु.प्र.परि. प्रकाशितम्।
- व्याकरणसौरभम् (संशोधितसंस्करणम् रा.शै.अनु.प्र.परि. द्वारा प्रकाशितम्।
- रचनानुवादकौमुदी (सहायकपुस्तकम्) कपिलदेवद्विवेदीलिखितम् विश्वविद्यालयप्रकाशनम् वाराणासी।
- संस्कृतसाहित्यपरिचयः (संशोधितसंस्करणम्) रा.शै.अनु.प्र.परि. द्वारा प्रकाशितम्।
- वेदपारिजात (अतिरिक्ताध्ययनार्थम्) रा.शै.अनु.प्र.परि. द्वारा प्रकाशितम्।